श्रीप्रवचनसंग्रहप्रारंभः ॥

ओम्

॥ श्रीजिनंद्रायनमः ॥ अहिंसापर्मोधर्मः ॥

ए महा उत्तम पुस्तक गुणोका भंडारहै ज्ञानरूपी नेत्रोका दतारहै ए पुस्तक लिखतका मिलना अति कठनथा ए कठनताई दूरकर्णे के वास्ते और स्वधर्मी जनाके हित अर्थ श्रावक नंदलाल ॥ बृजवलभ दासने छपवा कर प्रसिध कीयाहै अगर कोई लग मात्र की गलती छपने के समे रहगई हो तो पंडत जनकृपा करके सुधारलहे और जो भव्वजीव इसको पढेगे पढावेगे अर्थ प्रमार्थको समझेगे सो संसार सागरसे सीघ्र पारपावे गे और इस पुस्तकको जत्न सहत मुष पत्ती वाध कर वाचना चाहीए ॥ और दीपकजलायके वाचनेकी आग्यानहीहै सुभ भुयात् ॥ दा० श्रावक नंदलाल बृजवलभदास ॥

॥ श्रीप्रवचनसंग्रह पुस्तककी अनुक्रमणिका ॥

प्रथम वार छपा एक पुस्तककी कीमत १।) रुपैया डाक खरच अलाहदा ॥ यह पुस्तकसन १८६७ के २५ के ऐकट मुजब रिजीष्टरी प्रसिध करताने अपने नामकी सरकारे करवायलई है अब किसी और को छपवानेकी अजाजत नही है ॥ मिती अशु दिन १५ समत् १९५३ सन १८९६ त० २९ सितंवर



पुस्तक मिलनेका ठिकाना दुकान रूपाशाह ॥ नदलाल भावडा वजार बडा शहर स्यालकोट देस पंजाब ।

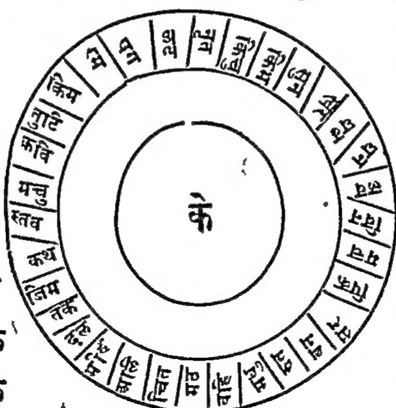
॥ अथ श्री साधगुनमालाप्रारंभते ॥

उ॥ श्री वीतरागायनमः॥

अथ साधुगुणमाला लिष्यते॥ सर्वगुरुवर्ण दोहरा॥

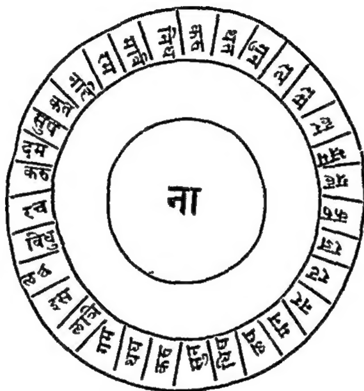
श्री त्रैलोका धीसको वंदो ध्यावो ध्यान। यासेवासाता सुधी पावो नीकोज्ञान ॥ १ ॥
द्वादशस्वरअनुक्रमवर्णानं दोहरा॥ अलषआदि इस ईसकी उत्तमऊचोएक। ऐसो
ओडक और नहि अंतनअ:जगटेक॥ २॥ यमकबंधसबलघुवर्ण दोहरा॥ मुनि मुनि
पति वरनन करन शिव शिव मग शिवकरण। जस जस ससियर दिपतजग जय जय
जिन जन सरण॥ ३॥ सर्वलघुदो०करत सुजस सुरअसुर अहि उड गण नरगाहि
सरण। जिहसमरण समकत विमल प्रणमत हरजसचरण ॥ ४ ॥ दोहरा॥ वंदो श्रीसी
मंदरं स्वामीसदाकृपाल। श्रुतिदेवीको वंदकेरचो साधुगुणमाल॥ ५॥ जिनवर भाषत
जैनमत जत्नमूलजयवंत। जतीधर्म जगजलतरण जनमजरादुपअंत ॥६॥ मुनि रिष
तपसी संजमी यती तपो धन संत। श्रमण साधु अणगारगुरु वंदोचितहरषंत ॥ ७॥

साथीया बंधसर्वलघु ॥ दोहरा ॥ परम मुकतिपद अरथतप करमुनि उपसम चरत।
गहि जिनमति भवजलतरतउचश्रवि चलपदधरत ॥८॥ दुमल छंद जिनकेधर ध्यान
सुजानभए सुषदेषत लोचनको मनको। जिनके सुनवैन सुचैन वधे परमान किया
प्रभुतां जनको। जिनके पगलाग सुभागभए वल
रूप सपुष्ट करे तनको। तिनसाधजती रिपकोप्रण
मोगुणगायलहोधिषणा धनको चक्रबंध दूमल ॥
छंद जिमके तकके दल के महिके अलिके चितके
मटिके वाहिके मधुके रुत के वनके सरके पिकके मचु
के विनके लवके घनके घटके स्वरके सुनके किम
के किचुके नृतुके लटुके षगके रमके किमके तुटिके
कविके मचु के स्तव के कथ के ॥ १० ॥



अष्टकाणपदाकार दूमल ॥ छंद ॥

करुणा कर दीन
पद पंकज का
गति रापण हार
अपार कहा वर
इंद्र करे महिमा
वुद को तरुणा ।
गर चाहित हौ
तुमे करुणा॥११॥



दयाल प्रभू तुमरे
सरणा । सरणा
विभो गुण सिंध
णा । वरुणा गर
मुनि ध्याय भवां
तरणा भव सा
हमरा इहि काज

चक्र बंधदूमल ॥ छंद ॥

करुना रचना विध ना
गमना थघना करुना
मनना नरना गरना
भ्रमना हरना रसना
करुना निधना मविना
सुपना दमना १२ ॥



लवना इसना लजिना
मुनना धिषना लषना
रजना करुना ग्रहना
रटना गुनना थतना
रमना नाहिना कतना

अष्टकोणतोटक ॥ छंद ॥ करुणा सुर धेनमनी करुणा करुणा गुण सिंध सुधाक रुणा करुणा बिनहोरनही करुणा करुणा करदेहुरिदे करुणा ॥ १३ ॥ अथ सप्त विंशतसाधुमूलगुणवर्णनं दूमल ॥ छंद ॥ करुणा जिणसाननं मूलकही सभही गुणआय मिलेटुरके । मिलसंघवने शिवराहिचले मगमाहिघणेपुरहैसुरके । जनके

तकराहुरम पुरमशिवजेपहुंचेनचलेमुरके सुरतेमुरफेरलहेशिवको । इसभांतसुवेनसुने गुरके ॥१४॥ अघपुंजहरेचितसुद्धकरे रिसतापहरैसुरकीसरता । भ्रमअंधमिटेमदचो रहटेतिथपूर्णमकीर्तसमीधरता । वनज्ञानवधावनकोवरपाअम्रताषलपापज्वरंहरता । नवकाभवसागरमाहिदया मुनिराजभलीविधआचरता ॥ १५ ॥ चितवंतसथावर लिंग त्रिधागतिचारप निंद्रयकायछई । जिय सूषम वादर भेदघणे नहणेनहना वत साधुथई । नकरेअनु मोद नहिंसककी तिऊ जोगकरी मुनिज्ञानमई । इम आदिमहा व्रत धार मुनी करुणा रस सुंदर रूप लई ॥ १६ ॥ इति प्रथम महा वृत ॥ सुभ राज सभा सनमानलहै विवहारविपे अति सापजमै । तम निंद मिटे यस चंद्र चढे सुर धाम लहै गति नीच थमे । भ्रम जालकटे चित पंपछुटे गतिऊरध ज्ञान अकास गमै । सतवाक विपै गुणवृंदवसै मुनिराज सपाकर संगरमै ॥ १७ ॥ मुपवैन विचार किवोलतहै सुभसत्नमई जियके हितके नहितीषण कूडयपापमई परि पीडन हींदु

गुण
ग
॥

विधाचितके जिनसासनके परमानकहे अघमैलनही वरते जितके धनसाधु सुसा धनआत्मको प्रणमोसुषदायहै नितके ॥ १८ ॥ इति द्वतीयमहाव्रत मत्तगयंद ॥ छंद ॥ पापकिवुद्धजगै जिसकेघट लालचसोपरवस्तगहेहैं । ज्ञानविवेकदयासमता तवछांडचले चितकोपवहेहैं । तूंवरभारलिएजिमडूवतत्यौं भवसागडूवरहेहैं । सोअघ त्यागसंतोषगहेहैं । रिषसेवकवंदतमोदलहेहैं ॥ १९ ॥ धाड विचार कठोर महाठग पापकरे पर अंसगहेहैं ॥ छेदन भेदन लोकाविषे परिलोकयमादिक पीडसहे है ॥ साधतजे अनदित्त पदारथ छार त्रिनादिक वीनलहेहैं । सो त्रिपतातम लच्छपती चितपाप अलेप सिद्धंतकहेहैं ॥ २० ॥ इति तृतीय महाव्रत ॥ कामवलीसरपंच लिए करमारि किसूरबडे जिनलीने । दानवदेवफणी नरषेचर भूचर केतक चाकर कीने। नारिकिपायसुसीस छुहावतलाज हरेवलसाहसछीने। सोरिपजीतालिए रिप तापस सेवक वंदत प्रम किभीने ॥ २१ ॥ नाग महा बल मत्त गयंद महा बल

केसरि जीतनहारे लापसुयुद्धकरे धरधीरजतोडन कोटमहागरभारे । लोहिमलेगिर ठाहिदिषावन औरमहाबलप्राक्रमकारे । कामाकियुद्वमुहारचले परसो।रितराजकुसाधु पछारे ॥ २२ ॥ चंचलरूपकियोबनता निधसाजासिंगारसुगधसुहाई । हासविलास विकारकरे मुषगीत बनाइकितानउठाई । कामभरीनिरलज्जभईमुनिराज समीपसुका मनिआई । मेरअडोलसुसीलविषे थिरजानतहै भगनीअरुमाई ॥ २३ ॥ सीलमहा त्रिध दारदभंजन देवद्रुमोमनवंछतपूरे । पापमहारजपंकविना-सनमेघ वधावनपुंन्न अंकूरे । संकटटालनमोदजगावननाकरमावनदुर्गतेचूरे । मोपकरैबहुदोषहरेधनधारन हार मुनीस्वरसूरे ॥ २४ ॥ इतिचतुर्थमहाव्रत ॥ याजगमै धनहेमनगादि रसायण पोरस पारस पाहन भूमि ग्रहादि पशूगणअंवर भूपणभांजन । आयुध वाहनदास चमूवन तादिघणी विधहोत परिग्रह सयम ढाहन । सोमुनिराज तजे चित सोसुभ आत्म ज्ञान महा धन चाहन ॥ २५ ॥ लोकविपे बलवंत परिग्रह जीवनको जिस

घेर लियोहै । लोभमहा छल साथ रमे अघ पुंज वधा वनरूपथयोहै । सोदुपदान रुलावनहार विचासविछक्षणछाडादियोहै । उत्तमलोकाविषेरिषराजसदा तिनको जय कारभयोहै ॥ २६ ॥ इति पंचमहावृत ॥ अथरात्रिभोजन ॥ जीवमही नदिनेन लपे विनती छण । दृष्ट विचार विचक्षनरात्रि कहालषिए तिहहेतदयाकरसाधुतजे निसभक्षन । औरमहाफलहै अरधायुउघेतपमाहलपोसुभलक्षन । तेप्रणमोअणगार तपोधन धारमहाव्रत ऊरधगछन ॥२७॥ अथपंचेद्रीजीतनगुण ॥ कानसुने मृदु वाकमनोहर नाटकगीत वजंत्र पियारे । औरसुने निजकीरत कौन हिरागाकि रीत कछूचितधारे । जोविपरीतसुनेदुषदायक त्यौंनाहिद्रेपसुध्यानविचारे । सोश्रुतिइंद्रयजी ततपोधन सेवकके सुभकाज सवारे ॥ २८ ॥ देपमनोहर देवसुरीनर नारिपशूषग सुंदरमूरत । वागाविषैन्रतमैनटकीविधतौनकरै मनरागाकिसूरत । जोविपरीतकरूपभयं करतौनहद्रिपकरीमनधूरत । सोदगइंद्रयजीततपीश्वरसेवकको समतारसपूरत २९॥

नसाधलईहै। जोदुरगंधमहादुषदायकत्यौंनहिद्वेषसुव्रत्तथईहै। नाकजतिंद्रयसाधभए हरषेप्रण मोचित शांत भई है ॥ ३० ॥ भोजन पान मनोगम सुंदर स्वादमई रसना रसपोषी। प्रापहोतजबेतबरीझनाप्रीतन ठानतहैमुनिमोषी। जोकटकादिकहै दुषदायक तौनहि द्वेषकरी मनरोषी। सो रस इंद्रयजीत गुणा करवंदतहौ तिनकी गति चोषी ॥ ३१ ॥ जो फरसिंद्रयको सुषदायक साजमनोगम आय मिलेहै। तौ नहि राग विषे चित राजत आतम राम समाधरलेहै। जोविपरीत मिले तब द्वेष नही समताधर भावभलेहै। सोफरसिद्रयजीत विराजततांपग वंदत पाप टलेहै ॥ ३२ ॥

इति पंचेंद्रियजीतनगुण ॥ अथ चारकषायजीतनगुण ॥ अथ क्रोध ॥

कोपधसेचितमोविसघोलत तावतपापाकि वुद्दापिडावे। लोचनमै भृगुटी भुज हाथमै रुद्रमहारसरूपदिपावे। आपतपेपरतावतहै पललोकविषे पतिप्रीतगवावे।

कोपनिवारविराजतहै रिषषंतसषीतिहआदरपावे ॥ ३३ ॥ मूरषचित्तमलीनमहा
पशु देपाकिसाधकुदेवनगारी । ताडनतर्जनहाथउठावन निंदनसाथनिरादरभारी ।
तौमुनिराजकुकोपनआवत जानाषिमा शिवकाजसवारी । तेमुनिकेपग बंदनको
उमगीमनसा भवतारनहारी ॥ ३४ ॥ कालकुरूप अनारजमानव कोपकुपान
कुरूपदिषावे । यक्षपिशाचविताल भयानकक्रूरमहाजव आनडरावे । सिंहभुयंग
गजादिवुरेपशु षेदकरैवहुपीडजनावे । आतमअंग अभंगलषे रिषदेह सुआपन
प्रीतनलावे ॥ ३५ ॥ अथ मान ॥ मानरिमानवमान वुरोमतिमान गुमानन
मानननीको । मानकरीअपमानलहै नबिमानलहै वरदेवपुरीको । मानामिटेसनमान
वधेपरमानकरो सुभवाकजतीको । मानवजन्मसमाननही कछुधर्मसुमानकजातभली
को ॥ ३६ ॥ देवसमूहसुसोभत सुंदरइंद्रजहा सिरआनानिवावे । षंडपतीषगनायक
भूपतिभौनपतीपगबंदनआवे । जोरकिहाथकरे महिमाजसबैनकहै जयकार लावे ।

भूमिसवार सुगंधपिंडायबनायअषाडा। साजवजंत्रसुधारकिताल अलापनरागनि
रागअपारा। सुंदररूपसिंगारसुपातर नाचततानउठेछणकारा। लोचनचित्तअडोल
सदारिषजानतहै जगझूठपसारा॥ ३८॥ ॥ अथ माया॥ वक्रकरे चितमित्रपणे
रिपठागकुरूप सुसाषगवावे। निदमईभ्रमजालग्रही गुणहीनकरे नरकादिरुलवे।
सम्यकचंदग्रसेतमसोअहि साममहाविषदंभचढावे। सोकपटारिपछारहणेरिषअर्जव
सूरसुचूरकरावे॥३९॥ अंतरबाहरसोभतहै रिजसाचविषेरिषसाचहिबोले। साचकरे
करतत्तमहारिप साचकिमारगचालअडोले। दंभमहाठगमार लियोजडचेतन भाव
विभेदविरोले। सोअ्रणमोतिहूकालविषे रिषमोषमहापुरकेसुषटोले॥४०॥अथलोभ
लोभकिकारनजालफसे षगमीनमरे कपिकुंजररोवे। चोरसहेदुख वंधवधादिकलो
भसुमानवकिकरहोवे। लोभविनासकरे शिवमारग नीचगतीगति नीचमुटोवे।

लोभनिवारसंतोपगहेरिषतांगुण मालसुसेवकपोवे॥४१॥ जाननभूमिनिधान महाधन
औषधसिद्धरसायनबूटी । देखनरिदविभूतिमहा सुखदेवविभूतिअनूपअटूटी । चाहन
हीचितमाहिजगे कछुअंतरतेंममतासभछूटी । ग्यानविरागसखाकरसंगरमे रिखलो
भतणसिरकूटी ॥ ४२ ॥ इतिचारकषाय ॥ अथभावसवे ॥ कातकपूनममासोनिसी
थसमेंवृपरासससीवलभारी । मेघकुहीडरजादिविनानभस्वच्छदिसाविमलातमहारी ।
त्योंचितभाव विसुद्धसुसीतलसंतमुनीसरहैवृतधारी । वदतहौंकरजोरसदा भवसागर
तारनकेअधिकारी ॥ ४३ ॥ अथकर्ण सवे ॥ सुद्धक्रियोकरणोत्तमको गमनागम
भापणभुंजनमाही । राखननाखनवैठनमै उपदेसविपेसुमैहसभठाही । जोकरतत्तकरे
रिषउत्तमसोशिवमारगमेंशिवराही । तेमुनिकेपदपंकजको करजोरसदा प्रणमोगुण
चाही ॥ ४४ ॥ चंदननीरकपूर कुलेपनदाघहरे त्रिफलामलरोगं । वातविकारहरैत्रिगु
टात्रयजोगविशुद्धहरैअघसोगं । पुष्टकरेघत खीरमिठासमहावलवंत त्रिभावलिभोगं ।

पोपस्वयंलय आतमकोरससाध त्रियोगचलेशिवलोगं ॥ ४५ ॥ भूपहणोरिपुराजकरै
खितसाधलहे धनधानसवारी। जोंत्रयकारजकारकसाथत्रजीरचमूपति दक्षभंडारी।
त्यौंमुनिराज त्रियोगविचक्षणवीरलिये सगसजमकारी। कर्मखपाय सुराजलह्यो
थिरआगम अर्थमहानगधारी ॥ ४६ ॥ अथ क्षमागुण ॥ जो अवनीबहुखेदसहे
हिमसीतसहे अरुतापसहेहै भारसहै। पर हारसहै अपवित्रपवित्र समस्तगहेहै।
त्यौंमुनिधारक्षमामुक्षमासमआतमकेरसरीझरहेहै। ताहिनमोतिहुजोगकरीजिनराज
किमारगसूरकहेहैं॥ ४७ ॥ अथवैरागगुण ॥ कामनभोग विलासविपे लखनारिसुता
दिकबंधनत्यागी। जानअनित्यअसार अपावनदेहतणी ममताजिहभागी। राजतजे
सभसानतजे पटखंडविभूततजीचितजागी। तेप्रणमोपरमारथसाधकश्रीजिनसासन
माहिंबिरागी ॥ ४८ ॥ अथमनसमोधारनगुण ॥ बाजकुरंग पतंगसमीरत देवनते
मनवेगगतीहैं। चंचलचोरचहूदिसभ्रामकढीटमहाअतिदुष्टमतीहैं। सोंसमझायकियो

अपनेवस पापकुंवुद्धाकिचालहतीहै । संजमवंत विराजतहै मनकोसमधारन साधज
तीहै ॥४९॥ ताम्रकरेकलधौत रसायणलोहकुपारसहेमवनावे। औषधजोगकलीरज
तोतममूढसुधीसंगदक्षकहावे। वैदकरैविषकोवरऔषधसाधुअसाधुकुसाधुकरावे। त्यों
मनदुष्टकुसुष्टकरै रिषतांगुरुकेगुणसेवकगावे॥५०॥अथवचनसमोधारण । मोनरहे
नकहै मुषआश्रव संवरकारनबोलनवानी । तोलकिबोलनबोलनहारनजीवदया उप
देसकहानी । जैनकिवैनसुअैनधरैचितचैनभयोसभहीविधजानी । तेप्रणमोतिहुकाल
विषे तिनकीमहिमातिहुलोकवखानी ॥५१॥ अथकायसमोधारण । अंगउपंगसंको
चरहे दृढआसनधारतजेचपलाई । आवनजावनकारजमैयतनायुतउत्तमरूपवनाई ।
कायकलेसकरे तपउत्तममोखमहापुरकेमगजाई । कायसमोधरणे गुणराजतताप्रगवं
दतहौचितलाई ॥५२॥ अथ ज्ञानगुन ॥ केतकहैश्रुतिमत्तमई रिषकेतकेऔधिधरीमन
ज्ञानी । केतककेवलज्ञानमई प्रभुकेतकअंगउपंगवपानी । केतकेद्वादसअंगधरीरिष

सर्वरिषीश्वरज्ञाननिशानी । तेमुनिकेपगवंदनतें उपजोचेतमासमतासुखदाना ॥ ५३॥
अथ दंसनगुन ॥ सुद्धदशाधरदंसणउत्तमसत्तप्रतीतजिनागममाही। यक्षसुरासुरनाग
चलावनतौनचलेदृढहै शिवराही। धीरजमंडपखंडकुखंडन पापमृखामतिकेगिरढाही।
सम्यकवंतमहंतमहामुनि सेवकतारतहैगहिवाही ॥ ५४ ॥ अथचारित्रगुन ॥ सुद्ध
आवस्यकप्रातकरे गुरुदेवकुवंदसिद्धंतउचारे । ध्यानकरेतपसाविधसाधनभिक्षग्रहे नि
रदोषसभारे। सिष्यनपुछनजाच जिनागमदेउपदेसमृषामतिटारे । रात्रिअवस्यकआ
दिसुचारित्रसाधभलीगतिसाधपधारे ॥ ५६॥ अथक्षुध्यादि२२परिसहजीतनगुन ॥
भूषमहाबलवंतभई नरसिंहफणीगजरीछनिवाए। दासभएपरछंदनचेबल हीनभएपर
हाथविकाए। कालअकालसुभक्षकुभक्ष सुजातकुजातगिनेनागिनाए । सोमुनिराजलई
जिनके तिनकेगुणसेवकभाखसुनाए ॥५७॥ भूखत्रिखागरमीसरदी इमहीबहुभांताके
संकटपावे । कर्मउदेफलमानतहै समताधरभोगनेचित्तनतावे। जानतहैछिनभंगरहैतन

ताहिविषममतानहिलावे । धारतदेहविदेहभएजन तांगुनदेवपतीमुखगावे ॥ ५८ ॥

अथमर्णती उपसर्गजीतनगुण ॥ चाहतजीवसभीजगजीवनो देहसमाननहींकिछु प्यारो । संयमवंतमुनीस्वरको उपसर्गभवेतननासनहारो । तौचिंतवेहमआतमराम अपडअबाधतज्ञानभंडारो । देहअचेतनसोहमतोनहि सत्तचिदानंदरूपहमारो॥५८॥

इतिसप्तविंशतसाधुमूलगुणसमाप्तं ॥ अथ उत्तरगुण ॥ पावसकीचउमासाविषे निरदोषसुथानकमाहिवसेरो । नारिकिलीवपशूनरहेजहिशुद्धअलेहणजोगचंगेरो । धार तहाउपवासअभिग्रह पालचारित्रवसेगुरुमेरो । भव्यनकोउपदेसकहे सुनमोदलहैनर नारिघनेरो ॥५९॥ आठहिमासविहारकरेरिखदेसविदेसविषेउपगारी । भूमिकरैत्रिण काठकैऊपर आसनसैनअचित्यसवारी । आगमसारविचारउचार किंभव्यनकीजिन नींदउचारी । काढमृपामतिकूपथकी जिनधर्मनकेतुंदिपावनभारी॥६०॥ग्रीषममैरावितै जसहैहिमसीतसहेनहिपावकसेवे । पावसमैउपवासघणी विधतुच्छअहारमहामुनिलेवे

वादसमीसीविष तपसीकरज्ञानीविरागीविष [illegible]
वकको सुपसंपतदेवे ॥ ६१ ॥ साधुगिलेनाहिरंकवरापति दीनधनीसभएकसरीसे
ज्यौंवरुषारुतपायसुभायसु अंबुदजगलमाहिवरीसे । जीवनश्रासनहीं जिनकेअरु
कालकुत्रासनहीचितदीसे । तेमुनिकेपगवंदनते जनपापपुरातनकेदलपीसे ॥ ६२ ॥
चाहिनहीनिजकीरतकी सनमानसुपूजनश्रादरकेरी निंदनवंदनएकसमोसमता
सजनीगुनरूपचंगेरी । लोकविषैनहिमोहधरे परलोकश्रवंछतमेटश्रवरी । हैघट
श्रातमरामम्हारसते मुनिवंदामिटभवफेरी ॥ ६३ ॥ घोरमहातपतेउपजे चितश्रोध
प्रकाशकितेजदिनेशा। वैक्रयरिद्धभईसुरसी श्ररुतेजसवंतमहाबलेलेशा । श्रापश्रनु
ग्रहसिद्धमई सुपुलाकघणीविधशक्तिप्रवेशा । जोनविकारकरैथिरता गहिसोमुनि
वंदतव्रंदसुरेसा ॥ ६४ ॥ नत्तमतंगमृपामातिके नरंगाजतज्ञानकुबागउजारे । श्रीरि
पराजमहाबल नाहरगाजसिद्धंतकुनादउचारे । भागचलेमतमंदमहापशु जोरणके

शत्रतेरिपुहारे । बादजईजगदीसाकिनंदन तेरिषजीरषवालहमारे ॥६५॥ आतम
रामअनूपअमूरत आदिअनादिअनतविलासी । चेतकअंगअभंगचिदानंद रंगनरू
पमईगुणरासी । व्यापकग्यायकानित्तविराजित सोथिरध्यानविषेअविनासी । हौजि
नकीतिनकीगुणमाल रचीचितलायसुबुद्धप्रकासी ॥ ६६ ॥ जोनगकेगुनदोषलषे
नगपारषसाचअसाचनितारे । दक्षसराफलषेकसकंचन वादमिटायाकेसुद्धसवारे ।
ज्योंरजसोधकधूलथकी धन काढलएविधसोरजटारे । त्योंजडचेतनभिन्नकरे गुणदो
षलषेमुनिआपसंभारे ॥ ६७ ॥ ज्ञानसुनीरभरीसलला सुरधेनप्रमोदसुषीरनिधानी ।
कर्मजुव्याधहरंतसुधा अघमैलहरंत्तासिवाकरमानी । इंदुसिद्धंतकिजोतापिडी श्रुतिदे
वसरूपमहासुखदानी । लोकअलोकप्रकासमई मुनिराजबषानतहोजिनवानी ॥६८॥
सोभतदेवविषेमघवाउड वृंदविषेससिमंगलकारी । भूपसमूहविषेवरचक्रपती प्रगटे
बलकेश नागनमैधरनेंद्रवडो अरुहैअसरेचमरेंद्र वियारी । ज्यौं

संघविषै मुनिराजदिपैश्रुतिग्यानभंडारी ॥ ६९ ॥ धातनमेकलधौतवडो रतनांविच भापतहैवरहीरा । कुंनरमाहिकहेहरिकोइभ केसरिसिंहमहाबलबीरा । फूलनमेंअरुविंदवडो नगकबलसोनहिदीसतचीरा । त्योंसभसंघविषेअतिचारत धारमुनीश्वरसोभतधीरा ॥ ७० ॥ सासनमाहिकरीटसुसेहर हैतिलकोपमकेतुअमोले । वारधदीप जहाजमणी मलयागरसेनिजकारजटोले । वैदनिजामरथीभटसे जगज्ञानकलातुलियाकरतोले । हंसकपोतभरिंडअलींवति जैनजतीगुणआगमवोले ॥ ७१ ॥ सूरप्रतापससीचितसीतल सिंद्धगंभीरसुमेरुअडोले । कंजअलेपसुकुम्मवसिद्रय वाककहैंजनअंमृतघोले । वारणधीरअभीतमृगाधिप ओटविनानभधीगुणटोले । बायअबंधधरासहनेसभ जैनजतीगुणआगमवोले ॥ ७२ ॥ आदि अंत एक स्वर ॥ साधनसाधसदामनकीगाति पंचमहाव्रतकीविधसाधन । साधनराचितभोगांविषे सुषवंछितकामकलानहिसाधन । साधनैहैकरणीहरनी दुषसावरणीवरज्ञानिधसाधन । साध

नरोतमकेपगकीरज भालधरोंसभकारजसाधन॥७३॥साधनराजकिसाजविषे रतवा
निजकोविवहारनसाधन। साधनभूमिकृसानक्रयाविच पोषपशूक्रयविक्रैनसाधन। सा
धनद्यूतकलाकरतत्तमुवादे विवादिविषेधनसाधन। साधनरोतमकेपगकीरजभालध
रोसभकारजसाधन॥७४॥साधकहैशिवमारगकेजन सारथवाहिमहापथसाधक। सा
धकथातपसंयमकेरस रीझरहेपरमारथसाधक।साधकहेउपदेसतजोअघहोइपुनीतव
नेशिवसाधक। साधकहेजगदीसकिनदन्न बंदनतेसभकारजसाधक॥७५॥साधनजो
तकवैदकमैरसमंत्रनयंत्रनतंत्रअगासे।वीरवुलावनथंभनमोहनकेलकतूहलरीतनभासे
नाचनगावनतालवजावन पेलसभीतजज्ञानअभ्यासे। तेमुनिराजकिपायधरोसिरवुद्ध
जगेअघअंधविनासे॥७६॥चक्रवंधद्रुमलछंद॥तियकेसुतकेमितकेधनके नरुकेनचुके
नउकेछलके। सुरकेनरकेसुपकेलजके अटकेनटिकेशिवकेथलके। जिनकेतपकेबलके
झलकेझपकेतलकेहटकेटलके। तिनकेपगकेढिगकेतनकेसरकेसिरकेमणिकेझलके७७

बलकेसपुकेतलुकेहटकेटलके । तिनकेपगकेढेगकेसनकेमरकेसरकेमाणकेसलके ७७

जिमके हरके लडके भमके मृगके गणकेमटिकेथलके । बनके विचकेकिछिके

सुरके सुनके अहिके

भरके सानिके छविके

झलके मुनिके तपके

तिनके जुमुके बलके



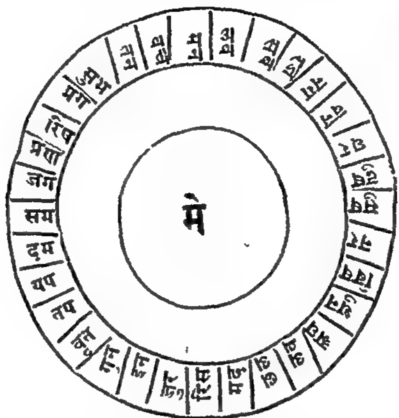
मटिके पलके । तमके

नटिके दिनके पतिके

बलके लसके अघके

॥ ७८ ॥

सममे दममे जपमे तपमे व्रतमे गुणमे इनमे जुरमे । रिसमे मदमे छलमे लवमे अघ शपमे दुखमे घरमे मैथुनमे विषमेंनरमे । वनमे नगमे रजमे सबमेलवमे मनमे वचमेतन में शुभमे ऋगमे रिषमे प्रणमे जगमे ॥ ७९ ॥



॥ एकादिचौदेप्रयंत सिषया कथन मत्तगयंद ॥ छंद ॥ आतमएकसरूपलियोलपएकमहामनकोवसकीनो । एकअसंगउदासरहै जगएकाविरागमहारसभीनो ।

छाडदियोमगओझडकोइक मोषमहामगमोचितदीनो । तेप्रणमोइकचित्तसदारिप आपसभालमहाजसलीनो ॥८०॥ एकहिदिष्टसुचालचले अहित्योंमुनिराजसदाइक चाली । खग्गविशानसमानरहे इकसर्वतजीइकमोक्षसभाली । खायकपूरणसर्वेविषे नभमैसभलोकेलपेगुणमाली । आतमरामलषेनभसे परचेतनवंतअसूनाविसाली ८१॥ सतकुमारथकीपुरुपासुर आनततेंइकरंगविमानी । एकहिदिष्टविमानअनुत्तर एकभवीलवसत्तमज्ञानी । सोसभज्ञानकरीमुनिजानत भाषतहैंइकआतमध्यानी । तेमुनिकोइकवाररिदकरसेवनते जनउत्तमथानी ॥ ८२ ॥ जांजगमैंविबरासकही मुनिजी वंत्रजीवकिभेदसुनावे । सर्वछतीअरुदेसछतीमुनिंदो विधसाधिकरूपवतावे । अंतसमेमरणाविवभांतकुबाल अवालकुरूपादिषावे । तापगकंजअलीजनके दगदोश्रुतिधारसुनोसुभभावे ॥ ८३ ॥ दोविधबंधनतोडतहैं दुहुभांतकुधर्मअनूपधरैया । दोगतिछेदचलेविन्हू भवदोगतिऊरधमैउपजैया । लोकविषेपरलोकविषे समादिष्टसमेत

दुहूंभवथैया । तेमुनिकेपगदोहमरोसिर दोकरजोरसदाहरपैया ॥ ८४ ॥ वालेजुवा
वयवृद्धविपे उपसर्गत्रिधासहिचित्तनतावे । सम्यकमिश्रमृपालपके तिरयंचमनुक्षसु
रेसम्झावे । सल्लनदंडनगारवधारत त्रैपदवोधनहेतसुनावे । तेमुनिकोतिहुवारप्रद
क्षण देप्रणमोसमतासुपआवे ॥ ८५ ॥ त्रैजगजानत्रिहूभवनेयसतीनहिकालकिवा
तवतैया । तीनसुगुप्तधरीतिहुमैचित दंसननानचरित्रसुहैया । त्रयगुणकीजगरीतल
पीत्रय लिंगविकारमिटायदिषैया । तेमुनिवंदतमोदलहोत्रय सधाविषैगुणग्रामपठैया
॥ ८६ ॥ चारकुषायकुछांडतहै गतिचारकुछांडपरेचितलाई । चारसुधर्मवपानतहै
चतुहींसरणेसुपशांतवताई । चारप्रकाराकिदेवकरे जसवेदचहूंउपमामुनिपाई । तत्र
णमोचहुसंगप्रकासक मंगलचारसदासुपदाई ॥ ८७ ॥ चारप्रकाराकिवुद्धजगी घटमो
क्षकिकारणचारवपाने । तीरथचारकहेशिवसाधक लोकचहूपुरुपारथजाने । दुर्लभ
हीपरसंगकहे चतुदानकिभेदसुचारपछाने । चारप्रकारलषे पुरुषाजगतांगुणचारमुषी

मुषगाने ॥ ८८ ॥ पंचप्रमादितजेसुमतीधर पंचजतिंद्रयप्राक्रमभारे । कामकिबानैन
पंचलगै जिहँपंचमहाव्रतसुद्धसवारे । भूषणपचसुज्ञानमई धरपंचमहींगतिमोचित
धारे । पंचपदेपरमेष्टदिपावनसोप्रणमो गुणरासअपारे ॥ ८९ ॥ आश्रवरोककरे
शुभसंवर पंचचरित्रकिभेदसुनावे । थावरसूषमबादरजानत पंचविधेजगजीवबतावे।
पुन्नअनूपअनुत्तरपंचकुपंच विधेसुपउत्तमपावे । सोसभज्ञानकरीमुनिजानत वंदत
दाससदागुणगावे ॥ ९० ॥ लोकसभीषटदर्वमई लषजीवछकायकिराषणहारे । अंत
रकोपटभांतकरेतप बाहरकोषटभांतपसारे । षष्ठआवस्यकसुद्धकरे पटरुत्तविषैशिव
कारजकारे । तेमुनिगोयसदेवकरे पटरागसरागणिगीतविथारे ॥ ९१ ॥ सूषमसूष
मतेषटभांत किदूषमदूपमतेषटआरे । कालकिभेदकहेयुत लछणलेशछहूरंगरीतवि
थारे । जानतहैषटग्रंथनकामाति वेदपटंगलषेगुणधारे । तेमुनिकेपगसीसधरे पटषंड
पतीगुणग्रामउच्चारे ॥ ९२ ॥ दूतकुपादिनिषेधाकिएनरकावल सातकुत्रासस‌ुनाया ।

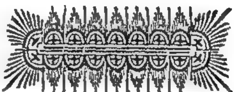
धारमहातपसासुरधेनकु ज्ञानसुधीरसुधारसचोवे ॥ १०९ ॥ केतकसंयमवंतोत्रिया तन केतकहैपुरुषाशिवराही । केतककृत्यनपुंसकगूरत संयमलैचित्तकीमललाही । भावतसोपुरषारथएकाहि दर्वत्रालिंगत्रिधाश्रंघढाही।संयमधारककोकरजोर सदाप्रण मोहरषेगुणगाही ॥ ११० ॥ चारहिंबेदयुतंगउपंग किधारकहैइतहाससुनावे । वैद कतोनिरघंटतिलकर साठहितंत्रषटंगपढावे । योतिकछंदनिरुक्तघणे सबदागमको ससुनायदिपावे । विप्रपतीपरवजंकपंडित तेसभजीतमुनीश्वरआवे ॥ १११ ॥ दानव देवसमीपवहे गरुडामरनागपतीहितपावे । मानववैरपुरातनछाडिकि बैनसुनैरलके जसगावे । चाहिकपोतचिडीसुसीचानेर लेगजएणससोहरिआवे। शांतमहामुनिशां तकियो सवजेतिनकोढिगआवनभावे ॥ ११२ ॥ पावकरासभवेकमलाकर नागप्रसू नकिमालजुहोई।सिंहगजादिवलीसासिका समसिष्यसमानानिवेरिपसोई। वितरकूर

काइ ॥ ११३ ॥ दारदपन्नगदूरभए गरुडोतमसाधरिदेविचत्राए । संकटबंधनटूट
गए तपवंतमहामुनिकेगुणगाए । संपतउत्तमपायलए जसवंतभएसनमानवधाए ।
कारजसिद्धभएसमहींमुनि राजाकिपायसुसीसछुहाए ॥ ११४ ॥ चदकिचाहिचकोर
करे दिननाथकुकोकउडीकरहेहे । धेनविषेवछराहितधारत बालकमातकुमेलेचहेहै ।
मालतिसोलपटायरहै अलिचात्रिकमेघसुमोदलहेहै । साधुमहामुनिकेपगको हित
सेवकचित्तअपारगहेहै ॥ ११५ ॥ कौनगिनेघणबूंदनकोवन पत्रपयोधतरंगवतावे ।
कौनमिनेकरअंगुलसोमुरवी गिरमेरुकोतोलदिषावे । कौनतरेभुजसोरतनागर अंब
रमैउडअंतसुनावे । श्रीगुणसागरसाधुअगाध कहाकविआपनिबुद्धलगावे ॥ ११६ ॥
श्रीअरिहंतजिनेश्वरकेगुण द्वादसअष्टसासिद्धप्रभूके । सूरिगणाधिपकेषटतीसमिलेपन
वीससुपंडतजूके । सातसुवीसरलेअणगार कियोसतअष्टमिलेनगटूके मेलाकेमालर
सालरची गुणग्राहिप्रसादिमहंतगुरूके ॥ ११७ ॥ ज्ञानछपावनहारहएयो जिनदंस

नरोकनहारविनासी । मोहमिटायतथाअंतराय हणचतुघातककर्मजुत्रासी । केवलदं
स्ननानसदाथिर लोकअलोकपदारथभासी । सक्तिसभीजिसमाहिमहापद पूरणब्र
ह्मसुछंदविलासी ॥ ११८ ॥ ओडकदेहउदारककी जिहकेसनरोमनहीनिषवाढे । अं
तनहीबलप्राक्रमकोसुष कोगुणकोकरुणारसगाढे । दोषनहीजिहमोषभयोढिगजीवन
अर्थमहारसठाढे । तेप्रणमोअरिहंतप्रभूभव सिंधपरेजनकेतककाढे ॥ ११९ ॥ सर्व
मईप्रभुसर्वलषीजिनसर्व सिरोमणिसर्वसुव्यापी । आतमरामअनाश्रवउत्तम ओडक
साधुअगाधप्रतापी । निश्चलचित्तनिबंधनिरामय नाकपतीप्रणमैस्तुतिथापी । कर्मनि
वारत्रियोगतजे शिवमारगमाहिचलेबलआपी ॥ १२० ॥ सर्वमुक्ताक्षर ॥ घणाक्षरी
छंद ॥ कनकरजतधनरतनजडतगण सकललषणरजसमसतजनवर । हयगजरथ
भटवलगणसहचर सकलतजनगढ वरननमयघर । वनवनवसनरमणसतगतमगभ
र॰ अघरज र । उरगअमरनर करनहरषजस ज

वरजसकर ॥ १२१ ॥ मनहयवसकरतपनश्रनलमथ मदगजदलमलकपटसरपहर ।
लवठगपकरतपटकपटकवत मरकटचपलकरणपणफड़कर । रपवलश्रनलदहनवन
मनमथपरदलदलनश्रनघभटहलधर । सवलकरमहरचडनश्रटलगड जयजयभणभ
वजणवरजसकर ॥ १२२ ॥ करमसवलभड श्रडनकठनगड लडनफडनपरदलव
लछलकर । सतजनपरमधरमदलवलधर चडनचरनतपभडवरबलधर । लडन
परसपरकरणसवलबलपरदलदलन दरसलषतपवर । परहरकरमपरमपदगडचड
जयजयभणभवजणवरजसकर ॥ १२३ ॥ सकलजगतपर श्रचलश्रमलवर श्रगम
श्रलषपद श्रटलश्रकथजस । धरजलदहनपवनवनतसमय सकलअटकतज परम
सदनषस । सरपश्रमरनरकरणहरपजस वचनपरमरसभवजनदसदस । जगतरव
रहरपरमश्रनघभवभव जलतरवरजसकरहरजस ॥ १२४ ॥ कलसमालती छंद ॥
श्रठदसवरषेचौसठेचेतमासे ससिमृगसितपक्षेपंचमीपापनासे । रचमुनिगुणमालामो

दंपायाकसूरे । हरंजसंगुणगायानाथजीत्र्प्रासपूरे ॥ १२५॥ इतिश्रीसाधुगुणमाला
हरजसरायकृत संपूर्ण समाप्तं ॥ शुभं भवति ॥



देवाधिदे वरचणा ॥ १ ॥

श्रीवीतरागायनमः ॥ अथ देवाधिदेवरचणा लिख्यते ॥ दोहरा ॥

सकल जगतपति पर
न परम जोति राजत
न ॥ १ ॥ बंदो श्रीरि
अरिहंत श्री चंद्रान
यत ॥ २ ॥ श्री सीमं
मान जिनबीस बंदेह
गुण निसदीस ॥ ३ ॥

मपद पूरण पुरुप पुरा
सदा सो बंदो भगवा
षभादि जिन वर्द्धमान
नदेवथी वारिषेण पर
दर स्वामिथी विहर
रजस भक्ति धरगावे
जिन जग ज्ञान प्रका

सकर मिथ्यातिमरामिटाय ॥ भवजनकोशिवमगदीयोसोबंदोजिनराय ॥ ४ ॥ दूमल
वंदकमलबंधयुग्म ॥ परमेष्टमहापदपंचनकोपाहिले प्रणम्ंपाहिऊठसदा। परमारथ





देवाधिदे वरचणा ॥ ३ ॥

रातनालधवलछवसुदरआतआभिराम ॥ ९ ॥ केतप्रभुसुकुमारपदकतमडलराज ।
चक्रवर्तंकेतेभएनिधरतणायुतसाज ॥ १० ॥ परमउदारकतनाविषेराजतश्रीजिनचंद ।
सासोसाससुगंधमयबंदोपरमानंद ॥ ११ ॥ राजरिद्धसुषभोगतजगहिचारित्रमुनिवेस ।
करतपसंजमकेवलीदेतधर्मउपदेस ॥ १२ ॥ मतश्रुतिज्ञानसुअवधधरमनपर्यवारिषरूप ।
कर्मघातकीषयकरीकेवलज्ञानअनूप ॥ १३ ॥ अबढतकचनषअघटछविविषनलगत
सुभदेह । जघिन्नसातकरओडकेपंचसैधनुगुणगेह ॥ १४ ॥ समोसर्णपदमासणेचौ
तिसअतसयसाथ । वाणीगुणपनतीससोभाषतत्रभवननाथ ॥ १५ ॥ मानवसुरातिर्यं
चजियभव्वसुनेचितलाय । निजनिजभाषामाहिसभअर्थसमझसुषपाय ॥ १६ ॥ चौ
रासीलपपुव्वलग । जघिन्नबहत्तरबाससूषमदूषमअंतधरदूषमसूषमवास ॥ १७ ॥
केजिनपगचक्रीलगैकेहरिबलवंदेह । मंडलीकरालेघणेसभजिनभजसुपलेह ॥ १८ ॥
भर्तईरवर्त्तदसाविपेबिजयएकसौसाठ । जिनचक्रीहरिबलजन्ममध्यषंडश्रुतिपाठ ॥ १९ ॥

देवाधिदे
वरचणा
॥ २ ॥

केपथ्यपावनको परमातमकोपहिचानमुदा भवसिंधजहाजउतारनको सिमरोमनमोव

रपंचपदा दिवके सुष
साधनको सुयदा हि
वरं रिषधर्मधरं रिषवं
रिसमान मृषारिप स
णदोषहणं भ्रमभीत
दोपहतं शिवशंकरणं
धरं प्रणमो अरिहंत

के घरभंव्वनको शिवं
कदा ॥ ५ ॥ रिषरूप
दयुतं रिषभादि जिन
वंहरं रिजपंथवहं रि-
हरं चितशांतकरं दुष
परम पुरुषारथ मोष
पदा रमणं ॥ ६ ॥

समुच्चेतीर्थंकरवर्णणं ॥ दोहरा ॥ आरजदेससुधर्मकुलराजवंसविष्यात । नरतन
दसविधसुभसहितमातापितासुभजात ॥ ७ ॥ वजररिषभनाराचतनसमचौरंससंठान ।

देवाधिदे
वरचणा
॥ ३ ॥

रातनालधवलछबसुदरश्रातश्राभराम ॥ ९ ॥ कैतप्रभुसुकुमारपदकतमडलराज ।
चक्रवर्त्तकेतेभएनिधरतणायुतसाज ॥ १० ॥ परमउदारकतनाविषेराजतश्रीजिनचंद ।
सासोसाससुगंधमयवदोपरमानंद ॥ ११ ॥ राजरिद्धसुषभोगतजगहिचारित्रमुनिवेस ।
करतपसंजमकेवलीदेतधर्मउपदेस ॥ १२ ॥ मतश्रुतिज्ञानसुश्रवधधरमनपर्यवारिषरूप ।
कर्मघातकीषयकरीकेवलज्ञानश्रनूप ॥ १३ ॥ श्रवढतकचनषश्रघटछविविषनलगत
सुभदेह । जघिन्नसातकरश्रोडकेपंचसैधनुगुणगेह ॥ १४ ॥ समोसर्णपदमासणेचौ
तिसश्रतसयसाथ । वाणीगुणपनतीससोभाषतत्रभवननाथ ॥ १५ ॥ मानवसुरतिर्यं
चजियभव्वसुनेचितलाय । निजनिजभाषामाहिसभश्रर्थसमझसुषपाय ॥ १६ ॥ चौ
रासीलषपुव्वलग । जघिन्नबहत्तरवाससूषमदूषमश्रंतधरदूषमसूषमवास ॥ १७ ॥
कैजिनपगचक्रीलगैकैहरिबलवंदेह । मंडलीकरालेघणेसभजिनभजसुषलेह ॥ १८ ॥
भतंईरवर्त्तदसाविषेबिजयएकसौसाठ । जिनचक्रीहरिबलजन्ममध्यषंडश्रुतिपाठ ॥ १९ ॥

जिहचक्रीतिहहारिनहीहारीढिगचक्रीनाहि । एकषेतविवहूनहीजिनहरिचक्रधराहि ॥ ॥ २० ॥ द्रर्वभावविधगुणसहितदयाधर्मअवितार । वंदोश्रीजिनधर्मगुरुसिमरेभव जलपार ॥ २१ ॥ अथ श्रीजिनमनगुण सवैया ३२ ॥ कमल बंध ॥ ४ ॥ परम

रितपरम विमल मत प
भ्रमसभ परस मुकति
ष सकलजग सवजग
तवत करमहरण व्रत
ष अमितनभ जितमद
इमरमत अडग मग
सरलमधुर सुभसरस

अनघगति परम धरम
रम विशद भग परहर
पथ परचत समदमपर
जिय हित सतसुष चि
अचल अमरनग अल
मन मथ जिणवर मन
॥ १ ॥ वचण ॥ गुण

अमृतसमसतमृदसमरससकलभविकहित । सरववरणमयसरबसुविधनयसतगतम
गवरसमज्ञतसतचित । प्रगटकरतसभसमश्रुतिअनुक्रमघरमसुविधदसदसतसहित
मित । गरजतघनमयपिकधुनरसमयसभसुरगुणधरजिणवरवचइत ॥ २ ॥ कायगु
ण ॥ मनुजसुगतमयमलनलगताजिहमदनानिकरजयमणिद्रुताजिणवर । मनुजअसुर
सुरमनवचतनाथिरमगनानिरपजिहमननअतुलकर । चिहनरुचरमयवरणसुछविजिह
दरसणअघक्षयअरुजसुगुणघर । रुधरधवलधरजिणवरवपुवरअमितसुबलजिहन
मतभगतधर ॥ ३ ॥ त्रियोगीगुण ॥ करणकरणवसकरमम्बलजितकलमलरजह
रकरणपरमसुप । करणचरणविधकठणधरणनितकवणअवरसमकहितनिपुनमुप ।
अमितअतुलजसवरननसुरपतिपरमभगतउररचणचरमरुप । सकलसकतनिधपरम
सुगुणयुतमनवचतनइमहरणजगतदुप ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ २९ ॥ मत्तगयंदछंद ॥
आतमगुण ॥ जोजनएकमहादिवकेसममोदमहासुरजोगजहाहै । प्रादभएसुभनी

चगएछपशब्दत्रिपंचअनूपमहाहै । वैरविकारनहीतिसमंडलशांतरिदेसभभव्वतहाहै धर्मसमोसरणेप्रभुराजतपापपषंडाकिबातकहाहै ॥ २६ ॥ हेमसिंहासणमाणकमंडत तापरतीनसुछत्रधरैया । चामरइंद्रकरैविवमूरतछक्षअसोकसुछायकरैया । सूरप्रकासदिपेद्युतिमंडलऊचमाहिंद्रधुजाफरकैया । गर्जतचक्रवजेसुरदुंदभिफूलवसेजिनराजदिपैया ॥ २७ ॥ ऊचगंभीरमहासुरपंचमिमेघसिदुदभिसीमनमोहे । जोजनएकलगेसुनतेसभभव्वजगैमतदोषनपोहे । यासुनमोदलहैसुरमानवऔतिरयंचभलेगुणटोहे । सर्वसुभाषमईसमझेसभश्रीजिणबैणअनूपमसोहे ॥ २८ ॥ सर्वदियालसुशांतसदाथिरसर्वमईसरवग्यसुधामी । सर्वकुदेषरहैसवव्यापकसर्वतिभिन्नचिदानंदनामी लोकअलोकविलोकलियोप्रभुश्रीजिनराजमहापदकामी । आतमकेगुणसाथदिपेभवसेवकवंदतहैरुचपामी ॥ २९ ॥ सर्वगुनोधतसर्वसुशक्तिसदासुपदायकशांतरसीहै भव्यउधारणदोषनिवारणश्रीकरुणाउरमाहिवसीहै । जाजसचंदकियोजगचां नलो

देवाधिदे
वरचणा
॥ ७ ॥

कसमस्तमुक्तांतधसीहै । श्रीजिनराजविराजतहैप्रणमोजिनकीभवपीडनसीहै ॥३०॥
श्रीगणधारआचारजसुंदररूपमनोहरतेजदिपैया । श्रीउवझायमहागुणआगरपंडत
मारगमोषदिषैया । साधुमहातपदोविधकोगहिकर्ममहारिपचूरकरैया । श्रीजिनरा
जविराजतहैयुतसेवकमोपकुकाजसधैया ॥ ३१ ॥ केवलऔधधरीमनपर्यवज्ञानधरी
परमौधधरैया । सर्वश्रुतिमुनिपूरवधारकअंगउपंगप्रकासकरैया । एकपदेअणसार
लहैसकलागमवादजईहरपैया । लब्धअहारकवैक्रयचारणश्रीजिनराजकिसाथसुहै
या ॥ ३२ ॥ आपअनुग्रहासिद्धसमर्थपुलाककिलब्धमहाबलपाई । तेजसलेसकरीअ
पणेवससीतललेसजगीसुपदाई । औपधहोइगयोमलमूत्रसुगधमईजगरोगमिटाई ।
औरघणीविधलब्धधरीरिपश्रीजिणसाथसमाधिलागाई ॥ ३३ ॥ इंद्रविमानपतीदस
जोतिकदोभवनेश्वरवीसवपाने । विंतरकेविवतीमसभीचतुसाठसुभव्यमहाबलजाने ।
श्रीजिनवंदनसेवनपूजनधर्मकथासुणहेतपछाने । कोटातिघाटसमोसरणेनहिओडक

देवअसंषमुथाने ॥ ३४ ॥ चक्रपतीवरकेशवश्रीबलदेवमहानृपमंडलराया। भक्तिकरी चतुरंगचमूसजनादवजंत्रसमेतसुहाया । श्रीजिनवंदनपुछनहेतसमोसरणेपरिवारसु आया । तीनप्रदक्षणदेचरणीनामिधर्मकथासुननेचितलाया ॥ ३५ ॥ साधुमहातमसाध विवेकगणश्रावकश्रावकणीमुपामिष्टी । भव्यचहूंविधदेवसुरांगणपेवरपेचरणीसमादिष्टी । पुन्नउदेतिरयंचतथात्रियासोभतधर्मसभागुणग्रष्ठी । श्रीत्रयलोकपतीप्रभुसुंदरसोभतमध्यसुधाघणवृष्टी ॥ ३६ ॥ जीवअजीवकुपुन्नकुपापकुआश्रवसंवरकोनिर्जराको । बंधकुमोषकुभाषतहैअणगारअगारकिधर्मधराको । सर्वहिजीवकिठामगतागतिआयुक्रियाचितभावगिराको। भोगसंयोगवियोगसभीजियकेप्रभुजाणतपर्मपराको ॥ ३७ ॥ दानसुसीलतपोयुतभावचहूंविधिधर्ममहाफलदाता । मोषकरैसुषस्वर्गभरै नरलोकाविषैबहुरिद्धमिलाता । दारददुषकरैचकचूरलहैजियउत्तमसंपलसाता । तीरथनाथवषानतहैइमधर्मकथासुननेवहज्ञाता ॥ ३८ ॥ यासुनवाकविरागचढेषटपंडपती

वलदेवनरेशा । राजसुतादिकमंत्रिमहाभटसैनपतीबलवंतपगेशा । सेठधनीनरना
रिघणेसुषभोगतजेगाहिसंजमवेशा । श्रीजिनसासनमाहिभएरिषछाडदिएभुवभारक
लेशा ॥ ३९ ॥ जासप्रसादभएसुरसिद्धविमानअनुत्तरमाहिविराजे । देवभलेआहिमिं
दभएवडभागनरिंदमहाछविछाजे । देवगुरूपदइंद्रसमाणकलोकपतीपदवीगुणसाजे
चक्रपतीबलकेशवभूपमहाधनरिद्धलईजगगाजे ॥ ४० ॥ जासप्रसादफणीगजगोमृ
गनाहरवानरऔरकहेहैं । दादरपेचरभव्वघणेपिछलेभवजातपछानरहेहैं । भक्तिभ
एसुभभावकरीतपस्वर्गकिभोगाविलासलहेहैं । भोगभलेजुगलाजनकेबहुरिद्धनरिंदध
नाढगहेहैं ॥ ४१ ॥ वेदपुरानपढेरचयज्ञरिझायाकिदेवमहापदपाए । वादजईगुरुभा
नकवीहरवारदसारदकंठकहाए । विप्रपतीपरवर्जकगजंतआयप्रभूढिगहीविसमाए ।
देषप्रतापलगेचरणीकुछप्रष्णकरीसमझेमगआए ॥ ४२ ॥ वेदपुरानकिधारकहैइत
हासकहैसभवेदकजाने । आठहिअंगनामित्तलषैरचअंगगुणेबहुभागपछाने । कोशध



रेबहुशब्दकोसाधानयुक्तिकरैबहुछंदवषाने । न्यायकश्रौरघणीविधपंडतश्रीजिनजीत
लियभ्रमभाने ॥ ४३ ॥ गौतमपंदकसोमलसोसिवरायारिषीशुकदेववषावे । याविध
भव्यश्रनेकतरेभवसिंधजहाजप्रभूपगमाने । श्रापतरेबहुतारतहैप्रभुश्रीजिनदेवाजिनं
दसुजाने । सेवकबंदतहैकरजोरकरोमुझपारदयानिधदाने ॥ ४४ ॥ साधविसाधुनि
यानकियोजिनवीरछुडायश्रराधिककीने । मेघकुमारगिरंतकियोथिरसारथसाथसंभा
लहिलीने । याविधश्रौरघणेजियकोजिनराजसमाधमहासुषदीने । सर्वजिणंदकरेइ
महीनितसेवकबंदतप्रेमाकिभीने ॥ ४५ ॥ मानपलोपमसागरकोसुनाचित्रसुदंसनकोचि
तआयो । श्रीजिनताहिदिषायभवांतरदेवपणोनररूपदिषायो । पायविरागभयोमुनि
उत्तमयाविधभव्यश्रनेकतरायो । तोडमहाअघजालदियोसुषदेवासिरोमणनाथकहायो
॥ ४६ ॥ केशिकुमारकहापरिदेसिकुसंजतरायरिषीबनवासी ॥ सैनककोसुश्रनाथ
महामुनिविप्रनकोहरकेसिसुभासी ॥ श्रीजयघोपप्रवुद्धकियोद्विजभ्रातमिटायदईभव



फासी । श्रीजिनश्रीजिनकेमुनिराजकरेउपगारमहासुषरासी ॥ ४७ ॥ धर्मकथाञ्जतिसुंदरश्रीजिनराजकहीसभहीसुषपाया । केनरनारिलियेरिषचारितकेञ्जनुब्रत्तलईमगञ्जाया । पुनउदेतिरयचतथात्रियश्रावककेसमदिष्टसुहाया । देवभएजगताञ्जतिमोदतसर्वहिभव्वनमीगुणगाया ॥ ४८ ॥ भक्तिकरेसुरराजमहापटनाटकगीतवजंत्रबजावेञ्जद्भुतहासासिंगारमहारससोभतहै करुणारसपावे । बीरमहारससाथसजेरससंतसमोसरनेढिगआवे । धर्मसमोसरणेञ्जतिमोदमहानिजराजिनराजबतावे ॥ ४९ ॥

॥ दोहरा ॥ सकलजगतपरद्यालप्रभुसुकलध्यानभगवंत । वंदोश्रीजिनपर्मगुरुजिहढिगकरुणामंत ॥ ५० ॥ ञ्जादिञ्जनादीरीतसुरकरेभक्तिउतसाहि । रागद्वेपतेरहितप्रभुसर्वदर्वञ्जनचाहि ॥ ५१ ॥ भवजनपावेभक्तिफलञ्जघपयसुकृतबंध । इहभवपरभवसुषलहैजगेबोधमिटञ्जध ॥ ५२ ॥ भक्तिज्ञानविबभांतसुलहैस्वर्गसिवषेत । तिहकारणरचणारचीनिजञ्जातमकेहेत ॥ ५३ ॥ मत्तगयंदछंद ॥ श्रीजिनदेवमुनीसकिदस

देवाधिदे
वरचणा
॥ १२ ॥

णआवतदेवपतीहरिषाई । सुंदरयानविमानविषेचडसाथसभीपरिवररसज्ञाई । तीन
प्रदक्षणदेचरणीनासिधर्मकथासुनप्रीतलगाई । फेरनमैकरजोडरचेवरनाटकगीतमहा
चतुराई ॥ ५४ ॥ सिंहाविलोकनछंद ॥ यमकाअलंकार ॥ सोहेसुरराजराजसं
पतयुतयुतदेवीगणदेववरै । जिनवरपगवंदवंदणाकरकरपेख्याघरसुभभक्तिकरै । दाहण
भुजकाढकाढा हतेवरदेवकुमारअनूपधरै । कुमरीबहूरूपरूपजोवणानिधवामीतेसुर
प्रादकरै ॥ ५५ ॥ किलगीसुरमुकटमुकटमालायुतमालगलेमणिमोतनकी । टीकावर
भालभालसेमणिकीमणिकुंडलछविजोतनकी । वैंसरवरनाकनाकवासीसुरसुरतधार
आभर्णगले । भूषणभुजहाथहाथपगअंगुलकटसभअंगउपंगभले ॥ ५६ ॥ गंधतव
रवरणवरणवरणाकेवर्णयोगपटकंतछवी । लेपणसुभगधगंधसुषसुंदरसुंदरवपुझषकेतु
दवी । घुमघुमघुमकंतकंतपगघघरूनेवरछणछणकारकरै । गुंजतअभिमालमालती
मोहतमोहतरसासिंगारधरै ॥ ५७ ॥ कुमरीसुकुमारमाररतजिमपटपटभूषणसज्जमोद

मई।पोलेमिलपेलपेलकौतुककेकौतुकविधनरलोकभई। नृसिंहपूरपूरसपात्तमउत्तम
झालरभेरतुरी सुरगणउलसतसांतसभकेचितचितमोजिणवरभक्तिफुरी ५८ मनवचत
नसुद्धसुद्धविवलोचनलोचनरसजससुद्धग्रहै होवेसुरभक्तिभक्तिग्रतिउरधरधरचरणा
सिरमोदलहै। साजेवाजंत्रजंत्रवहुविधकेवहुविधगीतसुरागगहै। सातोसुरतालताल
कावाजेवाजेमादलंमोहरहै ॥ ५९ ॥ गावेगंधर्वसर्वस्वरपूरणपूरणविधगुणग्रामकरे।
नाचेनटदेवदेवरचणारचरचनाटिकनटरूपधरै। घटाघणघोरघोरघणघटरविरवटोल
कवरढोलरमै। छैणेछणकंतकंतधुनछंननाछिनछिनप्रभुपगदेवनमै ॥ ६०॥ वत्तीसोभांत
भांतभांतनकेनाटकस्वागग्रनूपकरे। गावेसभरागरागनीसंयुतसयुतमुरछाग्रामधरै।
देषेजिनचित्रचित्रनानाविधनानाविधसुररिद्धठवे जिनवरसर्वग्यसर्वदर्शीप्रभुप्रभुस
माधिथिरचित्तभवे ॥६१॥ महिमाइहिदेषदेपवहुतेजनजन्मसफलमनमानरहै धनधन
धनदेवदेवललनाधनधनजिनभक्ताप्रेमगहै। जयजयजयकारकारणेशिवपदाशिवपद

देवाधिदेव
वरचणा
॥ १४ ॥

थावनहाभणे । हरहरअगपुंजपुंजसुकृतगहिगहिजिनधर्मपुनीतवने ॥ ६२ ॥ कीरत
रचछंदछंदयुतभूषणभूषणसजसुरकंठधरै । केतककरजोरजोरकरचितकोश्रीजिणवर
कोध्यानकरै। मुर्नमनगुणधारधारसंयमतपतपतमेटाचितसुद्धभए । तरनीरसंसारसा
रकेवललहिलहिपदमोषअडोलथए ॥ ६३ ॥ जोजनमितषेतषेतादिवसमाजिहसुनस
वदादिकप्रादभए । फुल्लनकेटेरढेरऔषधरंजगंधधूपसुषदानथए । षटरितसुपदेवदेव
दुंदभिधुनमंदमंदसुभवायचले । प्रभुकोउपदेसदेसदेसोकेसुरनरतिर्यंचसुनतभले ॥
॥ ६४ ॥ सिंहासनरत्नरत्नमयऊपरप्रभुअनूपतनसोभरह्यो । छत्रोतमतीनतीनजग
प्रभताचामरशक्रईशानगह्यो । भामंडलजोतिजोतकीजीतकतरुअसोकयुतारिद्धजहा
राजतगुणऊचऊचनभभेदतलवुसहंसयुतकेतुमहा ॥ ६५ ॥ मणिमयवहुवर्णवर्णवहु
मिश्रतधर्मचक्रगरजाटकरै । उत्तमजयवंतकंतधुनसुनकरवादीजननितपायपरै । केते
व बादबादप्रछणोत्तरकर ... । ती थकेनाथस

जिनराजथए ॥ ६६ ॥ गंधोदकवृष्ठइष्टमनमोहनपुष्पवृष्टदलवृष्टभली । दसोदस
उद्योतहोतनिसबासरगमनागममुरसंघमिली । चिताभयरोगसोगदुष्टाश्रमछलभ्रम
इमअघहोरघणे । इहिहोइनकोइदोषातिसमंडलसमोसरणाजिनराजतणे ॥ ६७ ॥ ॥
जिनवरचितशांतशांतदसयातिवरवरमंत्रीकरुणागरजे । सैनापतिबीरबीरद्वादसतपवर
समोसर्णसिंगारसजे । सुरगणवनभक्तिभक्तिजवपावेहासमहारसताहिविषे । प्रगटे
सुररिद्धरिद्धमुनिलब्धताहिअद्भुतरसदक्षलिपे ॥६८॥ दानवसुरसाथसाथफणगुरुडेसुक
सीचानकपोतघणा । गजमृगमृगराजराजतेसीतलजिनवरउपउपशांतमना । इमइ
मबहुजातजातजीवनकीरलवैठेनिरवैरभए । अद्भुतरसज।नजानाजिनदेपनश्रीजिनरा
जअलपथए ॥ ६९ ॥ वाणीउपदेसदेसणाअद्भुतअदभुतरसतिहमाहिथया । इकइकस
ब्दार्थअर्थसंष्यानाहिश्रुतिदेवीजिहवासालिया । सुनसुनाजिनवैनचैनभवजनाचितसुधा
पानरसधायापिया । जयजयजिनराजराजअविचलाजिहाजिहपगअरचनदेवाकिया ७०

आतमरिपमोहमोहकीसंततजन्ममर्णदुषहानथया । तिनकोबलषंडषडचूरणकररु
द्रमहारसकाजाकिया । तनतेसबदर्वसर्वविष्ठासमसमझताहिविभछाडतहै । हिंस्या
दिकदोषमोपमगघातीताकोभयरससराजतहै ॥ ७१ ॥ आठारसरूपरूपअपनेसुशां
तरसेस्वरपासरमे । साधेसवकाजराजरचणारचपायलागबहुवारनमै । सोहिरस
शांतशांतरूपीचितचिताजिनवरकेमाहिवसै । जयजयाजिनचंदचंदात्रिभुवनकेत्रिभुवन
केवलज्ञानलसै ॥ ७२ ॥ तुमसमनहीसूरसूररिपमर्दणहारिहारिविधनाहोरघणे । तव
गुणगणगेणतगणकलिपलेषकथकतसेसगुरुकौनभणे । हैअभुजगदीसदीसानिस
वंदोवंदोभवभवश्रीधरजी । जयजयजिनदेवदेवदेवनकेकरकरुणाकरुणाकरजी ७३॥
भगवनसरवग्यसर्वदर्सीप्रभुलोकअलोकप्रकासप्युणी । रागादिककर्मभर्मतेरहितअ
गमअगाधिअपारसुणी । घनकनबनपातरातकेतारेगिणेकौनजगमाहिगुणी । महिमा
गुणसिंद्धसिंधभवतारो र णाकहिकहिथकतमुणी ॥ ७४ ॥ निश्चलसमदर्शदर्शतव

मूरततवपदपंकजपर्सणको । श्रावकमुनिवृंदवृदसुभधर्मीधर्मसभातवदर्शणको । मेरे
मनइछइछपूरोप्रभुप्रभतातवपरलोकभई आपणकरदासदासकोदरसणदेवोमुझमन
चाहिथई ॥ ७५ ॥ दोहरा ॥ लघुवुद्धोकेतेकहुंतुमगुणअमितअनंत । अंजलमैकेते
ग्रहोजलनिधजलदृष्टंत ॥ ७६ ॥ तुममातातुमताततगुरुसाधुसर्णकोठाम । दर्शणदे
वोनाथजीश्रीसीमंदरस्वामि ॥ ७७ ॥ भवजलशिवपुरअंतरेसजोगीधरसीम । श्री
सीमंदरस्वामीजीजहावसोदनभीम ॥ ७८ ॥ अहिगजकेहरचोरतोशिषजलबनरण
रोग । व्यंतरमानवदूरभयसभहीहरदुपसोग ॥ ७९ ॥ निश्चलचितसिद्धांतरसवि
भ्ररहिततवसेव । इहिभवपरभवधर्मरुचरहोमुझेसुणदेव ॥ ८० ॥ मत्तगयंद छंद ॥
कोउभजेहरिशामविरंचहईंद्रससीसवितापितरांको । शेसगणेसाशिवादुरगाजलपा
वकवायुरमाइतराको । जक्षसुरासुरनागघणेजगनायकशक्तिअनेकधराको । सर्वति
उत्तमतारकश्रीजिनसेवकसेवनशांतकराको ॥ ८१ ॥ दंसनबंदनपूजनसेवनश्रीजिन

देवकुमंगलकारी। कीरतगावनध्यानलगावनरूपदिपावनमैगुणभारी। जोनरनारिसु
नेरचणादुषदोषहरैसुपशांतभंडारी । जैनजवाहरपावतसोजिनपुन्नाकिएचितलायत्र
पारी ॥ ८२ ॥ दोहरा ॥ श्रीजिणवरगुणनिधअगमसुरपतिलहैनपार । नमोनमोज
गदीसजभिवजलपारउतार ॥ ८३ ॥ नवरसरंजतस्तोत्रइहछंदअनूपमअर्थ । पढत
सुनतिअतिहर्षचिताशिवादिवसर्वसमर्थ ॥ ८४ ॥ गीया छंद ॥ कलस ॥ श्रीजैननाय
कषमदायकमुक्तिलायकपूजीए । गुणरतनआगरज्ञानसागरसेवनागरहूजीए । पण
साठसंमतसैअठाराहिचेततिथप्रतपदभणी । विधदिनकसुरपुरनमतहरजसदेहुप्रभु
समताघणी ॥ ८५ ॥ इति श्रीदेवाधिदेवरचणा संपूर्ण ॥



अथ श्रीदेवरचणांप्रारंभ्यते ॥

॥ दोहरा ॥ अवसुरगातिरचणाकहुं सुनोभवकमनलाय । पंचिंद्रयातिर्यंचनरपुन्न जोगतेजाय ॥ १ ॥ देवविमानीजोतकीभवनपतीबनवास । चारजातवहुभेदसोंजिन वरकीयोप्रगास ॥ २ ॥ रागसाथसंजमकीएग्रहीधर्मव्रतपाय । बालतपस्याकष्टकर अरअकामनिजराय ॥ ३ ॥ अंतसमेसुभभावसोंमानवअरुतिरयंच । तजसरीरसु रगातिलहैरमैविषेसुपपच ॥ ४ ॥ दयादानतपभक्तियुतपुन्नतरोवरलाय । सिंचभाव जलफललहैसुरगातिरससुपपाय ॥ ५ ॥ अथनवनामपुन्नवर्णनं ॥ दोहरा ॥ पान पानथानकवसणसैनदानविधपंच । मनवचकायासुभरमणनमणपुन्ननवसंच ॥ ६ ॥ सुद्धवीजआछीधरणबीजनकीरुतहोइ । जमैषेतबहुफलकरैतिमसुक्रतिफलजोइ ॥ ७ ॥ अणमोदनतेफलवधैनिंदनतेघटजाय । सुभकीकरअणमोदणापापानिंदमललाय ॥ ८ ॥ ॥ अथ पंचिंद्रयसुपकथन ॥ दोहरा ॥ नाटकगीतवजंत्रधुननिजकीरतसुनकान । श्रुतिइंद्रयसुपमनमगनपुन्नउदैफलजान ॥ ९ ॥ सुंदरवपुभूषणवसणरूपवतीसेपेख

कनकविविधमणिमयसदनदगइंद्रयसुपमेल ॥ १० ॥ कुसमदामगंधतवसनपुष्पसै
नवरधूप । हिमाहिमाशुलेपनविविधघणइंद्रयमुपरूप ॥ ११ ॥ उत्तममधुरमनोज्ञर
ससुधापानरसकंत । पुन्नउदेभोगेअमरभाषेश्रीभगवंत ॥ १२ ॥ सुभसपरसातियापि
याकेमृदपटसेजसुपौन । सुरसफर्सइंद्रयरमैलहैपुन्नविनकौन ॥ १३ ॥ मनसुपस
दाप्रमोदतावचनविलासहुलास । वलप्राक्रमदूषणरहितकायासुपपरगास ॥ १४ ॥
जोगिंद्रयमयाविषयसुपसुरभोगादिवपेत । मुणिनहिवछताशिवभजननमनदेवइसहेत
॥ १५ ॥ मत्तगयंद छंद ॥ उत्तमउत्तमसाधसरागसुसंयमदेवविमानभएहै । देस
व्रतीमुनिसेवकश्रावकउत्तमसोसुरकलपगएहै । मध्यमभेदअनेककरीतपदेवचहूंविध
माहिथएहै । कष्टअकामसुभायविपेमरदेवजाघिन्नाकिवासलएहै ॥ १६ ॥ कंकरकंट
कपंकरजादिकनीचअपावनथोकनहीहै । यत्रनपंषिपशूनरनारिकिनोविकलिंद्रयदेव
सहीहै । नित्यप्रकासनहीनिसवासरदेवमहाद्युतिहोइरहीहै । स्वर्गविषेसुपभोगतहै

सुरयाविधश्रीजिनराजकहीहै ॥ १७ ॥ भूमिभलीवरुणादिचहूसुभदिव्यसुभौनवि
मानप्रतापी । वृक्षलताकुसमाकरकाननदेवरमैसुभरूपकलापी । सीतलमिष्टसुगंध
तनीरभरीकमलायुतकेतकवापी । सैलसरोवरकेतकदेहरयारचणादिवमैविधथापी ॥
॥ १८ ॥ तप्तनसीतलविघ्नकछूतिहअंबरमाहिविकारनकोई । मारतमंदसुगंधमईजि
हरुत्तवसंतसदासुषढोई । धामलगैनगसूरससीकुजसोममईजकवीशनिहोई । पुन्न
विपाकरमैदिवमेसुरश्रीजिनभाषतनिश्चतसोई ॥ १९ ॥ ऊचाविमानदिपैमणिमोतिय
वर्णवितानअनूपसुहाई । सव्दमनोहरदुदभिघटणकोवरनाटकगीतरिझाई । गंधज
हावरमालप्रसूनसुगंधतचारसुधूपधुपाई । भोगविलासविषै ववि्धागतिआयुनजानत
पुन्नकमाई ॥ २० ॥ थंभघणेनगहाटककेमुकतामणिकंचणगुंथतजाली । क्रांतमणी
कविसीसनकीवरकैतुपताकमसाथविसाली । भीतवचित्रसुचित्रमईबलसिद्धपुरीनृत
कौतिकवाली । ताहिविषैविविधासुपभोगनपूरणइंद्रयपंचरसाली ॥ २१ ॥ गर्भनसे

जविषेउपजेतनपूरणएकमहूरतमाही । गंधतस्वासकरीटसुकुंडलहारसुभूणसोभतबा
ही । अस्तनरक्तनमासमईतनरोगजराअंगहीनतनाही । फूलकिमालसदाविकसी
सुरनाकविषेउलसंतसदाही ॥ २२ ॥ जोबनबंतसुभंतसदामनबंछतरूपसुवैक्रियसाजे
नींदनहीपलकानलगैनाहिआलसप्राक्रमवंतसुछाजे । कौलअहारनहीमुषमेलनवास
एलैअपतेअतिराजे । पुन्नमहातरुकेफलभोगनलिंगात्रियापुरुषाविवबाजे ॥ २३ ॥
भूमछूहेनचलेनभमेअतिपिप्रगतीमितकौनपछाने । कारजासिद्धकरेमनकेवलऔावध
रीतिहुकालकिजाने । एकतिकाढअनेककरेतनतेबहुभांतकिकौतिकठाने । पुन्नकिये
भोगतहैसुरयाविधश्रीजिनराजबषाने ॥ २४ ॥ वीरजरक्तबिनारसमैथुनस्वेदनपे
या । मैलनहीश्रुतलोचननाकजिभातनकीनाहिदीसतछाया । श्लेषममूत्र
। जिनराजबताया । हैसमहीचतुरंसछवीसुरपूरवपुन्नउदेदिव
नछवीसरस्याममणीदुतिरक्तिमणीके । पांडुरनीलसु

गौरतनोतनसुंदरमोहनरूपगुणीके । अवररंगघणेतिनकेसिरमौलघणीविधलछणनी
के । रिद्धजघिन्नसुमध्यमओडकभेदअसंषसुवाकमुनीके ॥ २६ ॥ मूलसरीरसुमान
वमूरतउत्तररूपअनेकधरैया । अस्वगजादिकरूपघणीविधस्वामिकिआपणकाजक
रैया । थूलतिसूषमसूषमतेगुरुकौतकभांतअपारादिपैया । चित्तहुलासकलोलकरैसुर
गीतसुनाटकताथईथैया ॥ २७ ॥ भूमपहारसिषीजलकाननसर्वविषेगतिरोकनकोई
अंवरजातपतालधसैतिरछेप्रगटेसुछपैसुरसोई । जंतकिदेहप्रवेसकरैनिरजीवविपेध
सजीवसुहोई । सक्तअनेकलईतपसाकरपन्नतरोवरकोफलजोई ॥ २८ ॥ वाहनदेवण
केगजगोहयसिंहकुरंगतथामहिषंगी । मोरमरालफणीगरुडामरएकणकेपरस्वानसु
रंगी । औरघणीविधरूपधरैसूरभूषणवस्त्रसजोछविचंगी । यानविमानचडेवहुसोभत
भापतजैनपतीसरबंगी ॥ २९ ॥ वित्तरभौनपतीसुरजोतिककल्पदुहूंलगहोवनदेवी ।
तांतिगमागमअष्टमलोमनअच्चुतलौचलकेरसवेवी । आदिकिकल्पकिमोदलहैविषमे

सममाहिइशानकिलेवी । यारचणासुरकल्पविषेमुनिभाषतहैजिनआगमसेवी ॥३०॥
केतकस्वामिग्रहीवरकामणकेतकहैगणकावतदेवी । रूपनिधीरतिकेलविधीगुणधाम
सजीहितकेरसभेवी । कायकरीपरसेहगसोवचसोमनसोइममैथुनसेवी । कामवली
सुरकल्पलगैउपरंतवसेतिहनामनलेवी ॥ ३१ ॥ कामविकारफूरैसुरकोजवकोऊरमै
अपणीघरणीसो । कोउकुबुद्धकरीपरकेसंगकोइरमैगणकावरणीसो । वैक्रयकीरचणा
रचकेसुरभोगविलासकरैतरुणीसो । याविधभोगविलासकरैसुरशक्तिलईअपणीकर
णीसो ॥ ३२ ॥ एकसुरिंद्रकिपंचसभाउतपातसभाउपजेजिहमाही । होतअलंकृतदू
सरिमैअभिषेकसभापदवीजिहठाही । ज्ञानकलाविवसायसभाजिहपुस्तकरत्नाविरा
जरहाही । पंचमिराजसभापरिवारमिलेजिहनामसुधर्मकहाही ॥ ३३ ॥ राजसभा
जिसमध्यसिंहासणईश्वरपूर्वदिसापटरानी । उत्तरवायुइशानदिशासमआयुसुरेश्वरइं
द्रसमानी । पावकदक्षणनैरतगौपरसात्रयभेदसिद्धंतवषानी । पछमबाजकरीरथपाय

कगोधुजगीतपतीनिटमानी ॥ ३४ ॥ राजसिंहासनतेअगलेवलआतमरक्षचहूंदिसधा
री । चक्रकृपानगदावरछीधनुबाणकुठारतुफंगकटारी । वज्रघणीविधसस्त्रसजेगुणचा
रसमानकतेपरिवारी । सेवकरेसमकिंकरकीनिजनाथकिपाससदाहितकारी ॥ ३५ ॥
आतमरक्षकिकेअगलेवलअंतरकीपरसाअभियोगी । तांअगलेइममध्यमकोतिनतेसुर
अंतमकिंकरलोगी । तातिघणेनृतगीतकतूंहलहामविलासदिपावनजोगी । देवसभा
दिवमाहिकहीइमयापढवीविनपुन्ननहोगी ॥ ३६ ॥ मानवचैतकथंभदिपैजिनअंगध
रीवररानसभाही । पुस्तकरत्नविराजतहैविवसायसभासुभथानकमाही । धर्ममहा
तमजानसभादुहुकामविकारकरेसुरनाही । औरतहाअटकाउनहीसुरकामकलोलकरे
चितचाही ॥ ३७ ॥ अश्वअणीगजवाहनकीरथकेधुजकीसुरपायकजोहे । पंचमगो
महपीधुजवाहनभूपणपंचअणीयुतसोहे । षष्ठमगीतकलारसपुरतसातमनाटककेरस
मोहे । सातअणीयुतदेवपतीसभजैनमतीजिनआगमटोहे ॥ ३८ ॥ जेइसलोकतिऊ

रधकेसुरऊरधचालविषेअतिगामी । देवपतालकिवासककीअधुमाहिमहागतिभापत स्वामी । सातअणीविचपंचकेसुरऊरद्धकेवृपभाध्वुजनामी । हेठकिदेवकहेमहिपाध्व जजैनकिबैनमहासुषधामी ॥ ३९ ॥ वितरभौनपतीबहुऊरद्धजोतिकऔधवडीतिर छानी । देवविमानअधोदिसकोबहुऊंपरआपनकेतुलगानी । औधजाचिन्नवनेभवने उतकिष्टअनुत्तरपंचविमानी । दर्वतिषेत्रतिकालतिभावतिभेदअसंपकहेजिनवानी । ॥ ४० ॥ कल्पदुहूंसुरआदिमहीअगलेविवदूसरतीसरहीइम । सातमआठमहीचहु देषतपंचमकल्पपरेचहुकेतिम । पष्ठमिपष्ठकहेअहिमिंदाकिसातमतीनपरैतिनकेजिम हेठसभीकछुऊणअनुत्तरचारकिपंचमकेसभहीषिम ॥ ४१ ॥ वितरजोतिकइंद्रनतेभ वनेश्वरइंद्रवडीथितधारी । तांतिमहाबलप्राक्रमरिद्धविमानपतीवरइंद्रविचारी । चौस ठइंद्रविषेवरऊरधअच्युतइंद्रादिपैगुणभारी । सोजिनराजकिपायलगैकरजोरनमेस्तव छंदसवारी ॥ ४२ ॥ इंद्रसमानकलोकपतीगुरुजीअणलाधिपतीअभिजोगी । अंतर

मध्यमवाहिरवासकउत्तममध्यमनीचमलोगी । उत्तरवैक्रयकोकरुणागमनागमचाक
रठाकरयोगी । यारचनासुरकल्पलगेउपरेत्र्प्रहिमिंदमहासुपभोगी ॥४३॥ एकसुसब्द
अनंतसुकर्मकिअसंपपावनवितरइदू । दोधरणादितिहुंअसुरेंदचहुग्रहतोसतपंचरविं
दू । एकदुत्रयचतुकल्पदुगेदुगपंचसहंसचहुंकल्पिदू । लाषइकोदुतहीचतुपंत्रयये
त्रिकचोदिवअंतअनिंदू ॥ ४४ ॥ वृद्धतिवृद्धअनंतगुणासुषदेवजाघिन्नतोवितरइदा ।
तांतिवडोधरनादितिसोअसुरेंदतिसोग्रहतोरविचंदा । कल्पदुगेदुगअष्टमलौचतुकल्प
सुरात्रकत्रयओहींमदा । चौविजयादितिसोलवसत्तनगासुपभोगनवेनजनिंदा ॥४५॥
चौसठइंद्रअनुत्तरकेसुरश्रीजिनसासनबोधकदेवा । छप्पनगौकुमरीजिनजन्ममहोस्त
वकीकरणीसमसेवा । यापदवीसभपावनहारलहेजियभव्यअभव्यनलेवा । भव्यअ
भव्यदुहूविधकेसुरभाषतसाधुमहाश्रुतिभेवी ॥ ४६ ॥ भव्यजिनागमवाकसुनेचितप्र
णउठेचरचामनलावे । सम्यकबोधलहैनरहोव्रतधारचिंद्रूपाकिजोतापिंडावे । स्वर्ग

विमानविपैसुपभुंजतमानवहोइमहामगधावे। केवलपायभवेशिवपूरणसम्यकवोधत्र्य
भव्वनपावे ॥ ४७ ॥ जीवअभव्वकठोररिदाछलछिद्रमृषामतित्र्यघगवारी । सम्यक
चांदनज्ञानमहारविसैलगुफातमभांतविकारी । आगमत्र्यंगत्र्यनिष्टलगैविपरीतविषे
चितकीव्रतधारी । मोपकदाचलहैनरहैजगहैभवसागरकोत्र्यधकारी ॥ ४८ ॥ भव्य
त्र्यभव्यसमासमदिष्टकिसुल्लभवोधकिदुल्लभवोधी । त्र्यंतभवीविनत्र्यंतभवीपरजापर
जापतिसीतलक्रोधी। देवत्र्यराधिकत्र्यौरविराधिकवैरनिवारकनित्तविरोधी। धर्ममतीत्र्य
घधाहुविधेसुधसाधुवपानतहैश्रुतिसोधी ॥ ४९ ॥ ऊरधमद्यपतालविपेतिरछेबहुबा
रधदीपनिवासे । त्रैविधसोगुणतीनमईसुरतीनहिकालअनंदहुलासे । सम्यकनिश्च
मृषात्रिविधेचितभावमईत्रिदशापरगासे । त्रैपदभाषकत्रैभवनेश्वरवाककहैसुनियोभ्र
मनासे ॥ ५० ॥ केतकसम्यकवंतसुज्ञानधरीजिनमारगरीझरहेहै । साधुसुश्राव
ककोहितवंछकधर्मरुचीफुनधर्मलहेहै । केतकदेवमृपामतिमुछंतभोगविलासविकारच

हेहै । कैसुभसंगतितेसमतागहित्यागमृपामतिधर्मगहेहै ॥ ५१ ॥ एकसदार्थराचित्त सुशांतिअनिछतउत्तमभोगरमंते । एकनकेरितचाहिलगीरतिकामकतूहलफासफसंते । एकगंभीरअलालविचक्षणएकमहाचपलातिहसंते । वंछतवंदनपूजनकोइकदेवनही इहचाहिधरंते ॥ ५२ ॥ एकनहीअतिसीतलकोमलमिष्टसुगंधसुउज्जललेशा । एकनदेवनकेसुभपद्मछवीउरअंतरभावनवेशा । सुंदरतेजसरूपभलीविधकेतनकोचितराजतएशा । तीनभलीसुभभावमईवरणीजिनराजसुधर्मधरेशा ॥ ५३ ॥ एकनदेवनकेघटअंतरदुष्टमतीअधिकारकलेशा । हिंसकभावकठोररिदाछलछिद्रअधर्ममईउपदेशा । रूषरुतप्तमहाकटतीषणषोलहडीफलगेजिमतेशा । नीचकुगंधकुरूपमईअतिकालछवीइमकालकलेशा ॥ ५४ ॥ एकनदेवनकेदुखबुद्दशादुपदायकनीलमईहै । एकनकेउरदंभदशाअघलोभसमेतकपोतथईहै । तीनाहिनीचकहीवरणादिकतेअरुभावतनीचगईहै । मूलमईवरणीप्रभुएकसुएकविषेपटभांतमईहै ॥ ५५ ॥ वर्षहजारकहीदस

आयुजघिन्नवडीतवतेतिसमसागर । मध्यविषेवहुभेदअसंषकहैजगदीससुज्ञानउजागर
आयुवडीतिमहीद्युतिशक्तिगतीबलप्राक्रमऔधगुणागर । वैक्रयवुद्धविचक्षणतासुषआ
दरारिद्धलषोमतिआगर ॥ ५६ ॥ आयुवडीगुणतेअधिकेइकएकवडेपदवीगुरुपाई ।
अंतमआयुलईसुरतेइकनूतनरिद्धलईअधिकाई । सम्यकधर्मकरीअधिकेपरिलोकल
गैजिहधर्मसपाई । सर्वगुणेअधिकेसुरउत्तमहैसरवारथसिद्धसहाई ॥ ५७ ॥ इंद्रयपंच
त्रियोगमईदसप्राणमईत्रयज्ञानत्रिदंसी । चारकपायधरीषटलेसकिएकसंठाणसमोच
उरंसी । दूसरकलपलगैकरसात्ततनूतिनऊपरघाटघटंसी । ओडकहाथतिघाटअनुत्तर
महिजिणंदकिवैननिसंसी ॥ ५८ ॥ भूषलगैजबदेवनकोतवहीसुभगंधमईरसवाले ।
उत्तमदर्वकिबासनलैकरतृपतिकरैचितरूपरसाले । आयुजघिन्नकुएकादिनंतरवर्षसहं
सकिसागरनाले । भूषकिअंतरभेदघणीविधजैनाकिवैनमहाभ्रमटाले ॥ ५९ ॥ उत्तम
कोसुभभक्षसुधाफलमिष्टभलेपकवानसमेवे । नीचकरैमदमासकु

भीसुरलेवे । उत्तमनीचदुहूंविधकेकहिलेतअहारगुणीसुधदेवे । सर्व्वविकारमिटेसुरनि
श्चलसोप्रभुसिद्धसदाकविसेवे ॥ ६० ॥ चाहिनहीगमनागमनेकहुलब्धनफोडनतुछ
कपाई । कामविकारकुनामनहीजिहराडविवादउपाधनकाई । साथसंयोगवियोगन
हीजिहसीतलभावसदाहरपाई । पोहलहीरविस्रादिग्रनूपममध्यरमैग्रहिमिदसुहाई
॥ ६१ ॥ जोअतितृप्तिभएनहिचाहतभोजनतोविषयादिग्रचाही । तुष्टमहासुखमैपर
मोदलहैग्रहिमिदरहैनिजठाही । चाकरठाकरकोइनहीभयवर्जसुछंदकहैगुणग्राही ।
द्वादसकल्पकिऊपरराजतयारचणावरणीशिवराही ॥ ६२ ॥ पंचअनुत्तरमाहिसदा
थिरसम्यकदृष्टमहासुषकारी । हेठनचेपुरमाहिदुधासुरसम्यकवंतमृपामतिधारी ।
जोजिहदृष्टसदाथिरसोहनामिश्रदशातिहनाहिउचारी । यारचनाअहिमिंदपदेजिन
राजकहीगणधारविथारी ॥ ६३ ॥ जोअहिमिंदतणेचितमाहिउठेजवप्रश्णतदुत्तरभा
वे । जोजिनकेवलिकोधरध्यानरिदेविचप्रश्णकरेमनलावे । केवलिधाररिदेविचउत्तरदे

॥ ६४ ॥
तसुज्ञानकरीसुरपावे । आवनजावनरीतनहीनिजठामरहैचितमैंगुणगावे ॥ ६४ ॥
देवविमानअनुत्तरकेचितउत्तमसम्यकऔधसुज्ञाने । दर्वअनुत्तरभावअनुत्तरआगमबो
धअनुत्तरध्याने । पुन्नअनूपसभीसुरऊपरआगममैनवजन्मसुथाने । सत्तसुभावदया
लरचेशिवसाधिकहैजिनवैनप्रमाने ॥ ६५ ॥ सिद्धभएसभअर्थजहासरवारथसिद्ध
विमानकहावे । आयुवडीउतकिष्ठतथासुपसर्वसिरोमणिदेवसुभावे । एकलहैभवमा
नवकोवहुरिद्धलहैफुनसंयमपावे । केवलज्ञानलहीशिवपायकिसिद्धभएजगफेरनआ
वे ॥ ६६ ॥ पंचमिसंपअसंषचहुगुणसंषकहेअहिमिंदनवांके । तांतिअसंषगुणेकल
पेतियसंपगुणीविवकलपसुरांके । तांतिअसंषगुणेभवनेतियसंषगुणीसुअसंपबनाके ।
वितरनीसुरजोतिकजोतिकनीगुणसंषतिसंषसभाके ॥ ६७ ॥ जानतहैइमकालसमा
घटक्रांतविमानसुभूषणकेरी । कल्पतरूअजकोकुमलावतदेषलपीविपरीतघणेरी ।
आपनतेजसलेसघटीलषऔधघरीसमझेइममेरी । यादिवतेथितपूरिभईअवकर्ममहा

बलवंतकिफेरी ॥६८॥ तारिकुरूपचलेतिहुकारणवैक्रयदेवकरैजबकोई। मैथुनभोगाकि
भोगनतेअरुठामतिठामचलेजबहोई। देवकरैविजुलीदुतिगर्जतवैक्रयमैथुनमैंबलठोई।
साधुमहातपकोअपनाबलप्राक्रमारिद्धदिषावनसोई ॥ ६९ ॥ आवतहैंइतिकल्पलगै
जिनराजमहोछाविकारणदेवा । वंदनपूजनपूछनकोमुनिकेतपकीमहिमालषसेवा ।
मोहकरीलपसाथपुरातनवैरकरीरिसरूपधरेवा । मंत्रअराधनध्यानक्रयानरलोकवि
पैसुरप्रादुभवेवा ॥ ७० ॥ देवभएततकालचहैंनरलोकमिआवनआयनसाके । जेहु
तिलोकपदारथमुर्छतकारणतीनसुनेगुरुवांके । प्रेमभयोउतलोकविपैहितहद्दगयोइतते
चितचांके । जाववहीकुछकालरहाइमचिंततकालगएबहुतांके ॥ ७१ ॥ देवसमूहसु
साथभयोललनाजनमाहिमहारसपाई । मानवलोककिकारजकोचितचाहिमिटीथिर
तातिहआई । घोरकुगंधअपावनहैनरलोकइसीलषचाहिमिटाई । याविधआवतना
हिंइहासुरकारणतीनसुनोचितलाई ॥ ७२ ॥ जोहुयमुर्छतआवनचाहतसोतिहकारण

निश्चितश्रावे । जासप्रसादलहेसुरसंपातितेगुरुपूजनबंदनधावे । घोरतपीमुनिदुःकर कारकतेमुनिकेगुनश्रायदिपावे । मोहिरह्योजिसमातापितासुतनारिजनादिकमैहित लावे ॥७३॥ तीरथनाथकिजन्मसमैरिषहोवनमैश्ररकेवलपाए । लोकउद्योतप्रमोदमहासुरसंगमहासिंगारसुहाए । देवकरैसिंहनादकतूहलहासविलासहुलासवढाए । चैतकवृक्षचलेइहिलक्षणचित्रमहारसस्वर्गदिपाए ॥ ७४ ॥ श्रासनइंद्रनकेजुचलेतव श्रौधधरीतिहितइमजाने । तीरथनाथमहोछवहैतिहजायकरोजिनभक्तिसुथाने । श्रासनछाडनमैविधसोप्रभुसन्मुपहोइवहूसुभध्याने । फेरसिंहासनश्रायसजेनरलोकामिश्रावनवैक्रयठाने ॥ ७५ ॥ पायकस्वामिवुलायकहैवरघंटणकोघणघोरकरावो । होयतियारसुरेलालिनादिकारिद्धसमेतप्रभूढिगश्रावो । तीरथनाथमहोछविहैइहिवातसुस्वर्गविपेप्रगटावो । नाथकिसाथचलोधरभक्तिमहानिजरासुभवंधनधावो ॥ ७६ ॥ केचलोइजिनभक्तिधरीचितकेइमहोछवदेषणकारण ॥ वंधनपूजनदंसणदेपणश्रद्भुत

स्वामिकुरूपनिहारण । कर्ममहानिजरासमझीपरलोकमहाफलजन्मसुधारण ॥ चाह
नहीजुतदेवदसोदिसतेसमकालचलेसुभचारण ॥ ७७ ॥ सर्वसुरिंद्रसमागमदेपणना
टकगीतवजंत्रउमाही । अद्भुतवैक्रयरूपकतूहलहासविलासविनोदउछाही । नाथकि
साथसुमीतकिनेहतेकेइलपीनिजराचितचाही । इंद्रनकीसिरआनधरीइमदेवअसंपस
मागमठाही ॥ ७८ ॥ केइहसेगुटकेउछलेसिंहनादकरेगरजेघणघोरे । केइभिडेभभ
केदवडेबहुबोलकरेउमगेचहुओरे । एकसुएकमिलेमुसकावतहासविलासविपेचितजो
रे । याविधश्रीजिनराजमहोछविमाहिरमैसुरवृंदकरोरे ॥ ७९ ॥ यानिसमातिकिकु
क्षवसैप्रभुदेपउठीसुपनेदसचारो । सोमसुलीलतपुष्पनकेतुपतीउपआयसुनायविथा
रो । कुंजरगोहरिश्रीअजसूरससीधुजकुंभसरोवरसारो । पीरनिधीमणिरासविमान
किभौनसिपाविनधूमउदारो ॥ ८० ॥ जाजननीजठरेप्रभुआवतऔधधरीसुभशक्ति
लहेहै । भक्तिकरीप्रणमैविगसैविंतरादिकुवेरबुलायकहेहै । भूमिनिधानपुरानमहा

धनश्रीजिनमंदरमेलचेहेहै । सोतिरजंभककोकहिकोषितसुद्धकरैमनमोदलहेहै ॥८१॥
दोहिलकारमनोरथमातकुपूरणहोतप्रमोदधरेही । जोबिनदेवनपूरणहोततवेसुरश्रा
यकिसिद्धकरेही । भोजनपानसुगंधभलेकुसमादिप्रभूग्रहमाहिभरेही । रुत्तसभीसम
हीसुषदायकगर्भकुपोपणदोषहरेही ॥ ८२ ॥ श्राठहिश्राठश्रधोदिसऊरधपूरबदक्ष
णपछमउत्तर । मध्यकिचारचहूविदिसाषतुछप्पनगोकुमरीभवसुत्तर । श्रीजिनजन्म
भएधुरश्रावनवंदनमातसमेतसुपुत्तर । श्रावनरीतसभाकरकारजगावनगीतश्रनूपश्र
नुत्तर ॥ ८३ ॥ तीरथनाथाकिजन्मभएमघवाघरश्रायसुमेरलियावे । सर्वसुरिंद्रामिले
तिहमज्जनश्रादिकरायजिनंदादिपावे । सर्वविधेकरवंदनपूजननूतनस्तोत्ररचेगुणगावे
फेरघरेपहुचायसचीपतिसर्वसुरिंद्रनदीसरजावे ॥ ८४ ॥ आपनश्रापनथानकश्रीजि
नमंदरश्रायाकिबिंवकुबंदन । पूजनभक्तिधरीरचनाटकगीतसुछंदप्रमादनिकंदन । हो
तमहासुभकर्मकुबंधनतत्तामिटेफरसेजिमचंदन । श्रष्टदिनालगमेलमहाकरश्रापनथा

नकजायसुनंदन ॥ ८५ ॥ श्रीजिनराजवसेग्रहवासमिउत्तमसम्यकबोधधरेही । कंज
अलेपतथाप्रभुराजतदेवसभेप्रभुसेवकरेही । देसाविदेसाकिदर्वअमोलकश्रीजिनमं
दरमाहिभरेही । तीरथवर्त्तनकाललपीसुरबोधकआयनमंतषरेही ॥ ८६ ॥ आठहि
लापसमेतकरोरसुनैयनकोदिनएकदतारे । सोइकवर्षदियोजिनहीनरभव्यलहैजिह
पुन्नउदारे । श्रीमघवादिसुरिंद्रकरेतिहकारजकीरतपुन्नपसारे । चारहिजातिकिदे
वकरेकुलभक्तिविषेमनउछवभारे ॥ ८७ ॥ छाडअगारसजेअणगारपदेतवदेवपतीस
भआवन । मज्जनआदिसभीविधसोकरभूपणवस्त्रसुगंधलगावन । रत्नमईशिवकासु
सिंहासणनाथविठायकिइंद्रउठावन । छाडपुरीवनमारगमेचलवृक्षअशोककिहेठठ
रावन ॥ ८८ ॥ तौउतरेशिवकातिप्रभुपटभूषणत्यागकिलोचकरेही । इंद्रगहेकच
पीरससुंद्रमिपायणभक्तिकीरीतधरेही । श्रीजिनधारमहाव्रतसंयमशांतदयारसपूर
भरेही । केतकभव्यविरागचढेतिहसाथशिवोतमपंथपरेही ॥ ८९ ॥ मोदतदेवकरें

प्रभुसेवमुखोजयकारमहारिवहोई । रूपअनूपकुकोइकरेजसत्यागविरागअसंगकु
कोई । शांतदयालअगाधमतीप्रभुमारगमोषचलावतसोई । देवकरैजसमानवसंघस
मेतरमैप्रभुसोमनढोई ॥ १० ॥ सर्वसुरिंदनरिंदजनादिमहामहिमाकरपायलगेहे ॥
इंद्रनदीसरजायकरेदिनआठमहोछवप्रेमपगेहैं । फेरसुथानकजायरमेनिजभोगवि
लासहुलासजगेहैं । जोजिनरायकिसेवकरैजियठागस्तपातिनकोंनठगेहैं ॥ ११ ॥
धारतपीप्रभुपारणकेदिनभिक्षलहैनरनारिदतारो । दुंदभिनादकरैविवधाजयकारअ
होइतदानउदारो । द्वादसअर्द्धकरोरसुनैयनकीवरपानभवादलसारो । नीरसुगंधप्र
सूनफलादिकवष्टकरैचितभक्तिअपारो ॥ १२ ॥ केवलज्ञानप्रकासभयोसभइद्रमहा
महिमाहितआए । होइविनीतलगेचरणीकरजोरटिकेचितभक्तिभराए । वैनपयूपसु
धर्मकथासुखदायकश्रीजिनराजसुनाए । जीवअजीवपदारथानिश्चितलोकअलोकाकि
भेदवताए ॥ १३ ॥ पृष्णकरैसुरमानवभव्यप्रभूमुपउत्तरपायअनंदे । स्तोत्रपढेवहू

छंदरचेरचनाटकगीतप्रभूपगवंदे । अष्टमदीपनदीस्वरजायमहोछवमांझप्रमादिनि
कंदे । फेरसुथानकजायरमैंनिजपुन्नप्रभावरमंतसुछंदे ॥ ९४ ॥ ठामतिठामविहार
करैप्रभुतौसुरभक्तिइसीविधधारे । श्रीजिनदोपगधारातिहातिहहेठजिमीसमदेववि
थारे । कंटकहेठअणीजुकरैजयकारमहारिववृंदउचारे । संपनघंटनकीघणघोरवजै
नरसिंहसनादनगारे ॥ ९५ ॥ तीरथनाथकिकेवलिधाराकिदुकरकाराकिदंसणकारण ।
वंदनपूजनपुछनकेहितआवनदेवसदोषनिवारण । एककठेबहुसाथलिएकवहूपरवार
सजीछविधारण । जाचंनवोधनसाधुसुश्रावकसंयमकोफलारिद्धदिपावण ॥ ९६ ॥ कर्म
निवारसरीरकुत्यागभएनिरवाणप्रभूशिवमाही । आसनइंद्रनकेजुचलेसभआवनतो
जिनकेढिगताही । चंदनमज्जनरीतकरावनलेपनवस्त्रउढावनवाही । वर्जतहासविनो
दवियोगथीनीरझरैइमरूपउछाही ॥ ९७ ॥ तेतनकोशिवकापरचाढकिचंदनकीचित
कापरल्यावे । इंद्रकिवैनसुअग्निजलावतवायुकुमारसुवायुलगावे । मेघकुमारसुशात

करैमघवादिकअंगचुनेसुभभावे । थूभवनायनदीसरजायमहोछवपूरसभीघरजावे ॥ ९८ ॥ दोहरा ॥ मानवचैतकथंभमैछीकेधरेजिणंग । अर्चसुगंधसुधूपदेनमेरमेनि जरंग ॥ ९९ ॥ मालती छंद ॥ सकलदुषविनासी पारसंसारवासी अचलअज अरूपी कर्मवरजीअनूपी ॥ १०० ॥ सकलजगतस्वामी सर्वलोकाग्रठामी जयजय जयसिधासेवतेइंद्रवुंद्रा ॥ १०१ ॥ दोहरा ॥ वडेदेवताजगतमे तांतैउत्तमइंद । सो जाकीसेवाकरै प्रणमोदेवजिणंद ॥ १०२ ॥ इहिविधरचणादेवकीकहीवुद्धअणुसार । अबवरणोकछुऔरभीसूनोभवकनरनारि ॥ १०३ ॥ भिन्नभिन्नवरननकरोजातजात कोरूप । यातेबाढेज्ञानबलश्रीजिनवैनअनूप ॥ १०४ ॥ रत्नप्रभाइकपांथडेतेअंतर निवास । देवअसंषभवनपती मणिउद्योतपरगास ॥ १०५ ॥ ओडकदक्षणासिंध इक उत्तरझझेरीदेव । साढेत्रयपलत्रियाथितसाढेचारतिहेव ॥ १०६ ॥ शंकरछंद ॥ तनकृष्णमणिछविरक्तपटधरमुकटमणिसुभचिह्न । दसवर्षसहंसजघिन्नथितउतकृष्ट

साधकसिंध। चौसाठलापसुभवनमणिमयवस्तअसुरकुमार । दक्षणदिसाउत्तरदिसा
दुविधेअसंपउच्चार ॥ १०७ ॥ सुरतावतीसतेतीसउत्तमअग्रमहिषीपंच । चतुर्लोक
पालत्रिपर्षदायुतप्रवलसुकृतसंच । वहुदेवसहंससमानकीयुतदिपतचमरवलिंद ।
अणकाधिपतियुतसातअणकाअसुरपातिविवइंद ॥ १०८ ॥ वरभवनचारअसित्तलापे
वस्तनागकुमार । तनवर्णपांडररतनवतसुभवस्त्रनीलेधार । सिरमुकटफणिवरचिहन
मयवरदामभूषणवंत । धरणेंद्रभूतानंदद्विवदिसइंद्रअतिसोभंत ॥ १०९ ॥ सुरला
पवहत्तरसुभवनेश्वरस्वर्णकुमार । सुंदरसुकंचणक्रांततनसिरमुकटगरुडाकार । सित
चीरभूषणगंधउत्तमइंद्रवेणुदेव । वरवेणुदालीदूसरोजिहकरतसुरवहुसेव ॥ ११० ॥
पटसत्तलापसुभवनवासीरक्तवर्णसरीर। विद्युतकुमारसुवज्रमूरतमुकटनीलेचीर। सर
वंगभूषणमालधारीइंद्रश्रीहरकंत । उत्तरदिसाहरसिषविराजतपुन्नफलभोगंत १११
वरभवनपटसत्तरसुलापेरमतअन्नसुमार । सुभरक्तिमणिछवितनाविराजतवस्त्रनीलेधार

सिरमुकटकलससुलछणीभूषणसुगंधसुमाल । तिहअग्निशिपअरुअग्रमानवइंद्ररूप
रसाल ॥ ११२ ॥ सुरथंददीपकुमारतनछविरक्तरत्नसमान । सुभनीलवर्णसुचीरसुंद
रमुकटसिंहवपान । वरभवनलाषछहत्तरेवसरमणाचितउलसंत । विवइंद्रपूरणअरुवि
शेष्टौनामकथितासिद्धंत ॥ ११३ ॥ इमदेवउद्धतकुमारपांडुरवर्णतनसुभकंत । सिरतु
रंगचिहनसुमुकटसुंदरनीलचीरसुहंत । वरभवनसुंदरपष्टसत्तरलापमाहिनिवास ।
जलकंतजलप्रभुइंद्रविवसुषभोगपुन्नप्रगास ॥ ११४ ॥ सुरहेमवर्णसुचीरधवलेमौल
गजवरकंत । वासीछहत्तरलाषभवनेविषेसुपभोगंत। इसभांतादिशाकुमारत्रिदसासुर
पतिगुणवृंद । वरअमितगतदक्षणादिशामिनवाहनोत्तरइंद ॥११५॥तननीलवर्णसुक्रां
तदीपतदेवपवनकुमार । वहुरंगचीरसुगंधभूपणमुकटमकराकार । षटनवतिलाषसुभ
वनवासीइद्रदोवलवंत । वेलंबइंद्रतथाप्रभंजननामकथितासिद्धंत ॥ ११६ ॥ वरभव
नलापछहत्तरेउलसंतमेघसुमार । तनहेमछविसितचीरमुकटेवर्द्धमानउचार । सुभना

मघोपसुरिंददक्षणउत्तरेफुनजान । श्रीमहाघोपधनिंदराजतपुन्नारिद्धप्रधान ॥११७॥ उरगादिनवनीकायसुरथितदुविधओडकहोइ । दक्षणदिशापलडेडकीदेसुन्नउत्तर दोइ । पलपौनअरुदेसूनपलदेवीमहाथितजान । सभभवनवासीदससहंसजघन्नवर्प प्रमान ॥ ११८ ॥ दसजातविंशतइंद्रअतिबलमुकटकुंडलहार । सर्वांगभूषणमाल अवरजोततेजउदार । नितमुदतहासविलासतरुणीसहितचितउलसंत । जिनदेवबं दनपूजनेअतिभक्तिरूपधरंत ॥ ११९ ॥ मंत्रीसमानीअग्रमाहिपीसैनपातियुतसैन । चतुलोकपालत्रिपर्षदायुतरक्षसुरसुपदैन । सजचारयानविमानमणिमयआयबंदन देव । जैजैजिनेश्वरदेवकीजिहकरतसुरबहुसेव ॥ १२० ॥ दोहरा ॥ जातजातदक्ष णथर्कीउत्तरघटलपचार । संपअसंपप्रमाणमितजोजनभवनविथार ॥ १२१ ॥ इति भवनपतीसंपूर्णम् ॥ अथ वाणव्यंतरवर्णनं दोहरा ॥ रत्नप्रभामणिकंड मैसैसैजोजनत्याग । हेठउपरविचपेविपेविंतरसुरवडभाग ॥ १२२ ॥ सवैया छंद ॥

चिहनपिशाचकदमवृक्षकेरोसूलवृक्षकोभूतिधरंत । यक्षणगोधपटरापसनोकिंन्नरवृ
क्षत्रशोकसुहंत । चंपककिंपुरुषाकेमुकटेनागमहोरगजातादिपंत । गंधर्वाकेतूंबरतरु
कोविंत्तरलक्षणकथतासिद्धत ॥ १२३ ॥ यक्षापिशाचभूतगंधर्वाशरपशामतनछाविसो
हंत । राक्षसाकिंपुरुषाधवलाभाकिंन्नरनीलवर्णडलकंत । व्यंतरभांतभांतवरणोकेची
रसुगंधसुमालधरत। देसदेसकेवसमनोहररहासकतूहलचितहरपंत ॥ १२४ ॥ आध
पिशाचादिकव्यंतरयहिआणपाणआदिकवसहोर । सोलसजातवतीसइंद्रतिहइमप
रिवारएकइकऔर । अग्रमहेषीचारचारसहंससमानपरषदातीन । सोलसहंससरीर
रक्षसुरअणकासैनपतीपरवीन ॥ १२५ ॥ कालइंद्रदक्षणपिशाचकोमहाकालउत्तर
दिसजान । भद्रसुदिसदक्षणसरूपजीप्रतिरूपेंद्रदूसरोमान । पूरनभद्रयषपतिइति
दिसमानभद्रदिसउत्रपछान। भीमइंद्रराक्षसकुलभूपणमहाभीमदूजोपहिचान १२६
किंन्नरइंद्राकिंन्नरेराजताकिंपुरुषोदूजोसुभकंत । किंपुरुषोमैवरसुपुरसजिममहापुरुष

भाषेअरहंत । अतिकायंदमायकायोविवहैभुजंगमैतेजधरंत । गीतरतीअरुगीतजसा
विवगंधरवेंद्रसुगीतरमंत ॥ १२७ ॥ सन्नहेकसनमानीदोनोआनपानपतिइंद्रदिपंत ।
पानपतीधातादिसदक्षणउत्तरदिसाविधाताकंत । रिपइंद्ररिपपालदूसरोरिषवादिक
पतिकथातिसिद्धंत । ईश्वरइंद्रतथैवमहीश्वरभूतवादिकाइंद्रसुहंत ॥ १२८ ॥ कंदकना
थसुवच्छइंद्रऔअरुविशालदुतियोबलवान । महाकंदकाम्हाहासजिमसुंदरमहासुं
दरगुणषान । स्वेतइंद्रअरुमहास्वेतोविवकोहिंडकरेइंद्रपहिचान । पतगजातपतिपत
गनामकहुपतगरचेंदुदूसरोमान ॥ १२९ ॥ दोहरा ॥ ओडकसुरकीएकपलदेवीकी
पलआध । दससहंसवरुषायुलघुविंतरगतिवचसाध ॥ १३० ॥ भवनपतीविंतर
कहैचहुलेशामैदेव । कृष्णानीलकपोतकीतेजसधरचहुभेव ॥ १३१ ॥ परमाधरमी
पंचदसजातुअसुरमैक्रूर । दमैनरकमैनारकीरमैरुद्ररसपूर ॥ १३२ ॥ अंबेआंबरसे
कहेस्यामेसवलेजात । रुद्रविरुद्देकालकहुमहाकालविष्यात ॥ १३३ ॥ आसिपतेधनु

धरकहैवालूकुंभीजान । बेतरणीषरसुरकहेमहाघोषपहिचान ॥ १३४ ॥ दसविध
विंतरजातमैंतिरजंभकसुरहोइ । मानेआनकुवेरकीअधिष्टातालोइ ॥ १३५ ॥ अान
पानफलफूलकेलैनसैनवथ्थेव । वीजवीयुतिरजंभकासभवथ्थाधरएव॥१३६॥ वसैसैल
विजसार्द्धपरचित्तविचित्तेवास । जमकसमककंचणागिरीसदाप्रमोदहुलास ॥ १३७ ॥
गीतनृतादिकतूंहलेहासविलाससुभाव । सुषीवेपबहुसुषकरैदुपीदुषावनचाव॥१३८॥
एकपलोपमथितलगैभोगेभोगसुछद । निकटषेत्रचौसंधमैंफिरैसुपायअनंद ॥१३९॥
तिरछेलोकअसंपपुरबनरूपीविगसंत । देवलोकावितरतणेभापेश्रीभगवंत ॥ १४० ॥
भवनेबनगतियुगलीयाअंतरदीपापाय । तथाअसंन्तीतिरयंचईओडकातिहलगजाय
॥ १४१ ॥ होइअकामीनिर्जराभूपात्रिषादिकपाय । स्नानादिकनहिंबिपेसुषाबिंतरलघु
थितथाय ॥ १४२ ॥ परवसवंधनआदिदुषमरैकटाईअंग । सूलीफांसीडिगनविषडू
बनअग्निप्रसंग ॥ १४३ ॥ औरघणी विधकष्टसोमरैअंतसुभभाव ॥ आयुवर्षद्वादस

सहंसठ्यंतरकेसुपग्राव ॥ १४४ ॥ जेंउपसंतकषायकेग्रलपारंभीजीव । ग्रलपाविना
दिकगुणसहितरहेप्रसन्नसदीव ॥ १४५ ॥ मातपिताकेवचनवससेवेग्रतिपितमाय ।
ग्रायुवर्षचौदससहंसठ्यंतरगतिसुषपाय ॥ १४६ ॥ छुद्दरविधवाविहरनीगुरुजनरो
कीतीय । सुपसिंगारग्रादिकरहितग्रलपारंभधरीय ॥ १४७ ॥ घृतदधषीरादिकस
रसतजीग्रल्पजिहचाह । ठ्यंतरनीहोवेसहंसचौसठकेथितमाहि ॥ १४८ ॥ ग्रलपा
रंभीरसतजीकंदमूलफलफूल । जलसिवालभक्षीतपीज्ञानरहितमगभूल ॥ १४९ ॥
नानाविधकेकष्टकरलहैदेवगतिठाहि । भवनपतीविंतरविपेग्रोडकजोतिकमाहि १५०
फलग्रकामनिर्जरातणेपांचिंद्रीतिरयंच । भवनपतीविंतरतणेभोगेसुपविधपंच ॥ १५१ ॥
द्वात्रैसतविंतरतणेइंद्रसहितपरिवार । सेवेश्रीजिनदेवकोमनवचतनसुचधार ॥ १५२ ॥
ससिरवियहहरिपतारकाचरथिरदसविधहोइ । मनुजपेत्रसंक्षातचरपरेग्रमितथिरजोइ
॥ १५३ ॥ इकससिरविपरिवारहैग्रहअठासीदेव । रिषग्रठाईतारकाकोडाकोडीएव

॥ १५४ ॥ सहसछिहाठनवसयापणहत्तरपरमान इकसौवत्तीगुणसभीचरचंदादिक
जान ॥ १५५ ॥ दोचतुबारबियालफुनविवसत्तरचंद्रादि । जंबूपुहकरअर्द्धलगदीवो
दधीअनादि ॥ १५६ ॥ इकसुमेरकेपुव्वादिसदुतियोपछमहोइ । इमदक्षणउत्तराफिरे
चरजोतिकगुणदोइ ॥ १५७ ॥ इकगणकेविवभागहैनिश्चिरदिनचररूप । इमविव
दिसनिसहीरहैविवदिसदिनरविभूप ॥ १५७ ॥ इसपेत्रेतेऊंचइमसहाजोजनेजान ।
तारेसगसैनवततेनवसयलगपहिचान ॥ १५८ ॥ रविअठसैससियुतिअसीरिपतांते
युतचार । भरनीनीचेसवनतेस्वातीऊपरवार ॥ १५९॥ अभिजितअंतरसबनतेसभले
बाहरमूल । मूलाद्रांतेअयणगतिदक्षणोत्रविवतूल ॥ १६० ॥ उत्राषाडाश्रनकेसंधे
अभिजितहोइ । राजासर्वनक्षत्रकोबहुफलदायकलोय ॥ १६१ ॥ रिपतेवुद्धचहुजो
जनेतांतेतिहुतिहुचार । सितगुरुकुजशनिइमचतुरजोतिकचक्रबिथार ॥ १६२ ॥ वार
हरासनक्षत्रछैनवपदकीइकरास । चारचारपदरिक्षकेपदनवांसपरगास । १६३ ॥

तीसत्रंसइकरासकेपदत्रिभागयुततीन । त्रयदसत्रंसत्रिभागइकरिपलेपापरवीन ॥
॥ १६४ ॥ रवितेससिकोत्रंतरोद्वादसत्रंसकिताय । सितएकमचौवीसलगदुतिया
त्रंतलपाय ॥ १६५ ॥ थित २ द्वादसत्रंसइमपूर्णमलौपटरास । रवितेससिससिते
रवीसमपापंतपरगास ॥ १६६ ॥ कृष्णपक्षतातेपरैतिथतिथद्वादसत्रंस । सूरचंद्रइक
त्रंसमैअंतत्रमावसवंस ॥ १६७ ॥ पटपटत्रंसकेकर्णइकरवितेससिलगधार । धुर
केतुथिरतापरैसातसातवसुवार ॥ १६८ ॥ ववबालवकौरवकह्योतेतलगरवनजेव ।
विष्टीचरतातेपरेतीनकर्णथिरएव ॥१६९॥ शकुनचतुष्पदनागकहुछप्पनचरथिरचार ।
साठकर्णथिततीसकेद्वादस रासमझार ॥ १७० ॥ नवजमहूरतकुछत्रधिकसातवीस
दिनमान । सभनक्षत्रकोफरससिफिरत्रावेउसथान ॥ १७१ ॥ त्रयसेपणसठदि
नगएछासठबेविरतंत । द्वादसरासीभुक्तरविफिरउसथानवदंत ॥ १७२ ॥ वामाय
णरविमंडलेसौचउरासीयुक्त । इकसौतेरासीदिवसउत्रायणइमभुक्त ॥ १७३ ॥ पण

विजयविस्यसेनोकहाश्रीजिनपरमानंद ॥ १९४ ॥ वायावच्चेउवसमेईशानितेटेव ।
भावअप्यचेसमणकोवर्णवीसमोदेव ॥ १९५ ॥ सत्तसरंभगंधवेत्रग्निविसायणलाम ।
त्रातवत्राधवतंद्ववभूमहरिसभोनाम ॥१९६॥ फुनसबठसिद्धोकह्योराषसत्रंतमहोइ ।
यथानामफलतिमतिसोजानलहोसभकोइ ॥ १९७ ॥ दवंछाउगुणवीसदसछयचतु
त्रयढईय दोयद्रडसवायकमेदसघडीयालगथीय ॥ १९८ ॥ पौनेबाराघडीतवत्रा
धीचौदसहोइ । पायछायसतरेघडीदिनगतिरहितेजोइ ॥ १९९ ॥ वाहकसोलेसह
ससुरहयगयशोहररूप । ससिरविइंद्रविमानकेभूषणवस्त्रत्रनूप ॥ २०० ॥ त्रठग्रह
केचतुरिक्षकेतारेदोइहजार । चरविमानकेसाथहीसोभतहपंत्रपार ॥ २०१ ॥ तारे
वाहकशीघ्रगतिरिषतांतेगातिमंद । रिपतेग्रहग्रहतेरवीमंदगतीत्रातिचद ॥ २०२ ॥
तारेसुरतेरिक्षकीरिपतेग्रहकीदृद्ध । ग्रहतेरविकीदृद्धत्रातिचंदत्रधिकगुणारिद्ध ॥२०३॥
जोजनकेइकसठीयेभागछप्पनत्राडित्राल । ससिरविलंभविपंभमिलअर्धऊचसंभाल

॥ २०४ ॥ ग्रहकेजोजनआधमितारिपांपाउतआध । तारेलंभविपंभमितअर्धऊचवच
साध ॥ २०५ ॥ अर्धकविठअकारसमतारेलघुसासिद्दध । मध्यऔरवहुवर्णमयतांमे
सुरयुतारिध ॥ २०६ ॥ लघुविमानतारेतणेवडोचंदगुणवृद्ध । मध्यसर्ववहुवर्णमयता
मेसुरयुतरिद्ध ॥ २०७ ॥ वपुसुंदरपटभूषणेमालसुगंधसुहाय । तेजसलेसीहेमछवि
मुकटनाममेथाय ॥ २०८ ॥ अष्टभागपलअल्पाथितवडीएकपलसोइ । वर्षसहंसअ
रुलापयुतसूरचंदकीहोइ ॥ २०९ ॥ श्रावकविरतविराधकीजोतिकसुरलगजाय ।
तापसतांमेलहैगतिभाषेश्रीजिनराय । २१० ॥ चउपटराणीचउसहससुरसमानगुन
चार । आतमरखत्रपर्षदोसातअणीपरवार ॥ २११ ॥ चंदसूरपरिवारयुतआयनिवा
वेसीस । भक्तिकरैजगदासकीजयजयजयजगदीस ॥ २१२ ॥ इति जोतिकरचणा
संपूर्णम् ॥ दोहरा ॥ कलपोतपतिदेवगणसाहितविमानीइंद । दसहीनिजपरिवार
युतपूजेआयजिनंद ॥ २१३ ॥ गीयाछंद ॥ इसभूमिथीविनसंषजोजनऊचत्रयदस

भूमिही । विवकलपलाषविमानवत्तीअरुअठाइंछविलही । पणवणमणिमयऊचपण
सयजोजनेऊपरधुजा । जिहदेवतेजसलेसधरसुपभोगभोगेविनरुजा ॥ २१४॥ तिह
अपरगहैयादेवियाकेहैविमानदुहूंपुरे । पटचारलाषसुरमैकलपैप्रथमकीविपमेफुरे ॥
इतरेईशानवतीरमेथितलघुवतीविवधुरतणे । त्रितीएदशीतुरियेसपणदसचडतपलद
सदसभणे ॥ २१५ ॥ प्रथमेसुधर्मकलपदीपतमुकटमृगचिहनीसुरा । थितपलजाधि
कविवलिंगकीसुरसिंधओडकदोधरा । त्रियास्वामिवंतीसपतपलथितइतरपलपंचा
सलौ । तिहसक्रइंद्रसुरिद्धसंयुतपुन्नभोगेअतिभलौ ॥ २१६ ॥ सुभहेमक्रातसरीरसुं
दरमुकटकुंडलजगमगै । उरहारभूपणसर्वअंगेवस्त्रउज्जलछविलगै । वाहिनसुएराव
तिकरीसुरवज्रआयुद्धधारणे । जिनराजभक्तासेवकरताधर्मकाजसवारणे ॥ २१७ ॥
तेतीससुरगुरुमित्रजिहचौरासहंससमानकी । वसत्रअग्रमहिषीपरषदात्रयसातअणका
आनकी । त्रयलाषछत्तीसहंससुरतनरक्षजाकेजानीए । चतुलोकपालसुभोगभुंजत

सक्रइंद्रवपानीए ॥ २१८॥ जिहलगलहैगतिहिमवयश्ररुइएवयकेजुगलीया । जिह
लगविराधिकसाधव्रतजिहलगभवेकंदर्प्यिया । गतिसाधुश्रावककीकहीजघिन्नजिह
सम्मथोकहे । जिहलगलहेजियागभैथीगतिसोसुधर्मालोकहै ॥ २१९ ॥ ईशानक
ल्पजघिन्नथितपलतेश्रधिकदेवीसुरे । दोसिंधुसाधिकदेवकीश्रोडककहीजगदीश्वरे नव
पलतथापचवन्नपलश्रोडकदेवीकीकही । सुभमहिषमूरतचिहनमुकटेइंद्रईशानोसही
॥२२०॥वरवृषभवाहनशूलपानीउत्तराधिपसुरपती । तनछविसुभूपणमालश्रंबर शक्रव
तसुंदरसती । सुरतावतीससमानकीवसश्रग्रमहीपीपरपदा । चतुलोसपालसमेतसुभप
रिवारसोहेमनमुदा॥२२१॥जिहकल्पलगजुगलूलहैगागिलिंगविवाजिहलगभवे । जिह
लगपलोकीश्रायुधरतनुसातकराजिहलगहवे । जिहताइमैथुनकायकरसुरलोकनासई
शानहै । ईशानइंद्रविराजतोजिनराजभक्तिसुजानहै॥२२२॥ सुरलोकसंतकुमारश्रौर
महिंद्रद्वादसधरणके । द्वादसतथाष्टविमानलापश्रकृष्णहैचतुवर्णके । शतपष्टजोजन

ऊचऊपरिकेतुरिधभरेपदा । षटहस्तदेहीदिवराजताविषयसुषभोगेसदा ॥ २२३ ॥
दोजलधतेथितसातसागरलगकहाओडकसही । वैराहलक्षणमौलधरसुरपदमगोरेछ
विलही । सुसपर्सइंद्रयकामसुपसुरलोकसंतकुमारहै । तिहइंद्रसंतकुमारसुंदरसंघको
हितकारहै ॥ २२४ ॥ कुछअधिकसागरदोइतेथितसातसाधिकलगसही । सुरसीस
मुकटेसिंहचिह्नमाहिंद्रसुरपुरसुपलही । जिहलगलहैगतिपटसंघयणीइंद्र श्रीमाहिंद्रहै
सुरपद्मगौरसपर्सभोगीभक्तिचितसुरिंद्रहै ॥ २२५ ॥ सुभब्रह्मलोकसुखेत्रसमतेअधि
कससिपूरणाजिसो । खटभूमिकंतविमानलाखसुचारवर्णात्रिधातसो । शतसप्तजोजन
ऊचधुजयुतनीलकृष्णाविवर्जते । तिहइंद्रश्रीब्रह्मेसराजतधर्मकारजगर्जते ॥ २२६ ॥
जिहलगलहैपरवर्जकीगतितमसकायजहालगे । लोकंतकीसुरजिहरमेलेसापदमति
हतालगे । जिहकामसुखहैरूपमेतनपंचहस्तपदमप्रभा । थितसप्तसागरतेदशालग
छागलक्षणमौलभा ॥ २२७ ॥ वरकल्पलंतकभूमिपंचविमानसहंसपचासको । त्रय

वर्णजोजनसातसैऊचेरतनपरगासको । सुरतनसुमोतियछविजहातितिमसुकल्लेसी
जहा । सालूरलछणमुकटदीपतइंद्रश्रीलांतकतहा ॥ २२८ ॥ थितदसउद्धतलवुचतु
रदसलगपचकररसरूपको । जिहलगलहेगतिकिलविखीसुरलोकलंतकभूपको । जि
हकलपलगगतिपुव्वचौदसधारकीजिनवरकही । जिहलगगेमसंघयणपनधरजान
आगमतेलही ॥ २२९ ॥ सुरलोकलंतकलंवऊपरिमहाशुक्रचतुरमही । चालीसहं
सविमानजोजनआठसेऊचेसही । सितपीतवर्णसुरिद्धपूरणरमेसुरचतुकरतनू । हय
चिह्नथितचौदसउदधलघुवडीसमदशीभनू ॥ २३० ॥ तिहसप्तमेदिवइंद्रसुंदरमहाशु
क्रमहाद्युती । सर्वांगभूखणमालअंवरकामविखेसद्वती । जिनवचनरागीधर्मभागी
भक्तिचितवधावतो । जिनचर्णकमलसपर्सनिजासिरस्तवनरचगुणगावतो । सहिसार
सुरपुरकलपअष्टमचतुरमहिमयजाणीए । तिहखष्टसहंसविमानदीपतमहाशुक्रसमा
निए । तनमानभोगकलोलतावतमुकटगजमूरतमई । थितलघुसतारहसागरीओडक

अठारहितिहथई ॥ २३२ ॥ जिहकलपलगगतिलहेतिर्यंचदेसविरतिसमगती । जि
हलगगमागमणंत्रियासंघयणचतुजिहलगगती । सहिसारनामसुरिंद्रउत्तमरिद्धशक्ति
सुहावनो । जिनराजगणधरसाधुकेपदहरषसीसछुहावनो ॥ २३३ ॥ वरकलपनव
मसुनामआनतसुरमुकटफणलछणी । थितउधतवसदसतेचढतउन्नीसलगतनरछणी
मनभोगरसइकवर्णउज्जलवरविमानसुहावणे । चतुकलपनवसेजोजनेसुरतनात्रिहस्त
दिपावणे ॥ २३४ ॥ दसमेसुप्राणतकलपउत्तमाथितजघिन्नउन्नीसके । उतकिष्टसा
गरवीसगेंडेचिह्नमुकटसुसीसके । विवकलप चतुषितचतुविमानशतेंद्रप्राणतनामहै ।
जिनराजबदनपूजनेअतिभक्तिगुणअभिरामहै ॥ २३५ ॥ सुरलोकअरणेकादसेथित
वसितेइकीसलौ । तिहवृषभलछणमौलधरलेषाकहेजिनवचभलौ । दिवप्रथमदुतिए
त्रतियेचतुरथोअर्द्धचंद्राकारहै तिहतेचतुरसासिपूर्णतेफुनअर्द्धसासिवतचारहै ॥ २३६ ॥
सवकलपतेउत्तममहागुणतीनसंघयणीलहै । इक्कीससागरतेचढतबाईसलगधारककहै

वरहंडमूरतचिहनमुकटेमहाजोतिप्रकासनो । चतुषितद्दुकलपविमानत्रैसयअच्चुतिंद्र सुसासनो ॥ २३७ ॥ उतकिष्टश्रावकगतिजहालगचारपदवीसोकही । आजीवियाआभोगीयागतिद्दष्ठत्रयतिहलगसही । वैक्रयउत्तरजिहलगकरैसोदकपतोपदाजिह लगे । मनभोगरसचतुकलपअतमनामअच्चुतजिनमगे ॥ २३८ ॥ इहिकल्पद्वादस भूमवावनवरविमानविराजते । जोजनअसंपप्रमानकेछविसंखकेछविछाजते । कल्पंतभूमिरकलपनामवडसकेघरइंद्रको । उतकिष्टथितसुपसोलहेचितधारवचनजिनंद्र कोइ ॥२३९॥ तिहइंद्रवासविमानकेदिसपुव्वसोमसुवर्णको । दक्षणादिसाजमवर्णपछनउत्तरेवेसमनको । इसभांतचारविमानमाहिलोकपालसुरिंद्रके । वहुवुद्धवंतमहंतसुंदरवचनएहजिनंदके ॥ २४० ॥ किलविषीथितत्रैपलात्रिसागरात्रियोदसधारकसुरा। वासीअधोदिसकलपाविवधुरत्रितीएतुरिएघरधुरा । लंतकअहेमुपदोपकेफलऊचथानकनाहिलहे । निदादिदोपविकारसंयुतसंजमीइहुफलगहै ॥ २४१ ॥ कल्पौचबीइक

लहैतिथ्थंकरपदलहैंइककेवलं । चक्रेसकेशवबलमहीधरसाघुश्रावककेथलं । मिथ्या
तयुतइकभ्रमेभवभवइमकहैजिनचंदजी । भवजनसूनोइहिदेवरचणाधरोंचितश्रानंद
जी ॥ २४२ ॥ चौसाठइंद्रपवित्रमनवचतनभक्तिजिनदेवके । उलसंतश्रंगप्रमोदपूर
णभएप्रभुपगसेवके । श्रोडकलहेनिरवाणपदइहवचणश्रीजिनधारके । चिनभक्तिफ
लसुभगातिसुकलधनधानसुखसंसारके ॥ २४३ ॥ मत्तगयंद छंद ॥ पंचहिपंचक
हीश्रसुरेंदकीषष्टत्रियाधरनादिककेरी । व्यंतरजोतिकइंद्रनकीचतुश्रग्रहमहेपिसुरिद्ध
चगेरी । शक्रइशांनकिश्राठइमेपरवारसमेताजिनदाकिचेरी । वदनपूजनप्रेमधरीजिन
वैनसुनेधररीझघनेरी ॥ २४४ ॥ चौसठसाठहजारसमानकहैचमरेंद्रबलिंद्राकिभारे ।
षष्ठसहंसयुतेधरणादिकव्यंतरजोतिकचारहजारे । चारश्रसीयश्रसीयबहत्तरसत्तर
साठपंचाससुमारे । चालिसतीससुवीसदसोमघवादिसहंससुसोभतसारे ॥ २४५ ॥
[illegible] । स्तोत्रविचित्रसवर्णप्रसनाकिदामत्र

नेकवनायसवारे । संस्कृतप्राकृतदेसविदेसकिभाषमईगुणग्रामउच्चारे । मोदलहैनि
जरावहकर्मनिहोतसुवधतपुन्नभंडारे ॥ २४६ ॥ साजसजेइकऊनपचासविधेदसदो
यसुतालबजावे । सातसुरेतिहुग्रामकरीषटरागसभीपरिवारसुगावे । नाटकभांतबती
सरमेवहुभांतसुछंदपढेरसपावे । भक्तिकरैसुरश्रीजिनकीकरजोरनमेजयकारवुलावे ॥
॥ २४७ ॥ दोहरा ॥ द्वादसकलपातेपरेकलपातीतकहाय । दुक्करकरणीअतितपीम
हाप्राक्रमीथाय ॥ २४८ ॥ नौग्रीवेगअनुत्तरेदोविधकहैजिनंद । जतीलिंगबिनऔर
नहिपावेपदअहिमिंद ॥ २४९ ॥ भद्रसुभद्रसुजातदिवसुमनसुचौथोनाम । पियदंस
णसुदंसणीअरुअमोघसुभठाम ॥ २५० ॥ सुप्रबुद्धयसोधरोनवग्रीवेगकहत । पंच
विपेसुपअधिकसुरभुंजेमनउलसंत ॥ २५१ ॥ नवग्रीवेगेनवमहीदसमिअनुत्तरजान
वावनकल्पअकल्पदसबासठमहीविमान ॥ २५२ ॥ ऊंचेएकसहंसामितजोजननवग्री
वेक । तामेविवकरतनअमरसजेएकहीएक ॥ २५३ ॥ बाईसागरतेचढतएकएकनव

माहि । थितजघिन्नइनतेअधिकइकइकओडकताहि ॥ २५४ ॥ नवग्रीवेगेतीनात्रिकहे
ठमध्यउपरेव । तिहविमानसयतीनयुतअष्टादसभणएव ॥ २५५ ॥ इकसौग्यारहि
सातयुतसौतीजेसयएक । स्वेतरतनमयकेतुयुततामेदेवअनेक ॥ २५६ ॥ जिहलग
देवविमानीयासहितलोकंतकदेव । वासुदेवपदलेनकीभापीश्रीजिनएव ॥ २५७ ॥ अ
नियानीसनियानियाअंतअनंतभवीय । आराधिकद्रवलिंगकीजिहलगदेवसहीय ॥
॥ २५८ ॥ जिहलगभव्यअभव्यसुरसमकितअरुमिथ्यात । ज्ञानतीनअज्ञानत्रयनव
ग्रीवेगकहात ॥ २५९ ॥ इकसमदिष्टीसुद्धाचेतनिःससेव्रतपाल । धर्माराधिकसुररुच
रदंसणज्ञानरसाल ॥ २६० ॥ इकसंसयमिथ्यातयुतसमकितरहिताचार । करकरणी
समसाधकीतहाभएअवितार ॥ २६१ ॥ उत्तमदोसंघयणकेनवग्रीवेगेजान । तांऊप
रसमदिष्टधरअमरअनुत्तविमान ॥ २६२ ॥ गतिथितकलपानीकहीप्रथमसंघयणी
थाय । थोडभवकरकर्मपयभक्तिमहापदपाय ॥ २६३ ॥ विजयविजंतजयंतफुनअप

राजितसुविमान । सर्वार्थसिधकेचहूंदिसहीदिपतिसुथान ॥ २६४ ॥ ऊचेजोजनएक
दसशततेऊपरकेतु । दवैअनुत्तरमाणिदिपततामेसुरसुपलेतु ॥ २६५ ॥ इककरतनासि
तरतनद्युतिअतिबलसुपजसशक्ति । सकलअमरासिरमुकटमणिचितजिणवरगुणशक्ति
॥ २६६ ॥ तससन्नीपंचिंदियापुरुषलिंगाजिहताय । अल्पकर्मउपमुक्तिकेदेवअनुत्तर
थाय ॥ २६७ ॥ पंचविमानअनुत्तरेपंचविपेउताकिट्ठ । पंचमगतिकेपाहुणेपंचपदेचित
इठ ॥ २६८ ॥ चहुमेलघुइकतीसकीउतकिष्टीतेतीस । मध्यसर्वतेतीसहीसागरकही
मुनीस ॥ २६९ ॥ जितनेसागरआयुसुरतापक्षेफुनसास । तितनेवर्षसहंसगतिभूप
करेपरगास ॥ २७० ॥ मध्यागिरदवासठखितेतांचहूदिशेत्रिकोण । चौकूणेफुनगिर
दइमधुरपितवासठहोण ॥ २७१ ॥ षितषितइकइकघटतइमअंतअनुत्तरएक । पंक
तवंधविमानइमचहुदिसअमरअनेक ॥ २७२ ॥ धुराविवलौनरपेतामितसमादिसउड
सुभनाम । अंतमजंवूदीपसमसरवार्थसिद्धठाम ॥ २७३ ॥ पंकतवंधीसर्वहीजोजन

अगनतमान । तिमहीताकेअंतरेजिनवरवचनप्रमान ॥ २७४ ॥ पुण्यकीर्णऔरस
भसंषअसंषप्रमान । दिपेसेषषितऊपरेविविधवर्णसंठान ॥ २७५ ॥ चौरासीलषसह
सयुतसत्तानवेतेईस । सबविमानषितबासठेदेषकहेजगदीस ॥ २७६ ॥ सातवीससै
धुरधराअंतमसैइक्कीस । भूविमानामिलपिंडसभजोजनसैबत्तीस ॥ २७७ ॥ आयुवर्ष
वसतेचढतकोडपुब्बलगकोइ । पालमहाव्रतदेसव्रतसुरविमानपदहोइ ॥ २७८ ॥ सो
ओडकनरदेवकेसातआठभवपाय । केवलदंसनज्ञानलहिसूधेशिवपुरजाय ॥२७९॥
कलपातीतसुभक्तिचितप्रभुसेवेनिजटाम । ध्यावेसेवगुणसमरमोदलहैअभिराम२८०॥
वाराजातकेकलपलगआयकरेजिनभक्ति । वंदनपुजनथुतकरणकथासुनेचितरक्त२८१
चहुविधसुरतेहोतहैबलचक्रीसर्वज्ञ । सुरविमानाजिनराजहरितिर्थकरवचतज्ञ ॥२८२॥
तिहुंलिंगातेदेवगतितांतेतीनेलिंग । नहिनपुंससुरगतिविषेजिनवचणेनहिविंग२८३॥
त्रयलिंगीआराधकीपुरुषालिंगहीपाय । विनाआराधकलिंगविवसुरसतिमेजियथाय ॥

॥ २८४ ॥ जिनवचनेंअनुरक्तिचितपालेतिमआचार । नि मलअसकलेसतेपारकरेसं
सार ॥ २८५ ॥ वहुआगमविज्ञानधरलहिसमाधिगुणगेह । आराधिकपदपायकेऊ
चीगतिकोलेह ॥ २८६ ॥ सर्वाराधिकइकतथासर्वविराधिकहैन । देसअराधिविराध
कीचहुविधज्ञातावैन ॥ २८७ ॥ सहैपरीसेक्षमाकरचहुसंघेसुपहोइ । तथाअहिपर
लिंगकेसर्वाराधिकसोइ ॥ २८८ ॥ सहैचतुरविधसंघकेऔरनकेनहेय। देसविराधि
कसोभएजिनवरवचनकहेय ॥ २८९ ॥ निजमतिपरमतिसवनकेसहेनकोईसोइ ।
सर्वविराधिकसोभएवक्षहीनगुणजोइ ॥ २९० ॥ औरसबनकेसहितहैसंघोसहेनजेय
देसाराधिकदवदवाव्क्षभेदतिमतेय ॥ २९१ ॥ रागसहितआराधकीदेवविमानीहोइ
पदवीपंचविपेजतीवीतरागशिवसोइ ॥ २९२ ॥ वालतपीउतकटरसीतपमानीवरीय
क्रोधीतपीनिमित्तकीअसुरजातमैथीय ॥ २९३ ॥ अरिहंताअरुधर्मकीगुरूऊपाध्या
कीय । निंदाचहुविधसंघकीसुराकिलविषीयाथीय ॥ २९४ ॥ विकथाहासकंतूहलेक

अगनतमान । तिमहीताकेअंतरेजिनवरवचनप्रमान ॥ २७४ ॥ पुण्यकीर्णऔरस
भसंपअसंपप्रमान । दिपेसेषपितऊपरेविवधवर्णसंठान ॥ २७५ ॥ चौरासीलषसह
सयुतसत्तानवेतेईस । सवविमानषितवासठेदेषकहेजगदीस ॥ २७६ ॥ सातवीससै
धुरधराअंतमसैइक्कीस । भूविमानामिलपिंडसभजोजनसैवत्तीस ॥ २७७ ॥ आयुवर्ष
वसतेचढतकोडपुब्बलगकोइ । पालमहाव्रतदेसव्रतसुरविमानपदहोइ ॥ २७८ ॥ सो
ओडकनरदेवकेसातआठभवपाय । केवलदंसनज्ञानलहिसूधेशिवपुरजाय ॥२७९॥
कल्पातीतसुभक्तिचितप्रभुसेवेनिजटाम । ध्यावेसेवेगुणसमरमोदलहैअभिराम२८०॥
वाराजातकेकल्पलगआयकरेजिनभक्ति । बंदनपूजनथुतकरणकथासुनेचितरक्त२८१
चहुविधसुरतेहोतहैवलचक्रीसर्वज्ञ । सुरविमानाजिनराजहारितिर्थंकरवचतज्ञ ॥२८२॥
तिहुंलिंगातेदेवगातितांतेतीनेलिंग । नहिनपुंससुरगतिविषेजिनवचणेनाहिचिंग२८३॥
त्रयलिंगीआराधकीपुरुषालिंगहीपाय । विनाआराधकलिंगविवसुरसतिमेजियथाय ॥

॥ २८४ ॥ जिनवचनेंअनुरक्तिचितपालैतिमआचार । नि.मलअसकलेसतेपारकरैसं
सार ॥ २८५ ॥ वहुआगमविज्ञानधरलहिसमाधिगुणगेह । आराधिकपदपायकेऊ
चीगतिकोलेह ॥ २८६ ॥ सर्वाराधिकइकतथासर्वविराधिकहैन । देसअराधिविराध
कीचहुविधज्ञातावैन ॥ २८७ ॥ सहैपरीसेक्षमाकरचहुसंघेसुपहोइ । तथाग्राहीपर
लिंगकेसर्वाराधिकसोइ ॥ २८८ ॥ सहैचतुरविधसंघकेऔरनकेनहेय। देसविराधि
कसोभएजिनवरवचनकहेय ॥ २८९ ॥ निजमतिपरमतिसवनकेसहेनकोईसोइ ।
सर्वविराधिकसोभएवक्षहीनगुणजोइ ॥ २९० ॥ औरसवनकेसहितहैसंघोसहेनजेय
देसाराधिकदवदवाव्क्षभेदतिमतेय ॥ २९१ ॥ रागसहितआराधकीदेवविमानीहोइ
पदवीपंचविपेजतीवीतरागशिवसोइ ॥ २९२ ॥ वालतपीउतकटरसीतपमानीवेरीय
क्रोधीतपीनिमित्तकीअसुरजातमैथीय ॥ २९३ ॥ अरिहंताअरुधर्मकीगुरूऊपाध्या
कीय । निंदाचहुविधसंघकीसुराकिलविषीयाथीय ॥ २९४ ॥ विकथाहासकंतूंहलेक

रैचपलताकाम । इंद्रजालइमदोषघरकंदरपीगुरुठाम ॥ २९५ ॥ मंत्रयंत्रतंत्रौषदीसु
घरसारिर्द्दहित । इत्यादिकदोषेसहितअभियोगीगातिलेत ॥ २९६ ॥ विपभक्षणआयु
द्धकरीजलअगनीइत्यादि । अनाचारसेवीमरेवधेजन्ममरणादि ॥ २९७ ॥ तपसंज
मकरणीकरेत्रिपेभोगसुपचाहि । धर्महीनधर्मांतरोहुपलहैभवमाहि ॥ २९८ ॥ कीए
नियानेतुछफलवहुकरणीकोजाय । रतनअमोलकमूढजिमवेचेलघुधनपाय ॥२९९॥
विपयकष.यविकारवमुफोडेलभधजुकोइ । आहाचितदंडलीएबिनानहीअराधिकहोइ ॥
तपसाकरणीवहु करेकामलालसात्रीय । गणकादेवीमाहिगतिवहुसुरभोगकरीय३०१॥
जिहइछासतानकीवालगुपालपिडाय । बहुपुतीयाजिमसोभवेकरणीकाफलपाय३०२
कोपतपीआयुधपणेमानेबाहनहोइ । कपटसभानिरादरीलोभारिद्धलघुहोय ॥ ३०३ ॥
मुषविकारभंडहसेतपकरणीकेसाथ । भंडदेवमेउपजकेवंधेकर्मअनाथ ॥ ३०४ ॥
इत्यादिकदोपेकरीनहीआराधिकहोइ । दोपरहितमुनिअनुव्रतीआराधिकपदसोइ३०५

आशाधिकनरभवलहैरिद्धधर्मसयुक्त । सातआठभविओडकेपावेअविचलमुक्ति ३०६
भक्तिकरैभगवतकीदंसणवंदनगाय । चारजातकलपालगैसेवेगसुढिगआय ॥ ३०७
सोरठा ॥ नाटकगीतरचायसुणवाणीजिनराजकी । नरभवलुभकुलपायधर्मसाहित
संपतिलहै ॥ ३०८ ॥ उत्तमसुरवरसोय जोजिनपर्मीभक्तिचित । जिनमगद्वपीजोइ
भवसागरमैसोभ्रमै ॥ ३०९ ॥ ऊचनीचवहुभांतरचणाकहीएदेवकी । सुनोभवकाचि
तशांतधर्मसाधसुभपदलहो ॥ ३१० ॥ कवहुंसतोगुणठाणकवहुरजोगुणमैरमै ।
कवहुतमोगुणआणकरैकर्मवहुभांतके ॥ ३११ ॥ दूमल ॥ छंद ॥ कवहूं
तियसाथकलोलकरैकवहूंनृतगीतविनोदचहै । कवहूंबहिराजसभानिगसेकवहूंरिप
सोरणभूमिडहै । प्रभुसाथसपूरणभक्तिकरीकरजोरसुछंदउचारकहै । मिलमित्रहसे
हितरीतरमैइसभांतादिवोनिसमोदलहै ॥ ३१२ ॥ कितहूंनटहोकरनाचतहै कितहूंव
रजंत्रवजावतहै । कितहूंहयरूपकरीहिनकेचपलागतिवेगजिवावतहै । गजरूपकरी

गरजाटकरै सिंहतादकरीहरश्रावतहै । फणधारफुंकारकरेवरहीवहुभातकिनाचदि
षावतहै ॥ ३१३ ॥ कितहूंहसवारबनेपरकेकितहूंबिनवाहणधावतहै । कितहूंहथ
यारबनेसुरकेकितहूंहथयारचलावतहै । कितहूंत्रियश्रोरचलेपुरुषाकितहूंरुचसोत्रिय
श्रावतहै । कितहूंप्रशनोत्तरवादकहूंसुरषेलसिद्धंतादिषावतहै ॥ ३१४ ॥ कितहूंल
ळनासुविर्नीतभईपियकेपगसीसछुहावतहै । कितहूंरिसधारगुमानभरीपियश्रातर
होइमनावतहै । कितहूंलडकेविवरेलतहैहरषेनिरषेमुसकावतहै । इमहूंबहुभांतक
लोलकरैरचणागुणवंतसुनावतहै ॥ ३१५ ॥ कितहूंपरषेछलसोमुनिकोघररूपपिशा
चडरावतहै । कवहूकरजोरलगैचरणोविधसोश्रपराधषिमावतहै । श्रतिरीझधरीसम
सेवककीमुनिकेगुणग्रामादपावतहै । कबहूंघरश्रौधलषेतपसीनिजठामनमैगुणगाव
नहै ॥ ३१६ ॥ सुरसंगमतीरथथानकहूंरिपज्ञानजगैनिरवाणसमै । कितहूंथितश्रष्ट
मचौदसपूर्णममासश्रमावसपर्वणमै । न्रतगीतठटैभटयुद्धमचेमतवादजगैकितहूंनगमै

जिनजन्ममहोछविमेरनगेवरदीपनदीश्वरमांहेरमं ३१७। जिनराजमहाछाविमांहिकर
पतिकेउपजेवरवादलकी । वरषासुभगंधमईजलकीफलफूलसुगंधमईदलकी । कल
धौतमणीरजतोतमकीपटभूषणकीमुकताफलकी । सुरदुंदभिनादकरेहितसोदसहींदि
समाहिप्रभाझलकी ॥ ३१८ ॥ कितहूंवरऔषधगंधमईकरचूरणदेवउडावतहै ।
कितहूंवररत्नमईकरछालिपउत्तमधुंपधुपावतहै । कितहूंवरगेंदलईविधसोनभमाहि
मुषेलदिषावतहै । कितहूंसुरवृंदवणेहितसोजयकारसुसब्दवुलावतहै ॥ ३१९ ॥
इकतीरथनीरसुकुंभभरीइकषीरसमुंद्रसुचावतहै । सललाविमलाजलगंधमईप्रभुम
ज्जनहेतअनावतहै । वरऔषधमेरुगिरीसिषरोवरचंदनआदिमंगावतहै । वहुवर्णसुपु
ष्पसुगंधमईवनचंदनआदिकलपावतहै ॥ ३२० ॥ मरदंगसुझालरभेरतुरीनुरसिंहन
घंटनसंघणकी । घणघोरमहारविदुंदभिकीजयकारभईधुनदक्षणकी । रसहासासिंगा
रसुवीरसजेरचणारसअद्भुतलक्षणकी । अतिमोदतदेवमहोचविकोप्रभुभक्तिकरीसुभ

पक्षणकी ॥ ३२१ ॥ सभदीपसमुंद्रअसंषणमैलघुमध्यविषंभलवानमई । इकजोजनलाषप्रवानश्रयंवरजंवुसुदीपसुनामथई जगतीवरवज्रमईगिरेदचतुद्वारचहूंदिसक्रांतभई । विजयेविजयंतजयंततथाअपराजितनामसदीवलई ॥ ३२२ ॥ इसदीपविषेवरमध्यविषेगिरमेरुसुजोजनलाषतणो । तिसपूरवमछममैविवतीसमहाविजयाजिनधर्मघणो । भरथोदिसदक्षणउत्तरतोसमईरवतोंसभसाचभणो । सुरस्वामिअणाढिपदीपतणोतरुजंवूसुदर्शणवासमणो ॥ ३२३ ॥ इहदीपसपूरणचंदजिसोइनकोलवणोदधहीवलिया । विवजोजनलाषविषंभजलंविचैहदगमालजिसोढलिया । दसमसहजारउच्चतमईनवपंचहजारदसोछलिया । सुठियालवणोदधिनामादिपैरतनाधरसुछतहीफलिया ॥ ३२४ ॥ लवणोदधिकोवलियावरधातकिषंडविथारतिसोदुगणो । वियमेरुगिरीचौसाठविजैविवहैभरथोविवउत्तरणो । इमधातकीदीपपरैजलधीजिहनामकहावतकालपणो । तिहतेपुनपुष्करदीपइमेदुगणोदुगणोविसतारभणो ॥ ३२५ ॥

तिहपुष्करदीपतदार्धविषैविवमेरुविजयचतुसाठकही। विवईश्वर्त्तोंभरथोतिहमैपदवी
धरकीउत्तपतसही। इहदीपदुसार्द्धदुसिंधयुतेनरषेतकहाजिनमोषगही । इहतांइघ
णादिकपेचरणासुरजोतिकचालवलोकलही ॥ ३२६ ॥ जिहवादरपावककालसुका
लभवेनरउत्पतिकालकरै। जिहतांइमहाव्रत्तधारमूनीव्रतद्वादसश्रावकधर्मधरे। नर
रूपजिनेश्वरचक्रपतीवलकेशवकेशवजेहहरे । सर्वग्यमुनीजुगलादिविराजितसोनर
क्षेत्रसुरिद्धभरै ॥ ३२७ ॥ सभदीपवलेजलराससहीतिहसागरकोइमपीपवले। दुग
णादुगणाविसतारकहाइमहोतअसंषसिद्धंतचले। समभूरमणोदधिअंतमकोजिनवैन
सुणेअमरोगठले। इनमैबहुथानकहैसुरकेसुपभोगविलासकरेसुफले ॥ ३२८ ॥ इन
दीपसंमुद्रअंसषणैतिरयंचपचिंद्रयसंपाविना । कुछदर्वनिसानिलषीपिछलीलपज
न्मपुरातनधर्मगुना । व्रतधारइकादसश्रावककीतपसाकरपापपपंतघना। गतिअष्ट
मकलपविषेतिनकीइहिवैनजिनेश्वरदेवभना ॥ ३२९ ॥ तिरयंचपचिंद्रयसन्नअसन्न

अकामसर्इनिजराकिफलौ । गतिभौनपतीवनदेवविषेतिथओडकभागअसंषपलौ । सनवंतपुरातनजातलषीग्रहबालतपंगतिजोतिकलौ । समदिष्ठलईसुभधर्मरुचीधुरकल्पलगैसुभभावभलौ ॥ ३३० ॥ जुगलाथितभागअसंषपलोसभछप्पनअंतरदीपनके । गतिभौनवनेपनहेमवएपणइर्णवएपलएकनके । धुरकल्पलगैउपजैतियतंदुतिएलगजावनशेपनके । पिछलेसुभसिंचततेसुरहीनिजआयुसमंकहिउछनके ॥ ३३१ ॥ नगताग़तिनारकिवातशिपीविकलिंद्रसमूछममानवमै । जलभूवनवादरमैउपजैनगतागतिसूषमकेभवमै । नरतेनरमैतिरयंचनथाउपजैनअसन्नातिर्यंचनमै । जुगलूसुरहीसुरनाहितहाउपजेइमफेरननीदिवमै ॥ ३३२ ॥ गतिसंधिलगैमरणांतसमैनरमैतिरयंचविषैसुरको । तिहमिश्रसुभावभवेसुरकोइतअंतमपावनकेधुरको । इकगर्भविषेउपजैघुतवैक्रयऔधमहबलहैउरको । तपज्ञानतणाफलहोतइसोइहिवैनअनंतबलीगुरुको ॥ ३३३ ॥ सुरदीपपतीगिरकूटगुफापतिद्वारपतीविजयाधिपती । वनदेवपुरी

पतिचैतपतीजलधीश्वरतीरथदेवसती । द्रहवासपुरीसललाधरणीमणि औषधकीरस
णीसुमती । इमऔरघणीविधदर्वविषैहितधारकमानवलोकरती ॥ ३३४ ॥ इकहैसु
षदायककल्पपतीजुगलाजनकेचितसेवनको । इकहैपरमाधरमीयमक्रूररहैनरकेदुप
देवनको । इकलोकफिरैचउसंधविषैजगसारभलीविधलेवनको । इकऊचपदारथसा
थरहैरतनादिनिधीसुपवेवनको ॥ ३३५ ॥ इकमंत्रअधीनसुरीसुरहैइकयंत्रनमैइकत
त्रनमैं । मतिभेदघणेजगमाहिकहैतिनकेहितबंधघणेमनमैं । इकवंदनपूजनसेवनते
सुखदायककाजविषैघनमैं । इमदेवविराजतलोकविषैइकहैरषवालमहाधनमैं ३३६॥
इकषेचरपेत्रविषैरमतेनरनारिविषैनहुशक्तिधरी । नभचालपतालप्रवेसविधेजलपाव
कवातघानादिकरी । तनरूपवढावनभेषधरीबहुदर्वउपावनगुप्तचरी । इमऔरघणी
जगरीतविषैवरतेमनमोहनरीतभरी ॥ ३३७ ॥ इकदेवरमैनरकीतरुणीनरसाथरमै
इकदेवत्रिया । नरलोकविषैइकनोहधरीइकदूररहैमनदूरकिया । इकमोहकरीनरसै

नवनेइकवैरकरीभयरोगादिया । रचणासुरकीवहुभांतलषीजिनजैनकिवैनपयूषपिया
॥ ३३८ ॥ इकवैरकरीनरकेधसकेरिपकोदुपदेनडरावनही । पिछलेभवमोहकरीदु
षमोचनकारनकोइकजावनही । रिपसोरणमंडणकारणकोमिलनेकुनमित्रकिधाव
नही । सुरऊरधकेजुपतालधसेतिहकेइमऊरधञावनही ॥ ३३९ ॥ इहिलोकअधी
नश्रुतागमहीसुरलोकविषेसुरसाथरहै । तिहदेषवडेश्रुतिधारककोञभिमानगलेचित
सोगरहै । पछतावतहैचितवंतइसोवलभ्राक्रमहोतञनादगहै । नहिउद्दमञागमभा
हिकीयेञवहोइनिरुद्दमपेदसहै ॥ ३४० ॥ कितहूजिनञागमकीचरचाजिनञागम
सापसुनावनही । कहुवेदपुरानपढेहितसोञपनेञपनेलतभावनही । कहुछंदकला
ञगटेरससुंदरतालसुगीतवतावनही । कहुशब्दमईवरग्रंथपठेवरवोधप्रकासदिपाव
नही ॥ ३४१ ॥ कितहूंसुरञापथकीञधिकोलषकेअतिआरतभाहिपरै । कितहूनि
जथीलघुकोलषकेञिरकेञभिमानविषादधरै । जिहपासरूपातिरूपसपीतिहकोवहु

दोपविकारभरै । समदिष्टसषीजिहसाथरहैतिनकोंदुग्रदोपविकारहरै ॥ ३४२ ॥
कितहूंसुरचोरकलाधरकेदवडेग्रहरत्नत्रियापरकी । पकरेंताहिदेषधनीबलसोंवहुत्रा
युद्धचोटकरेकरकी । तमकायविषेछपजायकवेजहिजोतनदेवमणीधरकी । इकदुष्टक
लाधरदेवघणेपरमानतसीपधराधरकी ॥ ३४३ ॥ रणमाहिसुरासुरझूझतहैग्रहिदेव
सुवर्णकुमारमिली । इमहीइतरेरिपसाथभिडेवलग्र क्रमआयुधधारबली । इतनोजु
विशेपविमाननकोत्रिणकंकरपातचलायफली । वहुझ्रतमणीमयत्रायुद्धहोरिपअंगल
गैतिहशक्तिदली ॥ ३४४ ॥ सुभसब्दसुगंधसुवर्णमईरसउत्तमनाथसपर्सभले । सुप
भोगनपंचविपेविवधामनवैनसरीरविपेकुसले । वहुवरंपलोपमसागरकीजिहत्रायुज
रादिकरोगटले । इहिपुन्नमहातरुकेफलहैमुनयोनरनारिसुजानरले ॥ ३४५ ॥ सुभ
वंधनवंधनदेवतवेजवभक्तिकरैजिनकीमुनिकी । पदवंदनपूजनप्रेमधरीमहिमावरणे
तिनकेगुनकी । सुनकेसमधर्मकथारचणारचनाटकगीतमहाधुनकी । सुभकर्मविषे

सुभवंधइमेरचणारचणीजिनजीउनकी ॥ ३४६ ॥ सुरबंधनभावमलीनविषेवहुकर्मभ
विक्षतनीचमई । तनचोटलगैजवआयुधकीनमरैविनपूरणआयुथई । सुरशक्तिनआयु
वधावनकीगतिजोनछुडावनकीनभई । सभकेसिरऊपरकर्मबलीइहसारमहामुनिरा
जदई ॥ ३४७ ॥ परिलिगग्रहीकहुध्यायकभावचढेलहैकेवलज्ञानजहा । इकदेवत
हामुनिभेषदएमहमानतहासकरंततहा । कहुदृष्टकरैपनवर्णप्रसूनसुगंधतनीरसुधूप
महा । कहुसाधुसुश्रावकदेहतजीसरभक्तिनृतादिकरंततहा ॥ ३४८ ॥ सुरथंभनस
स्त्रसिपीजलवातपशूनरव्यालमहाबलको । षिणमैतरुवेलउगायकरैफलफूलफलीस
घणेदलको । लघुकालविषेरचवासपुरीविपनीग्रहवासमहीथलको । वहुकाजकरैनक
रैशिवकोमुनिराजकरैपदउज्जलको ॥ ३४९ ॥ जलमाहितरावनपाथरकोगिरपाटउ
डावनषेलकरै । नरनारपशूआहिकीलधरैअवसर्पनदेसुद्धबुद्धहरै । अवकोसमजीवत
देवकरैकहजीवनकोअवरूपधरै । इमशक्तिघणीविधहैसुरकीमुनिसीनहिजोभवसिंध

तरै ॥ ३५० ॥ दंगहीनसुलोचनवंतभएमुषगुंगसुवाचभएजिनते । वपुकुष्ठकुगंधत्र्प्रन
गछवीत्र्प्रतिदीनमहीपभएंतिनते । लघुवुद्धविचक्षणराजेथएमनवंछतरिद्धकरैछिनते ।
सुरशक्तिघणीजिनराजकहीछंदमस्तसुथाकरहेगिनते ॥ ३५१ ॥ षिणमोपहुचावण
दूरथकीलघुपेत्रविषैवहुधापसरे । कहुसीसग्रहैनरकोपशुकोकरचूरणदेसविदेसभरे ।
तिहफेरचुनेरचसीसधरैतिहजीवनकोनहिसारपरै । इहत्र्प्राक्रमदेवमहावलकोपारिश
क्तिनहींनिजमुक्तिकरै ॥ ३५२ ॥ दिनकोरजनीनिसवासरहीहिमग्रीपम २ सीतकरै ।
विनकालविषैवरुषारुत्तहीवरषारुतमैविपरीतधरै । विषत्र्प्रम्रतकंकरकोमणिहीदवपा
वककाननरिद्धभरै । लजकाथलभूमिकरैजलहीसुरशक्तिघणीमुनिवाकषरै ॥ ३५३ ॥
उदरोकहुगर्भवटावतहैचहुभांतकरैत्र्प्रतिषिप्रसही । नहिषेदकछुजननीगरभेसुरश
क्तिप्रभावत्र्प्रनंदलही । कहुनाभिथिनाभप्रवेसतहीकहुजोनथकीफुनजोनवही । कहु
नाभिथिजोनाविषैत्र्प्ररुजोनथीनाभाविषेसुरशक्तिकही ॥ ३५४ ॥ इकदेवकतूंहलपेलक

इक

रैपशुमानवसीसवटायधरै । तिहदेषहसेफिरठामकुठामसवारधरैमनमोदभरै । इक

देवमहाबलपिप्रगतीकुछदर्वउछ्लचलतफिरै । इसदीपतणेगिरदेकितबारवनेसुझपेइ

मशक्तिसुरै ॥ ३५५ ॥ अतिप्राक्रमवंतसुजानगुणविहुकारजसाधिकलोकतणे । नहि

शक्तिमुनीवृतकीतिनमैनहि श्रावककीव्रतदेसभणे । इसकारणसम्यकवंतसभीमुनिको

पदउत्तमऊचगिणे । तिनकेपदपंकजपूजनहीबहुभक्तिकरैजनदासबने ॥ ३५६ ॥

रिपमोहमहाबलसाधुहणेनहिशक्तिसुरिंदमहाबलकी । मुरतेनभवेमुनिलोकअला

कप्रकासकरैदुतिकेवलकी । सभदेवअशक्तिकरैकरणीमुनिमोषमहापदउज्जलकी ।

इसकारणदेवमहामुनिकोधरभक्तिभाविक्षमहाफलकी ॥ ३५७ ॥ जिनराजसमोसरणे

इककोडजाघिन्नपदेसुरसेवकरै । उतकिष्टपदेसभइंद्रसमेतअसंषामितेचितमोदभरै ।

जिनजन्मसनैरिषरूपसमैवरकेवलपावनमोषवरै सभइंद्रमहोछविआयकरैसुचअंगउ

पंगसभक्तिभरै ॥ ३५८ ॥ निजकाढप्रदेससुदंडकरैबहुरत्नप्रदेसग्रहेसचुने । तिहमे

लरचैसुरवैक्रयकोवहुरूपवनेयुतछंदगुणे । वहुदवरचेयुतरिद्धपुरीवनासिंधुचमूइमऔर
मुने । सुरशक्तिघणीनहिमुक्तिमईमुणिमुक्तिकरेतहिदेवथुने ॥ ३५९ ॥ गुणपूरणसंयम
वंतमुनीसुरतेजउलंघचलेस्वबले । इकमासप्रवजेतवितरकोउरगादिदुमासउलंघचले
इममासाहिमासवधेतवतेअसुरोग्रहतोइमइंद्रबले । इककल्पदुगेदुगचौनवतेपनतेमुनि
उत्तमसर्वथले ॥ ३६० ॥ इसलोकविषेनरनारिघणेसुरवंदनसेवनमंत्रलिषे । करध्या
नरचेविधपूजनकीसुषसंपतिकोवहुकाजविषे । जगकाजकुकाजकहैजिनजीशिवकाज
सुकाजसिद्धतलिखे । इसकारणदेवनमैमुनिकोहमवंदतहैमुनिकोहरिखे ॥ ३६१ ॥
धुरएकमहूरतअंतरमाहिअजानअपूरणआदिदशा । उपरंतसपूरणदेहमईदुतियासु
खभोगमईसरिसा। जबआयुरहीखटमासतवेत्रितियादुखसोकवियोगवसा । इसका
रणभाखतहैत्रिदशासुभकर्मकरीसुरलोकधसा ॥ ३६२ ॥ अथनवरसरचणा ॥
दूमल छंद ॥ तनरूपप्रभापटभूखणकीभवनादिछवैसुसिंगारकहै । वलप्राक्रमवैक्र

यकोकरुणारनमेरसबीरस्वरूपलहै । दुखमोचनकोसुखदेवनकोसुरद्यालभएकरुणा
सुगहै । रिसवंतभएभयकेकरणेरणखेत्रविखेरसरुद्ररहै ॥ ३६३ ॥ सुखभोगविलास
हुलासविखेनृतगीतरसेरसहासभवे । अपवित्रकुगंधकुरूपविखेअमनोगममांहिगिला
नठवै । लखकालसमापरकेडरतेभयवंतभएरसभीतलवे । रसचित्रजिनंदविभूतलखे
रससंतसमोसरणेसुहवे ॥३६४॥ दिसदक्षणउत्तरलोकदुधासुरवासदुधातिहइंद्रदुधा
कुछआयुवडीबलरिद्धतथादिसदक्षणतेइतरेविवुधा । सभलोकतणेविचमेरुगिरीजगम
ध्यदिशातिहतेवसुधा । दिगपालकरीसुरसाथसजेजिनकोजिनवैनपयूपछुधा ॥३६५॥
दिसदक्षणलोकपतालविषेचमरिंद्रविराजतभौनपती । तिनकेसिरऊपरऊरद्धलोकसु
सक्रसुरिंद्रअनूपमती । इमहीबलइंद्रसुउत्तरमैतिहऊपरइंद्रइशानवती । इमहीइन
केउनकेउपरेवरइंद्रविमानपतीसुगती ॥ ३६६ ॥ कवहूमघवासुईशानमिलेइकठाम
विपहितरीतकरे । कवहूकितकाणयुद्धसजेवलप्राक्रमफोरनसेनभरे । थकजावतशाक्र

ईशानजवैतवसंतकुमारकुध्यानधरै । वहुप्रादभएजिहसीषदएवहुमानलएचितवैरहरै
॥ ३६७ ॥ सुरउत्तरवैक्रयरूपकरीउत्तरेइत्तरेइतआवतहै । कवहूंकितकारणतेनिज
मूलसरीरलईफुनधावतहै । इकतेगिणसंषअसंपलगैतनधारणशक्तिसुहावतहै । रच
णासुरकल्पलगैवरणीउपरैनहिलभ्धफुरावतहै ॥ ३६८ ॥ तनभागअसंषमअंगुलको
भवधारणआदिसमस्ततणे । उताकिष्टपदेकरसातलगेविचभेदअसंषाजिणंदभणे ।
सुरउत्तरवैक्रयरूपलघूमितसपमभागजाघिन्नपणे । उतकिष्टसुजोजनलाषलगैइसअं
तरभेदअसंपवणे ॥ ३६९ ॥ पटमासरहैजवआयुतवेकुमलावतफूलाकिमालगले ।
सुरचीरमलीनलपेअपनेवलहीनहुलासविनोदटले । लपकालसमाअतिआरतहीत्रि
यमित्रवियोगदुपादिरले । नहिदेवकोजीवनहोततवेइमभाषतहैमुनिराजभले ३७०॥
लषकालधरैसुरआरतकोहमरेदिवभोगविलासटरे । इततेचलगर्भविषेपरकेघुरवीर
जरक्तिअहारकरै । वहुमासलगैतमघोरविपेदुरगंधमहादुषगर्भभरै । जिसदेवजिनै

श्वरहोवनहैइमसोनहिचिंततशोकधरै ॥ ३७१ ॥ लखजन्मभविक्षतमानवकोअरुआ
रजदेससुधर्मकुले । हरषेसुरसुंदरभावधरैचित्तेफुनधर्मकरोसुफले । जलभूवनमैंति
रयंचविषेसुरझूरणआरतमाहिरले । निजकर्ममहाबलवंतभएइमभाषतहैमुनिराज
भलै ॥ ३७२ ॥ इकषेत्रसवारणआवतहैजिहमांहिभविक्षतमानलिया । अपवित्रप
दारथदूरकरैसुभपुग्गलासिंचतषेत्राकिया । रिषरूपधरीशिवहेतकहूंउपमातापिताभए
वैनाठिया । तुमरोसुतहोवनजोगग्रहेतुमनोअटकावतमोहिहिया ॥ ३७३ ॥ सुरका
लकरैत्रियाजीवतहाउपजैसुरहोरसुभोगकरै । चवजातत्रियातिहहोरभईमिलभोग
करेचितशोकहरै । विरहोउपजंतजाघिन्नसमोउतकिष्टपदेषटमासपरै परिवारमिलाप
वियोगइमेसुरकलपलगैमुनिवाकपरै ॥ ३७४ ॥ दुहुकलपलगैजलभूवनमैथितसंष
मईतिरयंचनरे । सुरअष्टमकलपलगैनरऔतिरयंचपचिंद्रयदेहधरै । उपरेनरजोनवि
षेउपजैनसमूछमसूषममाहिपरै । जिनधर्मअराधिकधर्मलहैशिवस्वर्गविषेनिजवास

करे ॥ ३७५ ॥ सगदिष्टअराधिकसंयमकेसुभदेसदतीसुरहोइच्चुता । नरलोकविषे
भवमानवकोवहुरिद्धजहाधनधानमता । ग्रहषेत्रपशूवहुदाससपावपुसुंदरभूषणचातु
रता । कुलऊचसुआयुअरोगपणाइहिपावतहैमुनिजीकाथिता ॥ ३७६ ॥ दसजातप
तालसुभौनपतीसगकोरवहत्तरलाखविषे । सुरविंतरषोडशजातदुधातिरछेजुअसंख
पुरेहरिषे । नभचंदरवीग्रहारिष्यउडूदसजातचराचरभेदलिषे । वहुऊरद्धद्वादसकल्प
परेनवपंचाविधेआहिमिंदसुखे ॥ ३७७ ॥ अथसिद्ध अस्तुति ॥ दूमल छंद ॥
सुरलोकसभीजिहहेठरहेशिवस्वछअनूपप्रभाधरणी । तिनकेकछुऊपरसिद्धप्रभूमाहि
मातिनकीजिनजीवरणी । नहिजन्मजराअतरोगछुदाभयसोगउपाधक्रयाकरणी ।
परमेश्वरपूरणब्रह्मसदामुनिराजभएतिनकीसरणी ॥ ३७८ ॥ सभजानरहेसभदेख
रहेदुखसुखअवेदसमाधिथई । अविकारअचाहिअमूरतहैनहिगोतसुभासुभभांतलई
नहिबंधनआयुअनायुभएसभव्यापकआतमरामभई । वसुकर्महणेगुणअष्टदिपैभव

सिंधतरैलहिमोंखगई ॥ ३७९ ॥ चितरूपाचिदानंदचेतनहैंअविकल्पानिरंजनलोक
पती । ध्रुवआदिअनंतअनादिकहैंअविनाशअखंडअनूपगती । असरीरअनिंद्रयप्रा
णनहीमहिमाश्रुतिवाकविखेवरती । प्रणमोपरमेश्वरसिद्धसदाचितमेचितमीसमता
सुमती ॥ ३८० ॥ जगदीश्वरलोकअधारप्रभूजगमस्तकउत्तमऊचवसै । सभकेसिर
ऊपरलोकशिषाजिममंदरऊपरकेतूलसे । सरवग्यलषैनिरपेतिनकोछदमस्तसुध्याव
नसांतरसै । प्रणमोपरमातमजोतमईजिहकेसिमरेअघपुंजनसै ॥३८१॥ कमलवंध
दूमलवंदयुग्म अनुघंअरुजंअमितंअतुलंअकुलंकयसंअरधंतपदं । अजअव्बाधिरअ
नकंपतकंअछिदं अजयंअभयंसुपदं अलषंअभुंजतुचराचरलघअनूपमसंरमणंजयदं
प्रणमोअमरंसभतेअधकंप्रभुसिधपयंसभमंगलदं ॥३८२॥ परमेश्वरहोपरमातमहोप
रमोतमहोपरमोचकहो। परमामहिमापरमागममै परवीनरिदेपरतीततहो । परवर्ज
तहोशिवसासतहो अजरामरहोतवसर्वगहो । सुरनागसुमानवभव्यनमै प्रणमोशि
वदेवसशांचितहो । ३८३ ॥ अथ मुक्ताक्षरछप्पय ॥ छंद ॥ परमपरमपद रमण

देवरचणा
॥ ६७ ॥

करमरज वरज अमलसत । अजरअमरअज अटलकरणमन तनवचवरजत । अच

लअपयवर अनघ
अकथभन थकन
नगण गणधरवर
मणसत घटसदन
लतरण तससरण
जयजय परम अभ
कमल बंधसर्वल
सुमनसुपतवर सुम
घरसुकृतकरसुचमन

प्रणमों शिव वसुधां चित
प्रव प
रेमश्वरहो
शिवसा

अलषजस अगम
अमर नरसरपसम
नन । जसधरणस
अघगण हरभवज
परण सभभयटरण
य करण ॥ ३८४ ॥
घु ॥ सवैया ॥ ३२ ॥
ति अमितधर सु
वचतन सुकविविवि

धिविधसुजसकरणराति सुविरचपदवरसुजसकथनगन परमहरपउरविकसतढग

रचणा
६८ ॥

वरवदनहरषधर परमभगतवन । शिवाशिवशिवनिधसकलजगतपति जयजयजय

करसरण परतजन
लंकार सवैया ३२
तुरचतुरविध वरण
रविध । रचत रचत
त अगम अगमप्रभु
जस जस ससियर
मपरम दुति शिव
हरषहरपाचितभगत
नितलहिलहि वुध

॥ ३८५ ॥ यमका
अमर अमरपति च
वरणजस रुचररुच
थुतथकत थकताचि
अलष अलष सिध
धवल धवलकरपर
शिव शिव निध ।
भगतकरनमतनमत
रिध ॥ ३८६ ॥

सर्वदीर्घ सवैया ॥ ३१ ॥ वैमानींदेवादेवींदातारास्वामीतारावृंदातिर्यंलोकेहै जेदेवा

जेपतालेभव्वाहीं । सर्वमानेवंदेपूजेतंत्रैलोकधीसं सिद्धंअंगोपंगोछाहेनित्यंआछीभां
तेसव्वाहीं । याकोध्यावेसास्त्रवेता श्रीसिद्धंतेवेदेसापाकव्योचारी कव्यापारेयाकीसो
भाभापीहै । तंस्वामीकोवंदोनित्यंयासेवेविश्रामोचित्यंपावेमेधासातावित्तंएसीआ
सारापीहै ॥ ३८७ ॥ मोषेकंखीब्रह्मानंदीज्ञानीसाधूध्यावे याकोतांतेतामैवासापावे
पोपेचित्तंसुष्याते । याकोध्यावेवंदेपूजेरूरीरीतेसोभागाथेजीवापूटेपापांकूरेछूटेसारेदु
ष्याते । देविंदीचक्कहीलछीइंदत्तंपुज्जत्तामित्तं रिद्धीसिद्धीवुद्धीकित्तीपावेभव्वायाहीते ।
तंवंदेत्तलोयाधीसंभाखीकित्तीचित्तानंदे सम्मंदिठीमेहामायासव्वापावाताहीते ॥
॥ ३८८ ॥ दंतोष्ट असपर्समत्तगयंद छंद ॥ याजगठाकरकेठहरेहिय चाहिगईह
ठकेअघकेरी । आठडरैअरुआठजगेढिग आरजकाजकिरीअघणेरी । जाचकहीअ
ठकेअघठागहटाय किछारकिकाचकिढेरी । जागरहीघटठाहरठीककिजोजगठाकर
केढिगचेरी ॥ ३८९ ॥ रसनाबध ॥ मत्तगयंद ॥ छंद ॥ मेहाविपेवगकेकिपपीहकु

पेमाहियेकविवाककहेहै । कोकिहियेअहिमाहिगएपिक माहकहूहियपेमगहेहै । का
माकिवामहियेहियकामकुआगगहीषगपेषवहेहै । काकिकुमोहमहापियमाउमुहोपहु
कीमहिमाकिपहेहै ॥३९० ॥ एकस्थानीकंठवर्णं दोहरा ॥ गाहागाहाकहेकहा
अहआअकह अगा
हआ कहाकहाकहै
सहरा बंधद्युति बि
मजोति अनादि अ
दंसन वंतजी परम
जी परमशांतनमो

ह । अहिअघहाअ
खगगाह ॥ ३९१॥
लंब ॥ छंद ॥ पर
नंतजी परमनानसु
शक्ति अनूप मरिद्ध
प्रभुसिद्धजी ३९२

जीतअनादिअनंतजी
नानसुदंसनवंतजी
सक्तिअनूपमरिद्धजी
शांतनमोप्रभुसिद्धजी
परम

॥ इति सिद्धस्तुति संपूर्णं ॥ अथ जिनेद्रउस्तवर्णणं ॥ द्वादससुरअनुक्रमी
थकन ॥ दोहरा ॥ सरवसाधुसिरसीममणिसुपदसूरगुणसेत । सैनासोभतसौयदि

वरचणा
७० ॥

गसंतनमंतसःदेत ॥ ३९३ ॥ करमकालकिलकीनषयकुमतिकूटकेअंत । कैजुकोट
कोमोपदयकतरूपकःसंत ॥ ३९४ ॥ इहिविधरचणालोककीकहीजिनेश्वरदेव । प्रग
टकरैसभदर्वजगसोजिनजीकोसेव ॥ ३९५ ॥ दूमल ॥ छंद ॥ सभहीदिसभौनवि
मानपुरेगिरकूटवनेछविछाजितहै । वरऊरधमध्यपतालविपे जिनमंदरविंबविराजित
है । सुरवंदनपूजनसेवनही नृतगीतवजंत्रसुसाजतहै । प्रणमोप्रभुदेवनिरंजनको
महिमापरमागमवाजतहै ॥ ३९६ ॥ समदिष्ठविसुद्धसवुद्धवधैचितशांतभवेगुणवृंद
जगे । परतापवधेमहिमाफरसेरिपभाजचलेइकपायलगै । निजरावहुकर्मपुरातनकी
नववंधतपुन्नसमोपमगै । जिनवंदनपूजनसेवनतेफलहोतमृपामतिनाहिठगै ॥३९७
तनरोगहरैमनसोगहरैवचचूकहरैदुरकर्महरै । शिववासकरैदिवभोगभरैनरलोकविषै
पदऊचवरै । जगवल्लभतापरिलोकतथासुखसंपतराजमहंतकरै । जिनभक्तिभलीनर
नारिसुनोभवसागरपारउतारधरै ॥ ३९८ ॥ गुणमूलइकीससपासजियोदसएकसपी

सजसाथवने । सम्दृष्टसुव्रतसमायकपोषधसीलदिनेदिनरैनतणे । नकरेजुआरंभक
रायनहीतिहहेतकरैसुतजेसुमने । मुनिवेसस्वछदइकादसमीइहिसाथसअर्चनस्तोत्र
गुने ॥ ३९९ ॥ इमचेतनमित्रसखीयुतहोइकरैप्रभुभक्तिनमादिथुने । तिहकोप्रभुद्वा
दसकल्पविषेसुरसंपतदेतपदोचतने । गुणमूलसपासंगवीसजहासजनीदसदोयस
रूपघने । मिलसेवकरैतिहकल्पअकल्पादिएशिवशंइमग्रंथभने ॥ ४०० ॥ चहुभांत
सबुद्धगहोचतुरोचहुभातसिधंतलपोअमलो । तजचारकषायगहोसरणेचतुधर्मचहूवि
धधारमलो । चहुसंघविषेजसपायलहोजिनपादभजोअघपुंजदलो । सिवसाधनसा
धसमाधगहोगतिचारगईभवछेदचलो ॥ ४०१ ॥ सवसागरमाहिवडोचरमोगिरऊ
चपणेवरमेरुगिरी । सबदेवविमानविषेसरवारथसिद्धअनुत्तरऋद्धिभरी । सुरराजमहा
बलअद्भुतकीलवसत्तमगासुरआयुकरी । जिनसासनतुल्यनसासनहैजिनदेवसमान
नधर्मधरी ॥ ४०२ ॥ नहिकल्पसमानतरोवरहीसुरराजमतंगसमानकरी । नहिऔ

पधपारदसिधसमोजिमकेसारंसहसमानहरी । रवितेजसमोग्रहरिक्षनहीजिनदेवस
मानन धर्मधरी । इसकारणसम्यकवंतसभीजिनदेवभजेचितभक्तिभरी ॥ ४०३ ॥
ढिनरात्रकहामणिकाचकहाविषश्रंमृतहिंसकचालकहा । हरिस्यालकहापरनागकहा
वहुश्रंतरपंडितमूढमहा । नृपसुंदरभीलकुचीलविषेधनवंतमहानरदीनजहा । जिन
सासनमाहिमृपामगमाहिअमावसपूनंमरात्रतहा ॥ ४०४ ॥ जलविंदकहावरसिंध
कहाषसपाससुमेरुप्रमानमहा । नररंककहासुकुवेरकहाजगस्वानत्रियासुरधेनकहा
पगकागअपावनहंसकहातिलकुल्लरश्रौपरमन्नजहा । गणकाकहुसीलसतीचतुरोइम
श्रंतरोधर्मअधर्मतहा ॥ ४०५ ॥ विनसीलनरूपसुहावतहै नदयाविनधर्मसिधंताविषे
नहिदानविनाधनवंतजसीविनसुद्धक्रयानहिमोपपपे । विनजीवसरीरनकाजाकिसो
जिमश्रंकविनावहुसूनालिपे । जिनदेवभजेविनासिद्धनहीभवजावसुनोसिमरोहारिषे ।
॥ ४०६ ॥ गजछंदनगजंतसिंहजहाजिहमोरश्रहीपसरेनतहा । खगसंघनसंतासिचा

सोमामिच्छाभोगीजाईहंतीकिकीजाईगुंजीहै । भव्वामानीचित्तेत्र्रानमोषेदारेदेवाव।
सेतालाषोलीकुंजीहै । संसारेनिरोधनावामंगलीकल्लाणीभरीसाहूकप्पेपुंजीहै । जेणा
राहीबाणीदेवीनंलद्धीउोकिठीसिधीसाचीसाताभुंजीहै ॥ ४२८ ॥ कोहंसाणंलठोभारी
माननंनागसिंहंगज्जीमायाजालंछंकीहै । लोहंभूतंमंताराहीमोहंसत्तूतिष्षीसत्तीसाहूसूरे
फंकीहै । षाटेफीकेतीपेतूवेनिद्दाछिद्दादोसेवज्जेनिधूलीनिप्पंकीहै । सावज्जंजोगंवज्जे
तीधारंतीपोषंतीसूधीनिक्कषीनिस्संकीहै ॥ ४२९ ॥ कामंगारंपाणीधारापाषंडंमहंबा
धारावेगाववीभारीहै । हिंस्साचंडालीपाविठीतंहंतीनोहिंसावम्मीसुद्धासुठाचारीहै ।
दुठाचारंभिल्लसूरंताडंतीभूवालीसेनावीराधीराधारीहै । संघोज्जालेपण्येसोहेराकाराई
सोमासूधाभव्वासुष्याकारीहै ॥ ४३० ॥ त्र्रादंरुदंकोठंटाहेधम्मंसुकावासंमंडेनिव्वा
णंसंदाईहै । कम्मोजाणंदाहेजोईसूधेहूएकंवासासीसूतेवेदेगाईहै । त्र्रन्नानेकुवेसपत्ती
कादतीरज्जभारीसीनाणावासासालाहै । लोगंटोहेदष्पामोहेएसीवाणीदेवीसोहेदष्ये

कंठमालाहै ॥ ४३१ ॥ संसारेकंतारेघोरेतासंतजीवाणीकाढेमोपेढावीदेवीहै । जंम्मं
रंवुढतंकालंरोगंसोगंदुक्संहंतीसाहंदेवीसेवीहै। चित्तारूवीउन्हाहतीयुव्वावाऊसायादा
ईमोदमेहंवासंती । सुम्मुषंधारिजंजोगंदेवीवाणीगोसेमासीनानंसूरंभामंती॥४३२॥
लच्छीदेवीसालंकारीसातुठ्ठेदारिद्दचूरेएईवाणीमाईजू । सव्वंदुष्यंदोसंचूरेसुक्संसुहंग्गं
संपूरेसाचीसातादाईजू लच्छीदेवीपच्छीअच्छीयालंकारीहंसिंधूकीपेटीमोतादव्वाकी
एवंवाणीदेवीपूरीरिद्धीसिद्धीवुद्धीकित्तीसुषंदव्वासव्वाकी ॥ ४३३ ॥ वादीहथीज्जुं
हंभीमंगजंतीवजंतीसिंहीवादेनादंपूरंती केईवुद्धासिष्यापुन्नाकेईमठ्ठानठ्ठावादेमिछाग
भचूरंती । सव्वेसुतेसथ्थेवेदेसव्वंलोगंगेयारूवीहेयादेयाकारीहै । मग्गंधाईधम्मंदा
ईकल्लाणंनिव्वाणंसाईतिथ्थाधीसोचारीहै ॥ ४३४ ॥ वाणीजूकीसोभादीपेउज्जालीच
दाभागगाहीरामोतीजोतीसी । हंसीगोसेताभाचांदीगोदूधीधाराफेणाभाकुंदूमाला
पोतीसी । चिट्टीचिट्टीसारीसेतीमिठ्ठीमिठ्ठीसारीजीतीऊचीऊचीसेतेही । वदोपूजोरू

रीरीतेभव्वोजीवोआणोचित्तजोचाहोसोदेतीहै ॥ ४३५ ॥ निस्संकोनिदोसीचोषीस
स्मादिठीमेहाविज्ञानाणदेवोदेवीजी। रोगसोगभीतटारोअन्नाणदोससंघारोदेवीदेवा
सेवीजी । दोपाणीजोरीहूंवदोउठाहैचित्तेआणदोइच्छापूरोमाईजी। थारीकित्तीरूवा
णतीइंदाईनोपारंपत्तेसावीसायादाईजी ॥ ४३६ ॥ अथ ज्ञानमहात्मप्रथमचार
पुरुषार्थरचणा ॥ दोहरा ॥ जहाजीवनिजशक्तिसोआक्रमकरबलवाय। सोपुरुषा
रथचतुरविधसतजनदेतवताय ॥ ४३७ ॥ चौपई ॥ धर्मअर्थअरुकामकाहिज्जे चौथे
मोषनामकहिदिज्जे। समदिठीवरतैसमयामै थिथ्यातीमिथ्यातदशामै ॥ ४३८ ॥
मत्तगयंद ॥ छंद ॥ मूरषधर्मकहेकुलरीतकुदष्यदयादिकसुष्टवतावे । हेमनगादिअ
जालकहैधनज्ञानमहाधनधीधरपावे । कामिकहैरतिकामकलोलकुपंडितकामनकाम
सुनावे । मोषगिनेदिवकीगतिकोसठसतअबधकुमोषठरावे ॥ ४३९ ॥ धर्मक्षमादिद
सांगदयामयसाधनधर्ममहापुरुषारथ। सत्तसिधंतपडेगाहिअर्थअटूटअनूपमअथपदा

रथ । द्वादसभांतमहातपकीजिहकामनकामसुनामयथारथ । कर्मनिवारअवंधअडाल
किएनिजमोषमहापरमारथ ॥ ४४० ॥ सोरठा ॥ इहिपुरुषारथचारज्ञानीनिजवल
सोकरै । अज्ञानीसंसारभ्रमैनिवलहुयकर्मवस ॥ ४४१ ॥ दोहरा ॥ वरतेविपेकपा
यमैपापपुन्नमैलीन । सोविवहारीजीवहैवंधनसहितमलीन ॥ ४४२ ॥ जोवैरागीस
मगतीविषेकपायमिटाय । सोशिवगामीशिवभयोवंदोमनवचकाय ॥ ४४३ ॥ अथ
नवरसवर्णनं ॥ दोहरा ॥ नवरसरचणाजगतमैभांतभांतकीहोइ । नवरसरचणज्ञा
नीरिमैकहैसमकतीसोइ ॥ ४४४ ॥ छप्पय छंद ॥ वटणातपऔषधमिलायउपसम
रसमज्जन । सीलचीरमतिगंधध्यानलेपनसोसज्जन । मुकटजिनेश्वरआनप्रभुवचकुंड
लकाने । दयाहारउरकंठस्तवनकरछापसुदाने । समदमसतसंतोषगुणभूषणनाना
भांत । पहिरचढेमनहयसजेरसासिंगारसुभकांत ॥ ४४५ ॥ अघकुलफोडउषाडभूमि
घटसुद्धसवाररी । धर्मवीचवहुवोयषेतफललहैअपारी । तपसंजमविवहारवहुतउद

नसोकीनो । कर्मअरीसोभिडेराजधनसुभपदलीनो धर्मअर्थपुरपारथीपायोजसजग
सूर । सोभतसुंदरवीररसकरवैरीचकचूर ॥ ४४६ ॥ जगतजतदुपदेपदयाचितवेसुभ
भावे । कर्मपिंजरेबंधजालतेतुरतछुडावे अक्षाक्षुधाहरंततोपपकवानपवावे । वंचनसा
लाकुगतिताहिकोत्रासमिटावे । अंधकूपअज्ञानथीकाढेसतसुपदेत । करुणारसरूपा
दिपतवंदोशिवसुपहेत ॥ ४४७ ॥ जिनवरगणधरसाधुसतीदरसणअतिहरिखे । वंद
नपूजनभगतिप्रेमसुनवचगुनपरिखे । विकसतसुषदृगकर्मरोमराईउलसंते । चितमेंअ
तिआनंदपायसुभकाजकरंते । हासमहारसरूपसजसोभतज्ञानगंभीर । समतासज
नीसंगरलपावेभवजलतीर ॥ ४४८ ॥ प्राक्रमधनुतपबाणषडगतीषणवरज्ञानं । वर
छीविरतविवेकतबरसिरपरसुध्यानं । क्षायकचक्रप्रहरणधारसंग्रामसचाया । मोह
सैनपतिभूपसाथझूझबललाया । रुद्रमहारसरूपधरमोहादिकअरिचूर । चिदानंदज
यश्रीलहीवसैमुक्तिपुरसूर ॥ ४४९ ॥ रक्तिविंदउत्पत्तअसुचपुरणनाहिथिरतन । कवि

सनघरअघमूलकुगतिदायकचंचलधन । बिपयभोगबहुरोगकष्ठदायकजगमाहीं ।
दारासुतपरिवारपेदकारीसंगनाहीं । सर्वदर्वनासीलपीसभथीभएउदास । रसभिव
ससीरूपमैरमैत्यागभवत्रास ॥ ४५९ ॥ अटवीइहिसंसारघोरतिहकर्ममहावन । वि
परसमैफलफूलपत्रसाषाजडदारण । कालजरारोगादिसिंहअहिसूकरवारण । कुग
तिषानअतिविषमसर्वहीदुषकोकारण । इहिविधलपसंसारकीभएमहाभयभीत । भय
रसरूपीसमगतीताकीएसीरीत । अद्भुतवाणीसुणीअर्थअद्भुतमैजानै । अद्भुतप्रभुको
रूपशक्तिबलगुणदरसाने । अद्भुतमुनिवरलब्धधर्मसीलादिदिपंते । तपसंजमफलदे
वरिद्धवैक्रीयधरंते अद्भुतआतमरामबललषराजतगुणधाम ज्ञानीज्ञानविलासइमअद्भु
तरसअभिराम ॥ ४६० ॥ विषयकषायमिटायसुद्धचेतनअविकारी । अलपअपंडअ
नंतज्ञानकेभएभंडारी। वंधजालकोतोडसुद्धसंवरनिजराहीं । मनपाम्योविश्रामअनूप
मशिवमाहीं । कर्मघातकीचारहणचहुकोकरबलपीन । संतभएसंतीकरणसंतरसेसर

करुणासंतीकरणहाससुवि
लीन ॥ ४६१ ॥ गाथापतिसिंगारबीरसैनापतिसोहै । करुणासंतीकरणहाससुवि लासेमोहै । कोटवालरसरुद्रविभतसीदुष्टहटावे । भयऋरिदलनेभयोचित्ररसमंत्री
भावे । सांतरायकैउपवसेसभरससोरसशांत । ज्ञानरायकोमित्रऋतिवसैसाथसुभ
क्रांत ॥ ४६२ ॥ सोरठा ॥ चिदानंदमैज्ञानज्ञानविषेचेतनवसै । यततत्तजिमपरमा
ननहिवियोगपावैकबै ॥ ४६३ ॥ मत्तगयद छंद ॥ सत्तकुसत्तऋसत्तऋसत्तकुजोगु
णादर्वकुसोगुणजाने । संसयनाशप्रकासकलोककुसाधकमोषकुचेतनमाने । जीवऋ
जीवकुभिन्नकरैऋघपुन्नलपैसभऋाश्रवभाने । सर्वयथापरचेनिजराफुनबंधकुतोडरसे
शिवथाने ॥ ४६४ ॥ सर्वसुव्यापकज्ञाकरूपऋलेपवसेश्रुतिवेदपुराने । नित्यऋना
दिऋनंतऋषंडअनूपमशक्तिचिदानंदजाने । ऊरधमध्यपतालविषेगुणग्रामकरैबहुलो
कसियाने । आत्मरामकुप्राणमईप्रभुज्ञानस्वरूपजिनंदवषाने ॥ ४६५ ॥ छप्पय ॥
रुद ॥ समदमसतसंतोषसीलसंवरविवेकतप । दंसणचरणसुध्यानधीरसंवेगपरमपप

दानादिकबहुसूरसंगजाकेअतिसोहे । समीपमाकरुणादिरूपवंतीमनमोहे । जिहअटू
टभडारधनअमितअनंतअगाध । समतानगरीराजथिरनमोज्ञानसिवसाध ॥ ४६६॥
रिसमदछलसठलोभसोगसंतापपरमभय । आरतरुद्रप्रमादिकामाचितभावविषमनय
दुष्टाचारविकारसूरजिहसाथघणेरे । घरणीहिंसाकुमतिआदिभटपापबतेरे। बंधरूप
मिथ्यातपतिहैगलीमअज्ञान । ताकेभयभंजनअरथसेवोश्रीपतिनान ॥ ४६७ ॥ स
मगतिअनुव्रतमहाव्रतछदमस्तपुरोके । देवसुपबहुभांतलोकपरलोकसुरोके । परमा
नदअनूपपुरेकेवलसंजोगी । शांतअजोगीदेतजीवताहिहोतअभोगी । कर्मचूरससार
तजवधनतोडसुछंद । सिद्धभएजिहकेभजेजयोज्ञानजगचंद ॥ ४६८ ॥ करणीज्ञान
समेतऊचपददेवणहारी । ज्ञानविनादुषदेतजन्ममरणेसंसारी । अंकविनाबहुसूनका
मनाहिआवनलेपे । ज्ञानविनाकरतूतएमपंडितजनदेपे । परममित्रहैजीवकोज्ञानराय
गुणवंत । वैदविवकरजोरकैहरजसचितहरषंत ॥ ४६९ ॥ दोहरा ॥ रविसासिमणि

दीपकतडतअगनआदिजगदर्व । ज्ञानप्रकाससमाननहिनमोज्ञानगुणसर्व ॥ ४७० ॥
हैशिवलाभकलाभलीज्ञानकलासुषदैन । कर्मकलाकुकलाजगतभाषतैहैजिनवैन ॥

दूमल छंद ॥ कम लबंधयुग्म ॥ भुव
लापकलाकुकलाकु टलाचपलासछला
वहुलालचला । रि सलागरलाअघला
पमिलादुपलापफला कुफलाबहुला शिवला
भकलासुकला विम लासुषलाभमलावहु
लाअटिला चितला उभला निवलाभक
लातजलालचलाषप लादुकला ॥ ४७२ ॥
मुनिलालभलायुत लाजसलासरलातम



लालचलाहिषला । शिवलाभकलामनलाइरला सुहुलासविलासमिलाअचला ।

सुकलाधवलासवलाकमलाअपलागरलाभथलाअतुला । अघलापदलासुघलापफ

ला चितलइ भला शिवलाभकला ।

॥ ४७३ ॥ न वका ॥ दोहरा ॥

सदाज्ञानवनमोरमो धरम धामसुभवास

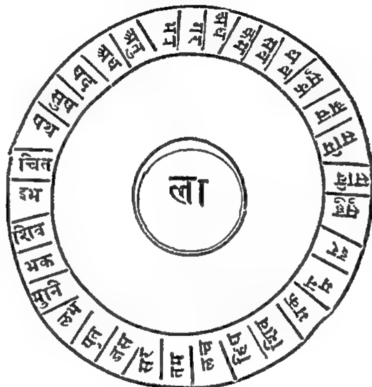
सावधानहुयभगाति धरहोवोप्रभुकेदास

॥ ४७४ ॥ बंधनजी वअजीवामिलअघपु

नआश्रवहोइ । संव एनिजराते मुकतित्र

यत्रिकनवतसोइ ॥ ॥ ४७५ ॥ पापरु

पयको दुप्यफलपुन्न रुपफलसुख । दोऊ



वधन जगतमै टूटेवधनमुक्ष ॥ ४७६ ॥ भुयंगप्रयात ॥ छंद ॥ घणाहीनमाता

पितानारिपूते । धनोधामवासोसुचीरोविभूते । महारोगपीडघणे अंगहीने । जिसे लीने ॥ ४७७ ॥

पापकीने तिसेदुक्ष हिंसाम्रुषा । अदित्त रसावल ॥ छंद ॥ मानं । कपटलोभ कालपरिग्रहि रिस पानवपानं ।पिसुन हितवैरकला हिअवि मिलया जाही । मि रित्तअरित्त कूडछल ठारहिमाहीं॥४७८॥ ध्यादिष्टीभावपापअ

॥ अथ पुत्रफलदाति विलव ॥ छंद ॥ कनकवर्णसरीरनिरामयं । कनक

मानकभूषणसंचयं । कनकमंदरसेजसुहावनी । कनकमानकमंडतभामणी ४७९ ॥

कनकदंडधरीकिंक रवने । कनकशा
लकुठारभरेघणे । कनकसाजत नाग
रंथहयं । कनक संचयंपुन्नफले.दयं
॥ ४८० ॥ नराच ॥ छंद ॥ सुभाक्ति
नीरथानक सुसेन चीरदिजिया । म
नोसुवैन देहसोत थाप्रनामकीजिया
भवंतपुन्ननौ विधेमु नोसुवुद्धवंतजीकरंत
जीवजोइहोहुवंतपुन्नवतजी ॥ कडका ॥ छंद ॥ ४८१ ॥ जीवतोनित्यसो



नित्यचेतनसदाकर्मसंजोगगतिजोनधारी । पापलोहेमइंपुन्नंहाटकघडीदुविधवेडी

महामोहमारी तो डवेडी छुटमोहकी

फंदते मुक्तपुरराज थिरलहि अनंतो ।

सच्चदानंद परमात मादेवजी नमोकर

जोरहरजस करंतो ॥ दोहरा ॥ श्री

जिनवाणी स्वरस्व ती अमित अनादि

अनंत । कहाकहे कवि अलपमति प

गवतनभाविरतत ॥ ॥ ४८२ ॥ बंदोवा

मृतमयभवजनमुदितहर्णदुषदोष

ल मयसंयमसुद्धधारसतो

रपदपाथरिद्धकौतुककी

मलपधर्मकर्मभलहरक

णीदेवसति । जोभाषीएस्वाम । बंदोनाणीसवयती । सोभाकीहै धाम ॥ ४८३ ॥

॥ यमदा ॥ अलंकार ॥ दोहरा ॥ जिहजिहबाणी सरदही तिहतिहसमग

तिपाय । करकर करणी कर्म पयाशि

वशिवपहुचेजाय ॥ ॥ ४८४ ॥ चक्र

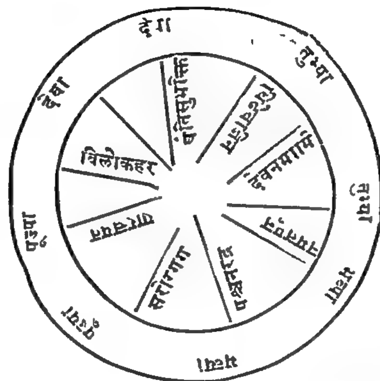
वध ॥ दोहरा ॥ सुनसुन जिनधुन

ज्ञानगुन दिनदिन तनमनलीन । चुन

चुनगुनगण आन मनधनधनजन अ

नदीन ॥ ४८५ ॥ सरूबंध । सवैया

सुनजिनवचन रुच रअमृतमयभवजन



मुदितहरणदुपदोप । सुपकोधाममहासोभामयसंपतसुद्धधारसंतोष सुरपदपाय

रिद्वकौतिककीभोगेभोगश्रतुलमनपोप । सुभलपधर्मकर्ममलहरकर श्रविचलश्रमि

लपरमपदमोप ॥ ॥ ४८६ ॥ दोहरा

समगतिमैं सुभग तिवसैंसेवोसदा सु

जान । सासनमैंम हिमावधै पावोऊच

स्थान ॥ ४८७ ॥ श्रष्टकोण ॥ पदा

कार तिलक वसंत ॥ छंद ॥ देवाधिदे

वजिनदेवनमामितु भ्यांतुभ्यां नमंतसु

नयश्रनेरेंद्र भव्यां भव्यांसरोर गगन

रचयंतपज्यां । पूज्यांविलोकहरपांतिसुभाक्तिदेवा ॥ ४८८ ॥ वृक्षवंधमालनी छंद॥

जलजसरसजेतीवक्रशोभाप्रभूकी । जलजसरससेतीदंतभानाथजूकी । जलजसर सताईकोमलाईकरोकी । जलजसरसगंधोस्वासल्लेतेस्वरोकी ॥ ४८९ ॥ शंकर ॥

पशुगतिगमनभयहरदुरतदलपर

रपकरभगतचितधरश्रर्चजिनवर

छंद ॥ सरवर ॥ बंध ॥ नरकपशुगतिगमनभय हरदुरतदलपरहरण । नरहरष करभगगतचितधरश्ररचजिनवरचरन । नरचतुरसुरश्रसुरउडगणगहितजिनपदस

रन । नरसफलकरजनमभज जिनधर्मसभसुभकरन ॥ ४९० ॥ इंद्रवज्र ॥ छंद ॥
कोकर्मचूरेजिनधर्मनीको कोकष्टकाटेयपनाथजीको । कोदेवपूजोमुनिराजटीको को



नेमाराधी



नित्यवासोगतिपंचमीको ॥ ४९१ ॥ सारंगी छंद ॥ सर्वगुरुवर्णछणकणाबंध ॥

मानेसाचीवाणीभापीज्ञानागाधजी । धीरामानेपूरेपुन्नेहोवेधम्मालाधूजी ॥ ४९२ ॥
॥ चैाको वध ॥ शंकर ॥ छंद ॥ वसुदेवदानोनरफणीसेऊजिने संसारसोमारश्री

व
सु दे व
दा नो न र फ
णी से ऊ जि णे सं सा
र सो मा र श्री जि न रा ज
जी त्यो चि त प्र मो द अ पा र वै
कुं ठ का र न त प त प्यो
प्र भु द मो गो स त
से व सा चो सु
वा क त्रि
लो

जिनराजजीत्योचितप्रमोदअपार । वैकुंठकारणतपतप्योप्रभुदमोगोसतसेव । साचो

सुवाकत्रिलोकसामीनमोश्रीजिनदेव ॥ ४९३ ॥ साटक ॥ छंद ॥ चौपड बंध ॥

व दै स के न जि धू सा

सो

श्व वत्मा दा सके ता यो रि

सोसाधूजिनकेसदैवसमतादेवसभापजसो । सोतारूभवासिंधघोरतरपेसोभेज

जिसो । सोज्ञानीगुणसिंद्धरत्नभरियोताकेसदात्मावसो । सोवंदोशिवहेतपापहरणं

शो ल प शो इ

ता म स औ म द

गावेयशोपारसो ॥ ४८४ ॥ गतागतमत्तगयंद ॥ छंद ॥ साथीया बंध ॥ तामस

श्रौमदलोभम्रहार रहाम्रभलोदमऔंसमता तामरयादसधींमनदास सदानमधीसद

विगरे

पयकांजिकिछीटप

भवुमंभम्रपामतवै

हितमित्रजहाछलहैसु

याकलधौतकुघातपया

विगरे

तपपुंजकपायचढेप

गेन्द्रपराजञनातकरी

विगरे

दऊचकुसगतते

विगरे

यारमता । तामगहीगरमाततसंत । तसततमारगहीगमताताम तनेहकरोलपसोइ ।

इसोपलरोकहनेतमता ॥ एकसकार ॥ वरणी ॥ दोहरा ॥ सुरसूसासीसीस सोससरसीसिसोसीस । संसेसोससरसीससोससोसाससुसीस॥४१५॥आदिअंतएक स्वर दूमल ॥ छंद ॥ विगरेपयकांजिकिछीटपयाकलधौतकुधातपयाविगरे । विग रेतपपुंजकपायचढेपदऊचकुसंगतितेविगरे। विगरेकुलजातकलंकलगैनृपराजअनीत करीविगरे । विगरेहितमित्रजहाछलहै सुभधर्मम्रपामतितेविगरे ॥ ४१६ ॥ सुधरे सठ पंडित संगतिते अविनीत कला धरते सुधरे । सुधरे मिल पारस लोहसही अरुताम्र रसायणते सुधरे । सुधरे विप औपध वैदनते मलयागरते तरुवा सुधरे सुधरे ठगहिसक साध थकी भवकोड अघा तपते सुधरे ॥ ४१७ ॥

अथकामधेन कबित्तरचणा दोहरा ॥ चौपई दोहे सोरठे ॥ उोर अडिल्ल कवित्त एकसवैयेमोप्रगट । कामधेनसुणमित्त ॥ ४१८ ॥ मत्तगयंद ॥ छंद ॥ श्रीजिनचंद मुनिदकु वदनदेवमनुष्यहियेहितधारण । भक्तिकरीअघवृंदकु षंडणध्यानधनुक्षसभी

तनिवारण । मेटमहाभ्रममोहकुनाटकज्ञानकुरासकुरूपविथारण । जौंमिलपारसलोहसुहाटकवानकुपाससुभूषणकारण ॥ ४९९ ॥ चौपई ॥ श्रीजिनदेवमुनिंदकुवंदन भक्तिकरीअघवृंदकुषंडन । मेटमहाभ्रममोहकुनाटक ज्यौंमिलपारसलोहसुंहाटक ॥ ॥ ५०० ॥ देवमनुष्यहियेहितधारण । ध्यानधनुक्षसभीतनिवारण । ज्ञानकुरासकुरूपविथारण । बाणकुपाससुभूषणकारण ॥ ५०१ ॥ दोहरा ॥ श्रीजिनचंदमुनिंद को वंदनदेवमनुष्य । भक्तिकरीअघवृंदकों षंडणध्यानधनुष्य ॥ ५०२ ॥ मेटमहाभ्रममोहको नाटकज्ञानकोरास । ज्यौंमिलपारसलोहसुंहाटकवानकुपास ॥ ५०३॥ ॥ सोरठा ॥ श्रीजिनचंदमुनिंद वंदनदेवमनुष्यही । भक्तिकरीअघवृंद षंडणध्यान धनुष्यसो ॥ ५०४॥ मेटमहाभ्रममोह नाटकज्ञानकुरासकों । ज्यौंमिलपारसलोह हाटकवाणकुपासकु ॥ ५०५ ॥ अडिल्ल ॥ श्रीजिनचंदमुनिंदकुवंदनदेवमनु । भक्तिकरीअघवंदकुषंडणध्यानधनू । मेटमहाभ्रममोहकुनाटकज्ञानकों । ज्यौंमिल

पारसलोहसुहाटकवानकों ॥ ५०६ ॥ कवित्त॥ श्रीजिनचंदमुनिंदकुवंदनदेवमनुष्य
हियेहितधार । भक्तिकरीअघवंदकुपंडणध्यानवनुष्यसभीतनिवार । मेटमहाभ्रममो
हकुनाटकज्ञानकुशसकुरूपविथार । ज्यौंमिलपारसलोहसुहाटकवाणकुषाससुभूषण
कार ॥ ५०७ ॥ इति कामदेव ॥ सोरठा ॥ समकितपाईजीव ओडकाशिवपुरजा
वसै । मिथ्यावंतसदीव जनममरणगहिभवभ्रमै ॥ ५०८ ॥ छप्पय छंद ॥ इकध्या
वेविवतोडतीनधरचारपछारे । पंचजीतपटपालसातमैचितनाहिडारे । आठमथेनव
साजधारदसइकदशमाने । बारहरचतेरहहटाय चौदहाथितजाने । पनदसविधि
प्रभुउरधरैसोलसहरसतरेधरै । होइअठारहरहितहींअजरामरपदवीवरै ॥ ५०९ ॥
जहानकृतसंसारजनमम्रतालिंगजोगवय । गतिसन्नानकपायदेहइंद्रियनवरणमय ।
लेसाप्रजासंठाणसमुदघाताभयनाहीं । कर्मअंकनाहिप्राणचिहनमूरतनहिताहीं ।
अलपअमितअविचलअगमपरमजोतिपरवेश सर्वलोकसिरमुकटहोरमोसदासरवेश

॥ ५१० ॥ मत्तगयंद ॥ छंद ॥ पातकरीरलहेनकबेजबरुत्तवसंतसुधाघणहोई ।
जातकुत्र्प्रथलषेनहिरूपधनंतरसेजवऔषघढोई । पावकगर्भपाषानजलेरहिकालघणे
विनआगनसोई । त्यौंनलहैसममेटमिथ्यातत्र्प्रभव्यसुणेजिनत्र्प्रागमजोई ॥ ५११ ॥
दोहरा त्र्प्रादित्र्प्रंतनाहिलोककों तामैंजीवत्र्प्रनंत । विनासिद्दभवभेदकहु पणसैतेसठ
वंत ॥ ५१२ ॥ ॥ छप्पय ॥ छंद ॥ इकसौइकनरभेदनाडिन्नवेसुरकेजानो । पुटवी
पाणीत्र्प्रगनिवायदोदोविधिठानो । त्र्प्रयवनस्पतिभेदतीनविगलिंदियगिणयति । दस
त्रियंचसगनरकसर्वदोसैइकात्रिंशति । इसविधिगिणतपरजापतेइसोत्र्प्रपरजापतिजवे
इकसौइकसंमुछमनुजपंचसैसुतेसठसवे ॥ ५१३ ॥ त्र्प्राडिल्ल ॥ कर्मभूमिनरज्ञो
निपंचदसजानिए । तीसत्र्प्रकरमीभूमिजुगलीएमानिए । छप्पणत्र्प्रंतरदीपजुगलीए
हैसही । इकसौइकनरभेदासिधंतेइमकही ॥ ५१४ ॥ भवनपतीदसपनरापरमाहा
मिया । सोलसव्यंतरदसोत्रिजंभकनामिया । दसोजोइसीदेवतीनहैकिलविषी ।

नवलोकंतकदेवलोकछव्विसुपा॥४१५॥ सूपमवादरभूजलपावकवायके । इमाविवबणे
त्रितीयअनंतीकायके । विगलावितिचउरिंदिजलेचरथलगया । षेचरभुजपरउरपर
सन्निअसन्निया ॥ ५१६ ॥ घम्मावंसासेलाअजणानामहैं । रिठामघामाघवईदुःख
कोठामहैं । रतनसकरवालूहपंकधूमपहा । तमातमतमानरकगोतसातेकहा ॥
॥ ५१७ ॥ इकसौइकनरभेदतहांतिउपाजिया । विष्टादिकदसचारविषेसंमुछिया ।
परजापूरीतीनरुपरचतुराथिया । मरउपजेनरतिरियचाविपेविनजुगलिया ॥ ५१८ ॥
॥ दोहरा ॥ दयासिंधुचितशांतिरसाशिवपुरवारेवंत । त्रिभुवनपतिसरपूज्यप्रभु ।
नमोदेवअरिहंत ॥ ५१९ ॥ सर्वज्ञानदर्शणकरी जिहपायोजगमर्म । तिहभाष्योउप
गारहित जैनजवाहरधर्म ॥ ५२० ॥ सभथथिोडेपुरुषनरात्रियतांतेसंष्यात । वादर
अग्निप्रजापती । असंष्यातगुणथात ॥ ५२१ ॥ देवअनुत्तरवासके तांतेगुणेअसंप ।
तिहतेनवग्रीवेगके ऊपरकेगुणसंप ॥ ५२२ ॥ तिहतेमध्यमहेठइमअचुयअरणतहेव

पाणतआणतलगसभी । गुणसंखिज्जगिणेव ॥ ५२३ ॥ असंपिज्जगुणचहुदसे सत्तम
खितछठीव । कल्पआठमेसातमे पचमिनरकेजीव ॥ ५२४ ॥ लंतकदिवचउथीनरक
तांतेपंचमस्वर्ग तीजीनर्कचतुर्थदिव । त्रितियकल्पसुरवर्ग ॥ ५२५ ॥ दुतियनर्कनर
गर्भविन दुतियकल्पसुरताय । गुणअसंपपणवीसइह बोलकहैजिनराय ॥ ५२६ ॥
दुतियकल्पत्रियप्रथमसुर तांतियगुणसषेव । तांतेभवणेदेवगण गुणअसंखभणएव ।
॥ ५२७ ॥ तांदेवीसेपजगुणअसंषेजगुणठान । धुरनरकेपंषीपुरुष बोलबतीसमजान
॥ ५२८ ॥ खचरीथलचरथलचरी । जलचरजलचरनीय । व्यंतरव्यंतरणितथा
जोतिकसुरतिहतीय ॥ ५२९ ॥ खेचरथलचरजलचरं लिंगनपुंसकतीन । गुणसंख्या
तसस्मांहिगिण चउतालीसप्रवीन ॥ ५३० ॥ चउरिंदियपज्जत्तगा तांतिगुणसंख्यात
पंचिंद्रियपज्जत्तगा विसेसाहिएजात ॥ ५३१ ॥ बेतेइंद्रियप्रजापति विसेसाहीएदोइ
पंचिंदियअपज्जत्तगा असंखिज्जगुणहोइ ॥ ५३२ ॥ चउतेबेइंदियधरा अपजत्तगगि

एजीव । विसेसाहियातीनमै ब।वणवोलकहीव ॥ ५३३ ॥ बादरपंचप्रजापती अप
जत्तगछैजान । असंखिज्जगुणइकदसे तेसठमपहिचान ॥ ५३४ ॥ वनपत्तेयनिगो
दभू जलवाऊपणएह । तेउपत्तेयनिगोदभू नीरपवनछइतेह ॥ ५३५ ॥ अपजत्तग
सूपमअगनि गुणअसपचउसठ । अपजत्तगभूसूहमे विसेसाहिपणसठ ॥ ५३६ ॥
अपजत्तगजलवाउदश सूपमसैभीएम सूपमतेऊप्रजापता । संष्यातेगुणतेम ॥५३७॥
सूषमपुटवीजलपवन प्रजापतीएवोल । विसेसाहिएलपलहो । इगसत्तरमोटोल ॥
॥ ५३८ ॥ गुणअसंषअपजत्तगा सूषमजीवनिगोद । गुणसंषज्जसोप्रजापति लपो
ज्ञानधरमोद ॥ ५३९ ॥ तिहतेअधिकअभव्यहै पडिवाईतिहतेय । सिद्धप्रभूबादर
वणे प्रजापतीअधिकेय ॥ ५४० ॥ गुणअनंतइहचहुविषे सत्ततरमोजान । प्रजाप
तीबादरसभी विसेसाहीएमान ॥ ५४१ ॥ अपजत्तगबनबादरे असंखिज्जगुणहोइ
अपजत्तगबादरसभी । विसेसाहिएसोइ ॥ ५४२ ॥ विसेसाहीएसभकहै बादरजि

णवरदेव। अपजत्तगवनसूहमे गुणअसंषभणएव ॥ ५४३ ॥ सभसूषमअपजत्तगा विसेसाहियाजीव। सूषमबणेप्रजापती गुणसंखिज्जसदीव ॥ ५४४ ॥ प्रजापती सूषमसभी विसेसाहिएजान। सभसूषमइमहाअधिक पटअसीतमोठान ॥ ५४५ ॥ बारहबोलामाहिकहु विसेसाहिएहोण। भवनिगोदवनस्पती एकिंदियतिखजोण ॥ ॥ ५४६ ॥ मिछादिठअविरतीय, सकसाईछउमथ। संजोगीसंसारीया सर्वजीवइ णअथ ॥ ५४७ ॥ इहविधिबोलअठानवे पन्नवणासोजान। इणमैंबरतबासठा लप हरजसधरध्यान ॥ ५४८ ॥ एकिंदियसूषमइतर विगलिंदियातिहुजाति। सन्निअस न्निपनिंदिया सातबोलविहुभांति ॥ ५४९ ॥ प्रजापतीअप्रजापती। इमचउदसाजि यभेव गुणठाणेचउदेकहे जोगपंचदसएव ॥ ५५० ॥ उपयोगेबारहसहित लेस्या छहुकेसाथ अलपाबोलजोबासठा कह्यामुनीश्वरनाथ ॥ ५५१ ॥ बोलबोलमैंबासठा लपोभांतिबहुहोइ। समकितधारीसद्दहे सोउडकशिवढोइ ॥ ५५२ ॥ इति अल्प

पाबोध बोलकी दोहरा ॥ नमस्कारभगवानकों करोंसुगुरुकीसेव कर्मआठकेभेद
अब कहोंसिमरजिनदेव ॥ ५५३ ॥ मरहटा छंद ॥ सुणज्ञानावरणीदरसञ्रवरणी
औरवेदनीञाउ मोहनिनामायंगोत्रंञायं ञष्टकर्मइहनाउ । ञठकर्मुतपातीशिवमग
घातीइहबंधणसंसार । इहहतसुखपावै सिद्धकहावैश्रीजिनकह्योविचार ॥ ५५४ ॥
कवित्त ॥ मतिज्ञानावरणीपहलीसुण श्रुतिज्ञानावर्णीदूजीय। औधज्ञानञावरणी
तीजीमनपरजोज्ञानावरणीय । पंचमकेवलज्ञानावरणी जोक्षयसोइज्ञानप्रगटीय ।
पांचोक्षयेभएकेवलधराजिनञरिहंतसर्वज्ञानीय ॥ ५५५ ॥ चक्षुदरसणावरणीकही
एवीजीनामसुणोजुञचक्षु औधदरसणावरणीतीजी केवलिदरसणवरणप्रत्यक्षु निंद्रा
अरुनिंद्रानिद्राफुनिप्रचलाप्रचलाप्रचलाञक्षु थीनद्धीनवदरसणा वरणीक्षएसरवदर
सीपदलक्ष ॥ ५५६ ॥ कर्मवेदणीसाताकहीएपुन्यउदयहुखदायकहोइ । दूजीनाम
ञसाताकहीए पापउदयदुखदायकसोइ । बधेजीवदुहूंविधिबंधणस्वर्णलोहबेडीस

णवरदेव । अपजत्तगवनसूहमे गुणअसंषभणएव ॥ ५४३ ॥ सभसूपमअपजत्तगा
विसेसाहियाजीव । सूषमवणेप्रजापती गुणसंखिज्जसदीव ॥ ५४४ ॥ प्रजापती
सूपमसभी विसेसाहिएजान । सभसूषमइमहीअधिक षटअसीतमोठान ॥ ५४५ ॥
वारहवोलामाहिकहु विसेसाहिएहोण । भवनिगोदवनस्पती एकिंदियतिखजोण ॥
॥ ५४६ ॥ मिछादिठअविरतीय सकसाईछउमथ । संजोगीसंसारीया सर्वजीवइ
मअथ ॥ ५४७ ॥ इहविधिवोलअठानवे पन्नवणासोजान । इणमैंवरतेबासठा लप
हरजसधरध्यान ॥ ५४८ ॥ एकिंदियसूषमइतर विगलिदियतिहुजाति । सन्निअस
न्निपनिंदिया सातबोलविहुभांति ॥ ५४९ ॥ प्रजापतीअप्रजापती । इमचउदसाजि
यभेव गुणठाणेचउदेकहे जोगपंचदसएव ॥ ५५० ॥ उपयोगेबारहसहित लेस्या
छहुकेसाथ अलपावोलजोवासठा कह्यामुनीश्वरनाथ ॥ ५५१ ॥ बोलवोलमैंबासठा
लपोभांतिवहहोइ । समकितधारीसद्दहै सोउोडकशिवढोइ ॥ ५५२ ॥ इति अल

पावोध वोलकी दोहरा ॥ नमस्कारभगवानकों करोंसुगुरुकीसेव कर्मआठकेभेद
अव कहोसिमरजिनदेव ॥ ५५३ ॥ **मरहटा छंद** ॥ सुणज्ञानावरणीदरसअवरणी
औरवेदनीआउ मोहनिनामायंगोत्रंत्रायं अष्टकर्मइहनाउ । अठकर्मुतपातीशिवमग
घातीइहवंधणसंसार । इहहतसुखपावै सिद्धकहावैश्रीजिनकह्योविचार ॥ ५५४ ॥
कवित्त ॥ मतिज्ञानावरणीपहलीसुण श्रुतिज्ञानावरणीदूजीय। औधज्ञानआवरणी
तीजीमनपरजोज्ञानावरणीय । पंचमकेवलज्ञानावरणी जोक्षयसोइज्ञानप्रगटीय ।
पांचोक्षयेभएकेवलधरजिनअरिहंतसर्वज्ञानीय ॥ ५५५ ॥ चक्षुदरसणावरणीकही
एवीजीनामसुणोजुअचक्षु औधदरसणावरणीतीजी केवलिदरसणवरणप्रत्यक्षु निंद्रा
अरुनिंद्रानिद्राफुनिप्रचलाप्रचलाप्रचलाअक्षु थीनद्धीनवदरसणा वरणीक्षएसरवदर
सीपदलक्ष ॥ ५५६ ॥ कर्मवेदणीसाताकहीएपुन्यउदयदुखदायकहोइ । दूजीनाम
असाताकहीए पापउदयदुखदायकसोइ । बंधेजीवदुहूंविधिबंधणस्वर्णलोहबेडीस

नयकरिभएसिद्धप्रभुजगतासिरोमणिषदनकोइ ॥ ५५७ ॥ अनुतानु
व ापरतापानीपरतापानीसंजुलमित्त । रिसमदकपटलोभचहुचहुविधिपोडसभेद
कपायप्रकृत्त। हाससोगरतिअरतिदुरगंछाभयात्रिवेदपणवीसकहित्त । समकितमिश्र
मिथ्यातमोहणीसभक्षयचथाष्यातचारित्त ॥ ५५८ ॥ आउनरकातिरयंचमनुजकीसुर
कीचहुविधिकहीसिद्धंत। घेरेसरबजीवसंसारीजनममरणभवाथितिविरतत । जघनस
मेतअंतमहूरतउोडकउदधिततीसथारंत । इहक्षयकीणसिद्धअविनासी अविचलअक्ष
यअपंडअनंत ॥ ५५९ ॥ ऊचगोत्रपदवीइंद्रादिकराजादिकसुखभोगधरीव । नीच
गोत्रचंडालादिकनरनारकीतिरयचकुगतिकलीव। नीचऊचदोबंधणबंधेरायरंकरूपा
जगजीव । दोक्षयकरश्रीसिद्धविराजे सर्वलोकासिरमुकटसदीव ॥ ५६० ॥ गताचा
इंद्रीपांचोगिणपंचदेहत्रिउपांगवषान । बंधनपंचपंचसंघातणछयसंघयणाछयसं
। पंचवरणदोगंधपंचरसअष्ठफरसदोचालपछान । चराणुपुरवीदसत्रसत्रादिक

वरचणा
१०८॥

विनयधारइहमदअघमूचे ॥ ५८२ ॥ देतेदाननिवारेजोई। वधदानअंतरासोई।
परकेलाभअंतरापावे। लाभअंतरावहुदुखआवे ॥ ५८३ ॥ भोगभोगतेकोंअंत्राई।
आपणभोगनसैदुखथाई। इमहीउपभोगनमैंजानो। इमहींवलप्राक्रमसैंमानो॥५८४॥
पांचोअतरायक्षयकीनो। सभव्यापककेवलपितलीनी। सर्वामांहीसभतेन्यारे। चार
कर्मक्षयचहुयुतसारे ॥ ५८५ ॥ मनवचकायातिहुंजोगनते। करणकरावणअणमोद
नते। वधेकर्मसुभासुभप्रानी। भवभवभ्रमैंजनममरनानी ॥ ५८६ ॥ इसभवकृत
इकइसभवपावे। पिछलेकृतइकइसभवआवे। इकइतकृतआगेपावेंगे ॥ इकापिछ
लेआगेआवेंगे ॥ ५८७ ॥ कर्मवधचहुधाजिनवानी। प्रकृतिवधथितिवंधप्रानी।
फुनिअनुभागतथापरदेसा। उदयआइभोगेसरवेसा ॥ ५८८ ॥ जोअघएकसत्व
हणतांते। गुणअनंतइकभूतवधाते। तिहतेगुणअमंषप्रानीको। पंचादियहणसंघ
गुणीको ॥ ५८९ ॥ वेइंदियतेलपतेंइंदिय। सहसगुणोतिहतेचउरिंदिय। सौगुणप

चिंदियवधयाको । तिरयचतेअधिकोमनुजाको ॥ ५९० ॥ समदिष्टीहणतांअघमारी तिहतेवहुअघहणव्रतधारी । तिहतेसंयमवंतहणीकों । रुलेनरकतिरयंचघणीको ॥ ॥ ५९१ ॥ इगअघअधिकअधिकतेथाता । इमहींपुन्यफलेंदियसाता । तीर्थंकरचक्री हरवलधर । राजादिकसेठादिजुगलनर ॥ ५९२ ॥ पुन्नसुफलभोगेजगमांही । पापफलेनरकेतिर्यंचजांही । तजोपापहिंसादिकसारे । धर्मकरोजोभवजलतारे ५९३॥

॥ दोहरा ॥ नरभवआरजखितसुकुल । इंद्रियपंचअहीन । अरुजदेहथितिसुगुरु मिल । जिनवाणीसुणलीन ॥ ५९४ ॥ सरधाकरणीधर्मकों । इहदसदुर्लभजान । महापुन्यतेधुरलहै । अधिकअधिकतेआन ॥ ५९५ ॥ घणेजीववसुलगलहै । नवसै एकवतकेइ । पूरेपुन्नोदयलहै । आराधिकपदजेइ ॥ ५९६ ॥ सुरउपजेनहिफिर दिवै । नहिनरकेगतिपाइ । इमादेवनरकननारकी । विवनरतिरयंचथाइ ॥५९७॥

चौपई ॥ कहूंगतागतिजीवांकेरी । सुणोभवकजनरीतिचंगेरी । अथमनरकजावेप

णवीसो । नरपणदसकर्मकभूमीसो ॥ ५९८ ॥ तिरियपणिंदियसन्निअसन्नी । इहद
ससर्वपापफलमन्नी । दुतियअसन्नीवर्जतविंशत । जावत्ततीयवर्जभुजपरगति ॥
॥ ५९९ ॥ चउथीपेचररहितअठारह । पंचमिथलचरविनासतारह । उरपरविनपो
डसपष्टीसो । सप्तमत्रियविनसोलसहीसो ॥ ६०० ॥ महापापसोंइहगतिहोई । वि
नभोगेछूटेनहिकोई । नरकपेत्रदुखदसविधिभारो । परमाधरमीसाथदुखारो ६०१
धुरतेपष्टीलगजीवांकी । गतिनरतिरयंचमाहिभवांकी । विंशतसन्नीमोसोआवे । स
प्तमितिरयंचपंचकहावे ॥ ६०२ ॥ भवनपतीव्यंतरमोआगति । इकसउइकनरजो
निग्रजांपति । दसतिरयंचप्रजापतियाकी । इकसौग्यारहइणबोलाकी ॥ ६०३ ॥
जोतिकसुरधुरकलपलगामो । आवेपंचासामोतामो । कर्मअकर्मभूमिपणताली । नर
तिरयंचपंचमननाली । चालीदुतियकलपमोंआवे । हेमईणवयदसेहटावे । भवनप
तीव्यंतरजोइसिया । चउउपजेतेईसंवासिया ॥ ६०४ ॥ कर्मभूमिनरातिरयंचवसे ।

वादरभूजलवणेतेईसे । इमहीकल्पसुधर्मोशानो । उपजेजिनवरवचनप्रमानो ॥
॥ ६०५ ॥ तृतीयकल्पतेअष्टमताई । आगतिगतिवीसामोथाई । कर्मभूमिनरतिरयं
चमाही । उपरेनरहीतिरयचनाहीं ॥ ६०६ ॥ भूजलवणेदुसयतेताली । आवेविर
वासुणोसंभाली । भवणोविंतरपरमाधरमी । तिरजंभकजोतिकनिंदकरमी ॥६०७॥
दोइकल्पलगचौसठसारे । अठतालीतिरयचउचारे । तीसदुविधिनरकर्मभूमिया ।
इकसौइकसंमूछमनूया ॥ ६०८ ॥ गतितिरयचअठतालीमांहीं । इकसौएकत्तीनर
तांही । तेउवाउइकसोउनासी । नरतिर्यंचभेदजिनभासी ॥ ६०९ ॥ तेउवाउति
र्यंचहिजावे । अठतालीबोलामोंआवे । इकसौऊनासीनरतिरिया । त्रयविगलिंदि
यगतिआगतिया ॥ ६१० ॥ संमूछिमपंचिंदियतिरिया । इकसौऊनासीआगतीया
नरतिर्यंचनर्कधुरउपजत । इकपचासव्यंतरभवणेयुत ॥ ६११ ॥ नरसंमूछिमइकसौ
उनासी । नरतिरयंचातिहमोगतिभासी । तेउवाउताजिइकसोइघत्तर । आवेतहांल

सन्नीतिर्यंचामोआगति । एकासीसुरसप्तनरकगति । अठ
षोश्रुतपत्तर ॥ ६१२ ॥ सन्नीतिर्यंचामोआगति । एकासीसुरसप्तनरकगति । अठ
तालीतिरयंचासेती । इकसौएकतीनरएती ॥ ६१३ ॥ जावेनरकामांहिकाहिजिम ।
अष्टमकल्पलगैसुरमैतिम । नरतिर्यंचसभनमैंजावन । पुन्नपापकृतफलकोंपावन ॥
॥ ६१४ ॥ तेउवाउसत्तमाषितजुगला । इहाविननरगतिआवेसगला । मानसजोनी
सभमेजाई । गर्भजकीगतिइहाविधिथाई ॥ ६१५॥ कर्मभूमिनरतिर्यंचसन्नी । अजा
पतैजुगलामैंपुन्नी । आवेजावेसुरगतिमांही । परमाधर्मीकिलविषनाही ॥ ६१६ ॥
कहीगतागातिजीवाकेरी । पदवीधरकीसुणोचगेरी । तीर्थकरअठतीमासेती । आयो
होइकहीगुरुएती ॥ ६१७ ॥ नवलोकंतकछव्वीसुरपुर । तीननर्कतेआयोचितधर ।
पहलेपापकरीनरकाऊ । वंधीपीछेपुन्नादिपाऊ ॥ ६१८ ॥ सोधुरनर्कजाइदुखभोगे ।
निकससुपदवीपाइसुजोगे । वीसबोलउतकृष्टाराधै । सोतीर्थंकरपदवीलावै ॥६१९॥
केईवीसआराधैसारे । केईतामैंकेतधारे । अतिउतकृष्टभावसुभकारे । निजरेकोटकर्म

वरचणा
॥११६॥

वहुभारे ॥ ६२० ॥ जवउतकृष्टमहारसआवे । तवतीर्थंकरगोतबंधावे । केईजिनच
क्रीपदसाहितं । बंधेपदवीसभदुखरहितं ॥ ६२१ ॥ अरिहंताकीकीरतिकरते । सिद्ध
प्रभूकेसुजसउचरते । अष्टप्रवचनमातगुणकहते । श्रीन्रतगुरुजीकेगुणगहते ६२२॥
थेवरजीकेगुणगणगाए । बहुश्रुतधारकगुणदीपाए । श्रीतपसीजीकेगुणगावे । वत
सलकरणेइहसुभभावे ॥ ६२३ ॥ समकितसुद्धपालनाचोपी । विनयरीतिसोंआतम
पोपी । षष्ठअवस्यकसुद्धकरंते । अतीचारविनसीलधरंते ॥ ६२४ ॥ पिणलवादिप
रमादमिटावे । अतिरुचिसोंतपकरहरपावे । तजिगिलानवीयावचकरणी । सुद्धस
माधिचित्तमोधरणी ॥ ६२५ ॥ ज्ञानअपूरवगहणोपावे । श्रीसिद्धंतकीभक्तिदिपावे ।
श्रीजिनवचनसिद्धंतप्रकासे । करप्रभावणाधर्महुलासे ॥ ६२६ ॥ वधनतीर्थंकरपद
वीके । वीसबोलजानोइहनीके । मल्लिनाथअधिकारेभाष । ग्याताश्रुतिसमवांगे
आपे ॥ ६२७ ॥ तीर्थंकररचणाधुरभाषी । तिहअतिसयसंषेपीराषी । अववरणो

करोगा। विनसजाइजिनराजसंजोगा । इहचउतियअतिसययुतस्वामी। सदानमै
हरजससिरनामी ॥ ६४४ ॥ श्रीजिणवरजगगुरुजगदीसो। प्रभुअरिहंतसर्वज्ञानी
सो। श्रीदेवाधिदेवतीर्थंकर। वीतरागकरुणाकरशंकर ॥ ६४५ ॥ धर्मोत्तमपुरुषो
त्तममुनिवर। धर्मदेसणादायकसुषकर। इंद्रपूज्यभगवंतजसंसी । उत्तममातपिता
कुलवंसी ॥ ६४६ ॥ भवजलतारकधर्मजहाजी। भवदुषहरशिवपुरसुपसाजी। स्व
यंबुद्धिरिषिधर्मविथारी। मिथ्यातमहरसमदुतिकारी ॥ ६४७ ॥ कर्मशत्रूहणानिर्भय
स्वामी। सुद्धसमाधिवंतशिवकामी। दंसणनाणचरणपरमोत्तम। जतीधरमदसधा
कथतोत्तम ॥ ६४८ ॥ जांकीभक्तिकीयाअघनासे। प्रगटेबुद्धिरिद्धिसुहुलासे । लहै
भव्यशिवादिबमैवासो। नरभवराजभोगधनरासो ॥ ६४९ ॥ ऐसोश्रीपरमेश्वरमेरो
मनवंछितमुखदेतचंगेरो। वंदोमनवचकायसजोगे। चाहतहौंपहुचोशिवलोगे ६५०
दोहरा ॥ श्रीतीर्थंकरदेवकी रचणाकहीवपान। सकलकर्मक्षयकरभए अटलसिद्ध

भगवान ॥ ६५१ ॥ इति तीर्थकरस्वरूप ॥ दोहरा ॥ नागोत्तमपुरुषोत्तमो । चक्र
वर्त्तिपदएहमहापुन्यफलतेलहै । तारचणासुणलेह ॥ ६५२ ॥ चौपई ॥ वक्रवर्त्तिके
वोलबियासी । एकनरकसुरभेदइकासी । परमाधर्मौकिलविपरहिया । महापुन्यच
क्रीपदलहीया ॥ ६५३ ॥ दानसुपात्रअभयअतिभावें । साधुभक्तिविनयादिदिपावे
तपचारतश्रुतपठणपढावन । महाकपायविकारहटावन ॥ ६५४ ॥ घणेजीवकोंसा
तादीनी । सर्लभावकरणीसमकीनी । सीलपालनिर्दोपादिपावन । गुणअनेकचक्री
पदपावन ॥ ६५५ ॥ वंधचक्रपदइकभवलेवें । तांतेचक्रपतीपदवेवें । उत्तममंडली
कभूपतिके । पुत्रहोइजननीसतवातिके ॥ ६५६ ॥ घणाकालभूपतिपदभोगे । चक्र
रतनआवेसुभजोगे । अनुक्रमचउदेरतनसुराए । यक्षसहसइकइकयुतआए ६५७॥
तनरपवालसहसदोदेवा । सोलसहंसयक्षकरसेवा । तीनादिसालवणोदधिताई । उ
तरादिसाचुलहेमवंतताई ॥ ६५८ ॥ यामैंदेससहंसवतीसा । तांपतिआज्ञामांहिस

पुरुषरतन
धीरो ॥ ६७४ ॥ भोगेभोगअनूपमसारे । मनवंछितयुतसभपरिवारे । पुरुषरतन
चतुनिजपुरहोवें । हयगजगिरिविताडवनढोवे ॥ ६७५ ॥ आयोचक्रसुआयुधसाला
सुरसहंसयुतरूपरसाला । पडगदंडअरुछत्रतथाही । आयुधशालाचारोताही ॥
॥ ६७६ ॥ मणीकागणीचरमजुआवे । आघरतेंसुरसाथसुहावे । श्रीचक्रीश्रीघर
ढीगआवे । नवनिधिनवनिधीसतेंपावे ॥ ६७७ ॥ नेसप्पेपंडगइहनामो ॥ पिंगल
सर्वरतनसुखधामो । महापदमअरुकालकहिज्जे । महाकालमानगभाणिज्जे ॥ ६७८ ॥
संखनिधीवनमोइहनामो । नवनिधानसुरपूरणकामो । चलेचलेटिकपाटकजावे ।
गुप्तभूमिप्रभुहेठसुहावे ॥ ६७९ ॥ वासीधरविजयाधविचाले । महानदीदुहअंतर
वाले । उत्तराढत्रयषंडसुलक्षण । जलधिबिताढवीचत्रयदक्षण ॥ ६८० ॥ गुफापोल
गजसीसमणीधर । तिहचढकागणीकरेसुदुतिवर । पुलवनाइढकउमगानिमगजल ।
ढपंडकेविचलेथल ॥ ६८१ ॥ षटषंडनाथआपविचलेदुह । रमयशेषसैनापति

पसिमुह । आनमनाइरतनबहुल्यावे । प्रभुकीभेटकरेजसपावे ॥ ६८२ ॥ हयगय
रथपायकचतुरंगी । सैनासजीअपारसुरंगी । षटषंडसाधस्वैपुरप्रभुआवे । महाम
होछवकरहरपावे ॥ ६८३ ॥ भोगेभोगअनूपमपूरे । उदयभएमुकृतअंकूरे । केईच
ऋपतीसुभजोगे । धर्मरुचीवैरागीभोगे ॥ ६८४ ॥ जनममरणदुखतेंभयभीते । त्या
गसर्वसंयमपदलीते । कर्मषपायासिद्धप्रभुहोए । कैंसरासंयमपदलोए ॥ ६८५ ॥ क
ल्पाकल्पाविषयअवितारी । थोरेभवशिवपदअधिकारी । केईगृहीरहैसुखकारी । द
यादानसुकृतविस्तारी ॥ ६८६ ॥ सोसुरगतिपावेसुभभोगे । सुखदुखहैसभकर्मसं
जोगे । जेनहिधर्मविषेमनलाई । महारंभपरिग्रहसकसाई ॥ ६८७ ॥ भोगभोगतृ
ष्णारसमाते । वहुतजीवाहिंसामोराते । घणेकरमबंधेमरतांते । नरकगएधुरतेसप्ताते
॥ ६८८ ॥ सुभकर्माकासुभफलहोई । असुभतणाफलअसुभजोई । चक्रवर्त्तिरचणाइ
हभाखी । हैवहुतीमैथोरीआखी ॥ ६८९ ॥ जंवूदीपपण्णतीमांही। कहीभरथचक्रीकी

तांही । इमलखलहोसरवकीरचणा । भवकप्रतीतिधरोजिनवचणा ॥ ६९० ॥ तीर्थं
करचक्रीहारिहलधर । प्रतिहरतेसठपुरुपोत्तमवर । वज्ररिपभनाराचसंघयणी । सम
चउरंससंठाणसुनयणी ॥ ६९१ ॥ इतिचक्रवर्त्तिरचणा ॥ दोहरा ॥ सकलजगत
पतिसिद्धप्रभु । वंदोमनवचकाय । हरिहलधररचणाकहूं । सुणोभवकचितलाय ॥
॥ ६८२ ॥ चौपई ॥ पहलेहरिहलधरतेहोई । हरिवैरीप्रतिहरिपदसोई । सोलसहं
शकेराजे । तांकीआज्ञामांहिविराजे ॥ ६९३ ॥ चिरत्रिषंडराजसुखभोगे । हलध
रिउपजेविधिजोगे । हलधरतेयासीबोलाते । दोइनरकइक्कासिसुराते ॥ ६९४ ॥
विवतीसनरकविवहीसो । नवलोकंतकदिवइकीसो । हरिहलधरपदवीदोभ्राता
विवन्यारीमाता ॥ ६९५ ॥ प्रथमरामहरिपीछैहोवे । हरिस्मृतहलधरसंयम
छलेभवविवसंगीप्यारे । महामोहआपसमोभारे ॥ ६९६ ॥ इकदुक्करकरणी
। साथनियाणहरिपदबंधो । पापेबंधनरकगतिजानो । पीछेसूकृतसाथानि

यानो ॥ ६९७ ॥ महापुन्यफलग्रतिवलवानो । वासुदेवइमनकेविमानो । दुतीयोसा
थकर्मसंजोगे । उसीठामकेभएवियोगे ॥ ६९८ ॥ पदवीरामधर्मयुतपुन्ने । वंधीइम
उत्तमदुहुन्ने । उदयहोइदुहुकोइकठामे । हलधरहरिभ्राताछविकामे ॥ ६९९ ॥ अनु
क्रमजोवनवयबलवंते । सूरवीररणधीरधरंते । होणहारतेप्रतिहरिसेती । कलहउठी
किसकारणहेती ॥ ७०० ॥ दोनोदलसैनासाजिआए । महापराक्रमीरूपसुहाए । ना
नाविधिआयुधधरविज्ञा । युद्धभूमिसजमदबहुकिज्ञा ॥ ७०१ ॥ संपपंचजनलुठीए
दीनो । धनुपगदारथसुरतेलीनो । औरशस्त्रबलविद्याकेती । हरिकोसुरदीनीहित
सेती ॥ ७०२ ॥ गरजेप्रतिहरिहलधरदेवा । दुहपक्षेसुरकरतेसेवा । घणायुद्धकीना
भिडसूरे । हरिशविसमरिपुतमवलचूरे ॥ ७०३ ॥ भिडेपररुपरप्रातिहारिहरजी । शस्त्र
घणेविद्याबलधरजी । ओडकप्रतिहरिवक्रचलावे । सोहरिहाथआइविगसावे ॥
॥ ७०४ ॥ पूजचक्रहरिदेवचलावे । सोप्रतिहीरसिरछेदल्यावे । भईजीतिहारिहल

धरजीकी । फूलवृष्टिसुरनभनेमूकी ॥ ७०५ ॥ सर्वभूपसिरआइनिवाए । वासुदेव
पदवीप्रगटाए । राजसहंसदेससोलाका । निर्भयकरणसरणनिवलाका ॥ ७०६ ॥
गरणीराजसुताबहुसुंदर । भोगभोगकनकमणिमंदर । सबदरूपरसगंधरुपरसी ।
मनवचकायकरासुषसरसी ॥ ७०७ ॥ वासुदेवकेसवहरिनामी । चक्रगदाधरत्रय
पंडस्वामी । संपपंचजनपूरणहारो । नारायणरणगर्जणभारो ॥ ७०८ ॥ कोडिपु
रुपबलधररणसूरो । रिपुमदमर्दणप्राक्रमपूरो । आठमहाबलहलमुसलायुध । रमेरा
मबलदेवसघृतत्रध ॥७०९॥ घणाकालसुषभोगेभारी । कीरतिजगतिमांहिविस्तारी
धर्मरुचीसुनिजिणवरवानी । श्रीजिनकेवलसाधुबषानी ॥ ७१० ॥ दानदयासुकृति
बहुदीने । मुनिवरहुवतिमहोछवकीने । पिछलेकीएनियाणेकारण । संयमअंतराय
हरिधारण ॥ ७११ ॥ वासुदेवसंयमनाहिपावे । मोहहेतुभाईनहिजावे । हरियुद्धादि
महाकारिकरमे । नर्कआयबंधेविनधरमे ॥७१२॥ आऊखीनभएम्रतहोवे । नरकजाई

दुखमांहिपरोवे । भ्रात्तवियोगवडोदुखवलधर । फुनिविवेकलहिचितसमाधिकर ॥
॥ ७१३ ॥ संयमधारसाधुपदसाधे । कर्मपपावेमुक्तिश्रराधे । केईकेवलज्ञानीहोई ।
मुकतिभएनहिश्रावेंसोई ॥ ७१४ ॥ कैसरागसंयमपदधारी । सुरविमानीयामोंश्र
वितारी । थोरेभवकरिशिवगतिपावें । दोऊसापसिद्धंतसूणावें ॥ ७१५ ॥ इमहरि
हलधररचणाजानो । सभतेवडोधरमहीमानो । सभसुखदायकधर्मसहीहै । धरम
कीर्त्तिसिद्धंतकहीहै ॥ ७१६ ॥ इति वासुदेवबलदेवरचणा ॥ दोहरा ॥ श्रटोत्त
रशतनामतें । श्राइभवेसरवग्य । नरपणदशतिरयंचपण । सुरइकयासीवग्य ॥
॥ ७१७ ॥ नर्कचारजलभूवने । प्रजापतीम्भजान । केवलदंसणज्ञानकी । गतिइक
मुकतिवषान ॥ ७१८ ॥ दोसउपछत्तरथकी । श्रायोहोइमुनीस । पंचनरकसुरनवन
वति । कर्मभूमिनरतीस ॥ ७१९ ॥ इकसउइकसंमुछिमा । तिरयचचालिजान । तेउ
वाउविनइमसभी । गतिसुरऊचविमान ॥ ७२० ॥ सोरठा ॥ पष्ठमनरकमिलाइ ।

दोसउछिहत्तरथकी । आयोपदवीपाइ । मंडलीकश्रावकतथा ॥ ७२१ ॥ दो० ॥
मंडलीककोचारगति । श्रावकसुरगतिपाइ । आशधिककल्पाविपे । इतरसुधर्मेताइ
॥ ७२२ ॥ जोश्रावककेकहेहै । सत्तमापितअधिकाइ । दोसउसत्तत्तरथकी । आयोस
मकितपाइ ॥ ७२३ ॥ संख्याउनरतिर्यंचमो । पटनरकालगजाइ । तीनविगलजल
भूवने । एकासीसुरथाइ ॥ ७२४ ॥ सैनापतिगाथापती । विसकर्माद्विजजीय । दोस
उएवत्तरथकी । रतनात्रियाइमहीय ॥ ७२५ ॥ षष्टनरकचउरानवे । देवअनुत्तरटाल
कर्मभूमिनरतीसते । चालीतिरयचभाल ॥ ७२६ ॥ इकसउइकसंमूछिना । एवत्तरस
उदोइ । चक्रीकेपाचोरतन । इनतेआएहोइ ॥ ७२७ ॥ दोसउसत्ताहठकी । हयग
यरतनकहीस । एकासीसुरसगनरक । तिरयचअठचालीस ॥ ७२८ ॥ कर्मभूमि
नरतीसतें । मनुजसमूछिमजेइ । इकसउइकइहसभमिले । आगतिथानकनेइ ॥
॥ ७२९ ॥ रतनइगिंदियसातकी । दोसउतेतालीय । चउसठसुरविवकल्पलग ।

प्राणमिलेउत्पतिकहै । क्षयेप्राणमरणेव । भववासीजियहैसही । अविनासीनिज
देव ॥ ७४० ॥ नरेनविनपूरीप्रजा । सुरनारकिजुगलाहि । तेसठपदवीऔरवहु ।
कह्येजिनागममांहि ॥ ७४१ ॥ कीएकर्मजीयआपने । भोगेपरकेनाहि । मातापि
तासुतनारिपति । भ्रातादिकजगमाहि ॥ ७४२ ॥ मिलबंधेकितहूंकर्म । सोमिलभो
गेजीव । कीएकराइसलाहके । साथीभएसहीव ॥ ७४३ ॥ जीवअजीवभवेनहीं ।
तिमेअजीवनहिजीव । जोहैसोसोईरहै । भवसोमिल्योसदीव ॥ ७४४ ॥ जौलौजी
वअजीवयुत । तौलौसंसारीह । तजिअजीवनिजशक्तिसों । सिद्धअटलपद
वीह ॥ ७४५ ॥ इति गतागति ॥ अथ प्रहेलकाअलंकार ॥ अंतर्लापिका ॥
छप्पयछंद ॥ कौणउताणजोगजगतसुखकितामितलागो । कोमुनितपपरतापकौण
गतिभोजनत्यागो । सूकरकिहताजिजाहधर्मकिहकालसुहोता । रिपुसोंकिंकृतजोग
कौणधुरभोजनदाता । किहसमअगिणतसुगुरुगुणकहांलहैहरिहरपमन । किहवदे

पूजेसुगतिरिषभादिकतीरथकरन ॥ ७४६ ॥ उत्तर रिण १ पण २ भाल ३ दिन ४ कण ५ तीन ६ रण ७ थण ८ कण ९ रण १० रिषभादिकतीरथकरण ११ सवैया किंसमचाहतकोपुनरष्यरकोंणानिषेधपिमाकिनबंधी । कोसभभैंकिहरूपधरयोलघु कोवनपोपककोकुलसंधी । कोणभलौगुणकाहिधरैकविचालसुकौणभईबहुधंधी । काहितजैसुविरागचहैनृपकंचणभूपणकंजसुगंधी ॥ ७४७॥ उत्तरएकएकअक्षरका । क. सुप १ च. पुनः २ न. निषेधे ३ भू. धरती ४ पं.नभ ५ न. नगन ६ कं.जल ७ जं. पुत्र ८ सु. सुष्ठार्थे ९ गं. गतार्थे १० धी. बुद्दी. ११ कंचणभूषणकंजसुगंधी १२ विहिलापिका ॥ दोहरा ॥ सूधीसाईमोक्षकी । उलटीदुर्गतिदेत । तीनवरणजानो चतुर । विवलघुइकगुरुहेत ॥ ७४८ ॥ उत्तर ॥ समता ॥ सूधात्यागणजोगहै । उलटाधारणजोग । इकवरजनइकदेवणे । दोअक्षरमयहोग ॥ ७४९ ॥ उत्तर ॥ मद ॥ दोहरा ॥ बहुमैंविचमैंसुखविषै । तीननवरणाचितधार । सुभकारजगुणकोंकरै । सत

जनकहैविचार ॥ ७५० ॥ उत्तर विवेक ॥ दोहरा ॥ जिनजतिसुरनरपशू । परमजी
ततिसजीत दोइवरणउलटेत्रिया । जिहमोहेजगरीत ॥ ७५१ ॥ उत्तर ॥ रना ॥
जेहडे अक्षरप्रणाके ओही उत्तरके दोहरा ॥ कागजकीछलनीत्रिया । कावलवा
लीनार किन्नरमोहेसुरकरी । कंदर्पजितसार ॥ ७५२ ॥ कोकरताअघजालकों ।
कोहरताहितमित्त । कामरतीडरतीनहीं । कालगतीअपवित्त ॥ ७५३ ॥ वहिलापक्ष
दोहरा ॥ कोवरजनकाविनयरिपु । किहफुनिचाहतदेत । जिहविनकेवलरिद्विनाहि
जगगैउतमएत ॥ ७५४ ॥ प्रथमोमंडणग्रहीकों । दूजोवरजनसोइ । तीजोयुतती
नोमिले । वडेपुन्नसोंहोइ ॥ ७५५ ॥ धुरविनकायररणगहै । विचविनद्वादशभांति
अंतविनामुनिवरनजे । तांगणपतिहिमक्रांति ॥ ७५६ ॥ उत्तरतीनोदोहरेका । मान
स ॥ दोहरा ॥ कोरिपजितकातनविना । केत्रियकोसुतदंद । कासुपङ्गसंसयहरा ।
जिणवाणीगुणसिंधु ॥ ७५७ ॥ उत्तर जिण १ वाणी २ गुण ३ सिंधु ४ जिणवाणीगु

णसिंधु ५ छप्पयछंद ॥ कोसोभतनिसधामकौणश्रुतिमांहिसुहाई । दुरबुद्धीनरकौ
णदरवविनकौणकहाई । कवभोजननहिकरैसुव्रतधरगुणकोजोवे । मत्रयत्रतंत्रादिसि
द्धवहुतेकवहोवे । श्रीजिनवरचौवीसमोकवसीझैजगप्यात । उत्तरसमणाकाकहादी
वालीकीरात ॥ ७५८ ॥ उत्तर दीवा १ वाली २ लीकी.लीकलगानणवाला ३ कीरा
४ रात ५ दीवालीकीरात ६ दीवालीकीरात ७ छप्पय ॥ काचपलाकोसहृणेहकोव
रजनमांही । कौणठाकमोकौणदंडधरदुतीयोआही । किहतेहीणोसीतकौणमहिपा
लकहाही । कोवारहाविधितपेकवैनरक्रोडामांही । बहुधरमोनरनारिकहुकहांधरैहित
चाह । सभकाउत्तरइहकहामाहोमांहीमाह ॥७५९॥ उत्तर मा १ हो २ मा ३ ही ४
गाहो ५ माही ६ माह ७ माहोमाहीमाह ८ ईही ९ सवैया ॥ सतगुरुमिलेतवेक्या
कहीएझूठसभाकिहतजीएसाथ । किहकोभ्रमणानिवारणवेछोकौणऊपमासदकेमाथ
कौणसोभतोसैनामांही किहपालेमानवपशुसाथ । कौणजापकरवहुसुपहोवे इहतुन

लीन । श्रीरिषिदिन्नदयानिधिस्वामीजांकेचउसठइंद्रअधीन । श्रीजिनराजपदमप्र
भुवंदोसेवोजिमजलचाहतमीन । श्रीव्रतधारजिनेसरपूजोपावोधिषणाहोइप्रवीन ॥
॥ ७६८ ॥ श्रीसुपासजिननायकसिमरोजिहजीतेमोहादिकसूर । वंदोशामचंदगुणसा
गरसुंदरकरुणानिधिभरपूर । श्रीचंद्राप्रभुकेगुणगावोजनममरणदुखजावणदूर ।
युक्तसेणप्रभुदीरघवाहूवंदोजिहझाडीअघधूर ॥ ७६९ ॥ वीतरागश्रीसुविधिनाथजी
पुष्फदंतसोहेभगवान । उतश्रीअजितसेणजिनराजतधर्मोत्तमपुरुषोत्तमजान । श्री
सीतलदिवशिवसुपदायकसाथमुनीगणगणधरदेव । सत्तसेणसियसेणप्रभुभजसक
लसुरासुरकीनीसेव ॥ ७७० ॥ श्रीदेवाधिदेवश्रीयंशंवंदोभक्तिधरीमनमांहि । देवश
रमजीकेपगपूजनतेसुखहोतदोषदुखजाहि । वासपूजजीकेपगपूजनतेपाएसुखअच
लअनत श्रीनिष्पतिशस्तश्रीयंशंवंदेचउसठइंद्रमहंत ॥७७१ ॥ जिहासिमरेचितहो
इविमलअतिविमलनाथसेवोचितलाय । श्रीयंशेज्वलजिनवरवंदोईरवरततीरथपति

थाय । श्रीअनंतजिनगुणअनंतमयबहुजनतारतरेभवनीर । श्रीअनंतसिंहसेणनाम
प्रभुउतषेत्रेसोहतवरवीर ॥ ७७२ ॥ धर्मोत्तमश्रीधर्मनाथजीधर्मसंघशिवपंथनिवाह
श्रीउपशांतिजिनेसरपूजोभवअनेककेपातकलाह । धरमचक्रपतिशांतिनाथजीशां
तिकरेसेवोधरभाव । उतश्रीगुपतिसेणधरमोत्तमतीनजोगसजगुणगणगाव ॥ ७७३
जयश्रीकुंथनाथअरिमर्दणसर्वज्ञानदर्शणगुणवंत । नमोनमोअतिपार्श्वस्वामजीबहु
जनतारतरेभगवंत । कर्मशत्रुहणराजलीयोथिरश्रीअरिनाथधर्मचक्रेश । श्रीसुपास
जिनस्वयंबुद्धिप्रभुजिहसेवेसुरउरगनरेश ॥ ७७४॥ सीलगुणोदधिमल्लिनाथजीकरे
सिद्धिभवजनकेकाज । जगन्नाथमरुदेवमहामुनित्रिभुवनतिलकमुकतिपुरराज । श्री
मुनिसुव्रततीर्थंकरकोंधरैध्यानमनवंछितासिद्ध । श्रीनिरवाणगतंवरवंदोलहोअनूपम
अविचलरिद्धि ॥ ७७५ ॥ श्रीनमिनाथहाथादेवाशिवसुखसेवकलहेरहेथिरहोइ ।
खीणदुःखश्रीशामकोष्टजीजांकाजसपसरयोतिहुलोइ । दयानिधानअरिष्टनेमीजीसे

नमथश्रादिशत्रुसभजीत । श्रग्निसेणजिणमहासेणजिनकीनीमुकतिरमणिसोप्रीत ॥
॥ ७७६ ॥ श्रीजिनपार्श्वनाथजगविश्रुतिवंदोसेवोचितउछरंग । नमोखीणरजमुत्तउ
त्तजीजिहलगुचारजामपंचरंग । अंतमवर्द्धमानप्रगटेजिनपंचमहाव्रतधरसितचीर ।
उतश्रीवारिषेणजिननायकजंबूदीपतरेभवनीर ॥ ७७७ ॥ भरथईरवर्तपंचपंचमैचउ
वीसीहोवेजिनधर्म । गणधरसाधुसाधवीश्रावकहरेकर्मपावेवरशरम । श्रीजिनभक्ति
भक्तिमैउत्तमदुर्गतिहरैसुगतिफलदेत । हरजससेवलहोसभहींसुखउोडकासिद्धषेतके
हेत ॥ ७७८ ॥ इति भरथईरवर्तजुगलचउवीसी ॥ दोहरा ॥ मोहमहाभटजीतके
संयोगीपुरराज । नमोंदेवश्ररिहंतजी । करोसिद्धमोकाज ॥ ७७९ ॥ गीयाछंद ॥
इसभरथमोचउवीसजिनवरचक्रपतिद्वादसभए । नवरामकेशवारिपुबलीनवमाराति
हहरिजसलए । तेसठपदोत्तमकोकमांहीप्रगटश्रीजिनवरकहे । जिसभांतिश्रनुक्रम
सोकहाजिहकेसुणेजनसघलहे ॥ ७८० ॥ श्रीरिषभदेवजिनंदप्रथमोभरथचक्रीशिव

गए । श्रीअजितनाथजिनंदमासणसगरचक्रीरिपिभए । संभवप्रभूअभिनंदनोत्तम
सुमतिपद्मप्रभंनमो । जिनवरसुपारसचंदप्रभुजीसुविधिसीतलपगरमो ॥ ७८१ ॥
इहअष्टजिनवारेनचक्रीरामकेशवनाहिभए । जिनभक्तिभूपतिमंडलीकासेवश्रीजिन
सुपलए । श्रीअंसदेवत्रिपृष्ठकेशवअचलरामविराजियो । हयग्रीवारिपुहणकरमहा
एणहरपसोंहरिगाजियो ॥ ७८२ ॥ श्रीवासुपूज्यजिनदप्रगटेहारिद्विपिष्ठविजयवलो
हरिशत्रुतारकअतिवलीतिहमारिहरिराजतभलो । श्रीविमलनाथजिनंदसोभतहारि
स्वयंभूतवभएयो । वलदेवभद्रसुनामसुंदरशत्रमेरुकहरिहएयो ॥ ७८३ ॥ देवाधिदे
वअनंततवपुरुषोत्तमोहरियशधरी । तिसभ्रातमोप्रभुवलधरोमधुकैटभंभंज्योहरी ।
श्रीधर्मनाथजिनदकेशवपुरुषसिंहवषानिए । हलधरसुदर्शणरिपुनिशुभंहारिहण्योइ
मजानिए ॥ ७८४ ॥ पीछेतिसश्रीमघवचक्रीआउपणलषवरसही । सुखभोगतज
रिपिहोइशिवलहिजगतमहिमासरसही । कुछकालवीतेभएचक्रीनामशांतिकुमारजी

त्रणगारपदवीपाइकेवलसिद्धकर्मनिवारजी ॥ ७८५ ॥ इहदोइचक्रपतीजिनंतरमां
हिहोएहैंसही । श्रीशांतिकुंथजिनंदत्र्ररिजिनचक्रवरतीजिनवही । बलशत्रुमारात्रिपं
डस्वामीपुरुषपुंडरीकाक्षए । वलदेवनामअनदरिषहुइशिवगयोइमभाक्षए ॥ ७८६ ॥
तिहतेभयोसंभूमिचक्रीजलधिमरनरकेगयो । पहलादरिपुहणदत्तकेशवनंदणोहलध
रथयो । श्रीमल्लिनाथउनीसमोजिनकर्मक्षयकरशिवगमें । मुनिसुव्रतोत्तमदेवकेपग
महापदमैतेनमैं ॥ ७८७ ॥ जिनत्र्रंतरेहरिशत्रूरावणमारलछमणजसलह्यो । श्रीरा
मचंद्रसुभ्रातनामीपदमनामतथाकह्यो । नमिनाथजिनहारिषेणचक्रीपालसंयमशिव
लहीं । जिनत्र्रंतरेजयचक्रवरतीमुनीपंचमिगतिकही ॥ ७८८ ॥ हरिवंशदेवत्र्ररिष्ठ
नेमीकृष्णकेशवशोभते । रिपुजरासिंधुपछारश्रीवलभद्रयुतधरमेरते । जिनत्र्रंतरेमो
चक्रवरतब्रह्मदत्तसुबारमा । जिनदेवपारसनाथश्रीजिनवर्द्धमानसदानमो ॥ ७८९ ॥
इतितेसठशिलाघापुरुषरचणा ॥ दोहरा ॥ विहरमानजिनबीसजी । महाविदेह

विराज । गुणग्राहीवंदनकरै । भवतारोजिनराज ॥७९०॥ कामणीमोहना छंद ॥
वीसत्र्प्ररिहंतकाध्यानधरचित्तही । गाईएजासुगुणवदीएनित्तही । देवतानाथचउसठ
सोध्यावते । जासुकीरतिकरत्र्प्रंतनाहिपावते ॥ ७९१ ॥ देवत्र्प्ररिहंतसीमंधरस्वामजी
दूसरेदेवसुजुगंधरोनामजी । वाहुजिनवंदीएध्यानधरध्याईए । देवसुवाहूगुणभावधर
गाईए ॥ ७९२॥ देवसुजातजीमोक्षपददेतहैं । श्रीसुसयप्रभूजासुगुणसेतहैं । सिधु
भवताररिषिभाननोस्वामजी । ईसरानंतवीरजविभोनामजी ॥ ७९३ ॥ देवभगवंत
सूरीप्रभूध्याईए । नाथजिनदेवसुविशालगुणगाईए । हूंकरूंवंदणावज्जरंधारजी ।
तारचंद्राननासिंधुभवपारजी ॥ ७९४ ॥ ध्यानधरवंदीएचंदरवाहुजी । देवसुभुयंग
मध्याउशिवचाहुजी । भालनितभावधरईशरवंदीए । नेमिप्रभुध्याइकेदुःखनिकंदीए
॥ ७९५ ॥ देहुत्र्प्रानंदचितवीरसनेसजी । सेवीएभावधरमहाभद्रेसजी । संतिचित
मांहिश्रीदेवयशाकरो । त्र्प्रजितवीरजप्रभूदुःखजगकोहरो ॥ ७९६ ॥ प्रथमसंघय

णतनप्रथमसंठानियं । एकहजारअठलक्षणजानियं। पंचसैधनुषतनतेजरविजानिए देवजघन्यइककोडिलगमानिए ॥ ७९७ ॥ परिपदाद्वादशीमांहिअभिरामते । निरपजनसंतिआनंदसुखपावते । देतउपदेसपयूपसमवैनहैं । पिवैनरभव्यसुहुलासचितचैनहैं ॥ ७९८ ॥ दीपजंबूविषेचारजिणजानिए । धातकीषंडमैंअष्ठाजिनमानिए अष्टजिनअर्धपुहकरविषैहैसही । सत्ताचित्तआनभगवानजीजोकही ॥ ७९९ ॥ सो० विहरमानअरिहंतप्रणमोतुमरेचरणकों । चिंताहरचितसंतकरोसुदर्शणदीजीयो ॥ ॥ ८०० ॥ इति ॥ वीसविहरमानजिनस्तवनं ॥ दोहरा ॥ सागरकोडाकोडिए । ऊणवियालिहजार । वरसअंतराधुरचरम । जिणवरमुकतिपधार ॥ ८०१ ॥ चौपै ॥ वंदोरिषभदेवजिनचंद । सिद्धभएपदपरमानंद । सागरकोडिलाखपंचास । अजितनाथतवशिवपुरवास ॥ ८०२ ॥ तीसलाषकोडिजवगए । श्रीसंभवशिवगामीभए । लाषकोडिदससागरजवै । श्रीअभिनंदनसीझैतवै ॥ ८०३ ॥ तातेलाषकोडिनवथए

सुमतिनाथअविचलपदलए । नवातिहजारकोडिजलरासि । पदमप्रभूशिवपुरीनि
वास ॥ ८०४ ॥ नवेहजारकोडिगातिकाल । श्रीसुपाससींझेभवटाल । नवसउकोडि
जलधिगतिजवै । मुकातिगएचंदाप्रभुतवै ॥ ८०५ ॥ नवेकोडिसागरगातिजान । सी
झेसुवधिनाथभगवान । कोडीनवसागरबीतंत । सिद्धभएसीतलभगवंत ॥ ८०६ ॥
लापछिहाहठवरसछवीस । सउसागरकेसाथकहीस । घाटकोटिसागरतेएह । श्रयिं
शेश्वरसिद्धकहेहै ॥ ८०७ ॥ तिहतेचउपणसागरगए । वासुपूज्यमुकतेसरथए । ति
हतेतीससागरोजान । बिमलनाथशिववासवषान ॥ ८०८ ॥ तिहतेनवसागरभग
वंत । सिद्धभएजिनदेवअनंत । सागरचारगएतिहसमै । धर्मनाथशिवथानकरमै ॥
॥ ८०९ ॥ त्रैसागरपौणापलहीन । शंतिनाथसिद्धामोलीन । आधपलोपमबीतेकाल
कुंथनाथभवभ्रमणाटाल ॥ ८१० ॥ घाटहजारकोडिइकवर्स । पलकाचउथाभागजु
फर्स । इतेकालअरिजिनभगवान । सिद्धभएजगमुकटवखान ॥ ८११ ॥ एकहजार

कोडिवरसंत । मल्लिनाथकीनोभवअंत । चउपणलापवर्पगतिजोइ । श्रीमुनिसुव्रत शिवसुषहोइ ॥ ८१२ ॥ तांतिवरसलाषषटगए । श्रीनमिनाथसिद्धपदथए । लाषपं चवरसांकेअंत । सिद्धअरिष्टनेमिभगवंत ॥ ८१३ ॥ सहसतियासीसगसयसाथ । वरसपंचासापारसनाथ । सिद्धभएटाईसौवर्स । वर्द्धमानसिद्धाकोंफर्स ॥ ८१४ ॥ तीसवर्षलगरहेगृहस्त । वारइवर्ससाधुछदमस्त । जबवयलीवरसांकेथए । सर्वज्ञान दर्शणमयभए ॥ ८१५ ॥ चउसठइंद्रमहोछवकिया । इकदसगणधरपदरिषिथया चउतालीसयसाधुसुजान । ताकीरचणाकहूंवषान ॥८१६॥ पृथवीमातापितावसुभूत गौतमगौत्रविप्रअदभूत । तांकेत्रयसुतविद्यावंत । आएप्रभुढिगअनुक्रमसत ८१७॥ चरचाकरसंसयसभटाल । शिष्यभएपरिवारोनाल । इंद्रभूनगौतमपरासिद्ध । दुती योअग्निभूतिगुणरिद्धि ॥ ८१८ ॥ वायुभूतितृतीयोगुणमाल । पंचपंचसयसाथीनाल हेयगेयउपादेजान । भएदुवालसअंगीभान ॥ ८१९ ॥ चउथोगणधरहैभरद्वाज ।

गौतमनामावियत्तविराज । पचमअगानिविशायणगोत । मोरियपुतोकाशवहोत ॥
॥ ८२० ॥ साडित्रयत्रयसैसंगरली । संयमैपालीव्रतभली । गौतमगोतअकंपतनाम
अयलभायहारियायणस्वाम ॥८२१॥ मेयव्वेयपभासेदोइ । कोडिन्नागोतीतिरिधिहोइ
चारोतीनतीनसैनाल ॥ गणधरपदवीगुणेविशाल ॥ ८२२ ॥ सभचउदेपूरबधरदेव
द्वादशांगाविद्याधरएव । रूपअनूपगुणोदधिपूर । मोहादिकारिपुजीतनसूर ॥ ८२३॥
श्रीजिनविद्यमाननवसिद्धि । राजग्रहीनगरीसुप्रसिद्ध । इद्रभूतसुधर्मास्वाम । पछि
सिद्धभएसुपधाम ॥ ८२४ ॥ दसकीशिषसाषानाहिरही । रहीसुधर्मस्वामकीसही ।
जंबूस्वामीकाशवगोत । तांकेशिष्यसुगुणमयहोत ॥ ८२५ ॥ चरमकेवलीपहुचेमुक्ति
तांकेपट्टदिपैगुणयुक्ति । प्रभवस्वामिकच्चायणगोत । जिणमारगमैरविसमजोत ॥
॥ ८२६ ॥ तांकेशिष्यसिज्जंभवनाम । मणकपितानामीगुणधाम । वछसगोतमणग
केहेत । दसमीकालकरचीसुपेत ॥ ८२७ ॥ तांकेश्रीजसभद्रमुनीस । गोततुंगयाय

कोडिवरसंत। मल्लिनाथकीनोभवअंन । चउपणलाषवर्षगतिजोइ । श्रीमुनिसुव्रत
शिवसुषहोइ ॥ ८१२ ॥ तांतेवरसलाषपटगए । श्रीनमिनाथसिद्धपदथए । लाषपं
चवरसांकेअंत। सिद्धअरिष्टनेमिभगवंत ॥ ८१३ ॥ सहसतियासीसगसयसाथ ।
वरसपंचासापारसनाथ। सिद्धभएटाईसौवर्स । वर्द्धमानसिद्धाकोंफर्स ॥ ८१४ ॥
तीसवर्षलगरहैगृहस्त। वारइवर्षसाधुछदमस्त। जववयलीवरसांकेथए। सर्वज्ञान
दर्शणमयभए ॥ ८१५॥ चउसठइंद्रमहोछवकिया । इकदसगणधरपदरिषिथया
चउतालीसयसाधुसुजान ।ताकीरचणाकहूंवषान ॥८१६॥ पृथवीमातापितावसुभूत
गौतमगौत्रविप्रअदभूत। तांकेत्रयसुतविद्यावंत। आएप्रभुढिगअनुक्रमसत ८१७॥
चरचाकरसंसयसभटाल। शिष्यभएपरिवारोनाल। इंद्रभूतगौतमपरासिद्ध। दुती
योअग्निभूतिगुणरिद्धि ॥ ८१८॥ वायुभूतितृतीयोगुणमाल। पंचपंचसयसाथीनाल
हेयगेयउपादेजान। भएदुवालसअंगीभान ॥ ८१९॥ चउथोगणधरहैभरद्वाज ।

गौतमनामवियत्तविराज । पचमअगनिविशायणगोत । मोरियपुतोकाशवहोत ॥
॥ ८२० ॥ साडत्रयत्रयसैसंगरली । संयमैपालीव्रतभली । गौतमगोतअकंपतनाम
अयलभायहरियायणस्वाम ॥८२१॥ मेथव्वेयपभासेदोइ । कोडिन्नगोततिरिषिहोइ
चारोतीनतीनसैनाल ॥ गणधरपदवीगुणेविशाल ॥ ८२२ ॥ समचउदेपूरवधरदेव
द्वादशांगविद्याधरएव । रूपअनूपगुणोदधिपूर । मोहादिकरिपुजीतनसूर ॥ ८२३॥
श्रीजिनविद्यमाननवसिद्धि । राजग्रहीनगरीसुप्रसिद्ध । इद्रभूतसुधर्मास्वाम । पछि
सिद्धभएसुषधाम ॥ ८२४ ॥ दसकीशिषसाषानाहिरही । रहीसुधर्मस्वामकीसही ।
जंबूस्वामीकाशवगोत । तांकेशिष्यसुगुणमयहोत ॥८२५ ॥ चरमकेवलीपहुचेमुक्ति
तांकेपट्टदिपैगुणयुक्ति । प्रभवस्वामिकच्चायणगोत । जिणमारगमैरविसमजोत ॥
॥ ८२६ ॥ तांकेशिष्यसिजंभवनाम । मणकपितानामीगुणधाम । वछसगोतमणग
केहेत । दसमीकालकरचीसुपेत ॥ ८२७ ॥ तांकेश्रीजसभद्रमुनीस । गोततुंगयाय

एदिनईस । सासंखित्तवायणाकहै । तातेथेरावलीजुअहै ॥ ८२८ ॥ जसोभद्रजीके
विवजान । साधुसाधवीमैपरधान । आर्यसंभूतविजयरिषराज । माटरगोतकरैशिव
काज ॥ ८२९ ॥ भाद्रबाहुजीपायणगोत । श्रीजिनसासणमांहिउद्योत । शिष्यसंभू
तविजयकेसूर । थूलभद्रगोतमगुणपूर ॥ ८३० ॥ सातेभगणीसतीसमेत । सयमप
लेनिजराहेत । तारीकोस्यावेस्यानारि । काममहाभटकोमदमारि ॥ ८३१ ॥ थूलभ
द्रजीकेदुइभए । महागिरीएलावछथए । गोतवसिठसुहथ्थीनाम । दोनोसूरिमहागु
णधाम ॥ ८३२ ॥ सोहस्तीजीकेशिषदुए । सुठीयसुपाडिबुद्धीहुए । तिहकेइंदरदिन
सिषथए । आरजदिनतिसपीछिभए ॥ ८३३ ॥ सिंहागिरीसिंहनीपारिसूर । तपकर
कर्मकीएचकचूर । बालपणेजातीसरन्न । दसपूरवधरहुइइकमन्न ॥ ८३४ ॥ पन्नव
णाउद्धरताजान । आरजस्वामीकरैवषान । दिवढाषिमाश्रमलागोपाय । जनमजनम
केपातकजाय ॥ ८३५ ॥ वलिबाहूबलआद्रकुमार । जिससमरणहुइभवदधिपार ।

कहीपटावलिआगमसार । सेवककोंकरभवदधिपार ॥ ८३६ ॥ दोहरा ॥ जैनदि
पावनजगलक्षण । कर्मनिर्जराहेत । रचीसुररचणाज्ञानहित । पाबणअविचलखेत ॥
॥ ८३७ ॥ भूलचूकयामैजुकछु । सतजनलेहुसुधार । खिमाकरोवखसोमुझे । तुमरो
इहउपगार ॥ ८३८ ॥ निश्चलसमकितधर्मरुचि । निर्भयसुखसतसग । होइप्रभूतु
मरीसदा । भक्तिमजीठरंग ॥८३९॥ श्रीसीमंदरस्वामिजी । वंदोमांगोएह । समो
सरणतवचरणनमि । देखोतवछविजेह ॥ ८४० ॥ श्रवणसुनोवाणीसुधा । पूछोप्र
श्नअनूप । पूरोइछानाथजी । त्रिभुवनतिलकसरूप ॥ ८४१ ॥ दर्शणज्ञानचारित्रवल
चारअनंतसमेत । सोभतहौजगदीसजी । भवजनतारणहेत ॥ ८४२ ॥ छप्यय ॥
॥ छंद ॥ कलस ॥ छंद ॥ अठारहसयसत्तरेवपंचमिथितमांहे । बुदादिनउत्तरमीनचं
दसुवसतउछांहे । कुसपुरवासीओसवालहरजसरचलीनी । सुररचणाजिनधर्मपुष्ठ
समकितरसभीनी । जिहसुतपठचितअरथधरबढैज्ञानसतबुद्ध । नमोदेवअरिहंतजी ।

जोसुरत्रया विभ्रम अरंभ मननाडिगयो । तुमकौन अचंभअचलचलावे प्रलेसमीर
मेरुसिपर डिगमगेनधीर ॥१६॥ धूमरहित वातीगतिनेह प्रकासकत्रभवनघरएह ।
वातगम्मनाही प्रचंड अपरदीप तुवबल्योअखंड ॥ १७ ॥ षिपहुनलिपहुनराहुकी
छाहि जगतप्रकासतहै छिनमाहि । घनआवरतन दाहनिवार रवितेअधकधरेगुन
सार ॥ १८ ॥ सदाउदित विदलिततममोह । विकटितमेहराह अवरोह तुनमुख
कमल अपूर्वचंद जगतप्रकासी जोतअमंद ॥ १९ ॥ निसदिनससी रवीकोनाहि
काम । तुममुषचंदहरेतमधाम जोसुभावते उपजेनाज । सजलमेघ तांकोनहिकाज
॥ २० ॥ जोसुवुधसोहे तुममाहि हरिहरादिक मेसोनाहि । जोद्युतिमहारत्नमेहोइ
काचखंडनाहिपावेसोइ ॥ २१ ॥ नाराचछंद ॥ सरागदेवदेषमे भलोवसेषमानियां
सरूपजहादेपवीतराग तोपछानिया । कछुनतोयदेषके जहांतुहीवशेपिए मनोगाचित्त
चोर और भूलहुंनपेषिए॥ २२ ॥ अनेकपुत्र वंतनीनतवनीसपूतहै । नतोसमानपुत्र

श्रौर माततेप्रसूतहै। दिसाधरंततारका अनेककोटकोगिणे दिनेसतेजवंत एकपुब्ब
हीदिसाजणे ॥ २३ ॥ पुरानहोपुमानाहो पुनीतपुन्नवानहो। कहेमुनीसअंधकार
नासकोसुभानहो। महंततोयजानके न होइवस्सकालके। नश्रौर मोखमोखपंथदे
वतोयटालके ॥ २४ ॥ अनंतनितचित्तकी अगम्यरमश्रादिहो। असंषसर्वव्यापिवि
ष्णब्रह्माहोअनादिहो। महेसकामकेत जोगईसजोगजानहो। अनेकएकज्ञानरूप
सुधसंतवानहो ॥ २५ ॥ तुहीजिणेसवुधहै सुवुधकेप्रमानते। तुहीजिणेसशंकरो ज
गत्रसेविधानते। तुहीविधातहैसही सुमोषपंथधारते। नरोतमोतुहीप्रसिध अर्थकेवि
चारते ॥ २६ ॥ नमोकरोजिणेसतोय आपदानिवारहो। नमोकरोसभूर भूमलोकके
सिंगारहो। नमोकरोभवारनी रराससोषहेतहों। नमोनमोमहेसतोयमोषपंथदेतहो
॥ २७ ॥ चौपई तुमपूरणजवगुनगनभरे दोषगर्भकरतेपरहरे। श्रौरदेवगणआश्र
यपाय सुपननदेषेफिरतुमश्राय ॥ २८ ॥ तरुअसोकदलकिरनउदार तुमतनसोभतहै

म॰ ४॥

श्रविकार । मेघनिकटज्युंतेजफुरंत दिनकरदिपेतिमरनिहंत ॥ २९ ॥ सिंघासनम
णिकिरनविचित्र तिसपरकंचनवरनपवित्र । तुमतनसोभताकिरनविथार ज्युंउदिया
चलरवितमहार ॥ ३० ॥ कुंदपुष्फसिरचमरढुलंत कनकवरणतुमतनसोभंत । ज्या
सुमेरुतटनिरमलकांत झरणाझरेनीरउमगांत ॥ ३१ ॥ ऊंचेरहेसूरदुतिलोप तीनछत्र
तुमदिपेश्रगोप । तीनलोककीप्रभताकहे मोतीझालरसोछवलहे ॥ ३२ ॥ दुंदभीश
व्दगहरगंभीर चहुदिसहोइतुम्हारोधीर । त्रभवनजनशिवसंगमकरे मनोजयजयर
वउचरे ॥ ३३ ॥ मंदपवनगंधोदकइष्ट विवधकलपतरुपुष्फसविष्ट । देवकरेविकसत
दलसार मानोतुझपंकतिश्रवतार ॥ ३४ ॥ तुमतनभामंडलजिनचंद सभदुतिवंतकर
तहोमंद कोटसंषरवितेजछपाय । ससिनिरमल निसकरेश्रछाय ॥ ३५ ॥ सुरगमो
षमार्गसंकेत । परमधर्मउपदेसनहेत दिव्यवचनमुषपिरेश्रगाध । सभभाषागर्भित
हितसाध ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ विकसतसोवनकमलदुति नषदुतिमिलचमकाय । तुम

पदपंकजजहांधरे तहांसुरकनलरचाय ॥ ३७ ॥ ऐसीमहिमातुमविषे औरधरेनाहि
कोइ । सूरजमेजोजोतहै नहितारागनसोइ ॥ ३८ ॥ ढालकिंकपत्रकी । मदत्र्यवलि
पतकपोल मूलअलिकुलझंकारे । तिनसुनसब्दप्रचंड क्रोधउधतगतिधारे । काल
वर्णविकाल कालवतसनमुखआवे । ऐशापतिकी सरससकलजन भयउपजावे ।
देषगयंदनभयकरे । तुमपदमहिमालीन विपतराहितसंपतसहित वरतेभक्तिअधीन
॥३९॥ अतिमयमत्तगयंद कुंभथलनषनविदारे । मोतीरक्तसमेत डारभूतलसिनगारे
वांकीदाढविशाल वदनमेरसनालोले । भीमभयंकररूप देषजनथरहरडोले । ऐसे
मृगपतिपगतले जोनरआयाहोइ । सरनगहेतुमचरनकी वाधाकरेनसोइ ॥ ४० ॥
प्रलेपव्वनकर उठीआगजोतीसपटंतर । वमेफुलिंग सिपाउतंगपर जलेनिरंतर ॥
जगतसमस्त निकलकेभस्मकरेगीमानो । तडतराटदवानल जोचहुदिसाउठानो । सो
इकछिनमे उपसमेनाामनीरतुमलेत । होइसरोवरप्रणमे विकसतकमलसमेत ॥ ४१ ॥

कोकिलकंठसमान शामतनक्रोधजलंता। रक्तनैनफुंकारमार विसकोउगलंता। फण कोऊचाकरे वेगहीसनमुषधाया। तवजनहोइ निसंकदेषफणपतिको आयाजोचंपेनि जपावको व्यापेविषनलगार। नागदमनतुमनामकोजिनकेहै अधकार॥४२॥ जिसर नमाहिभयानकशब्दजोकरे। तुरंगमघनसेगजागिरजाय मत्तमानोगिरजंगम अतिको लाहलमाहि। वातजिहनाहिसुनिज्जे राजनकोवलचंडदेपवलधीरजछिज्जे। नाथतुम्हा रेनामते सोछिनमाहिपुलाय। ज्योंदिनकरपरकासते अंधकारविनसाय॥४३॥ मारे जहांगयंद कुंभहथयारविदारे। उमगेरुद्रप्रवाहवेगज जलसोविसतारे होइतरनअस मर्थ महायोधावलपूरे। तिसरनमेजनतोयभक्ति तिहहैरनसूरे। दुरजिहअरिकुलजी जयपावेनिःकलंक। तुमपदपंकजमनवसे तेनरसदानिसंक॥४४॥ नक्रचक्रमकरा कर भयउपजावे। जामेवडवाअग्नि तेजनिजनीरजलावे पारनपायोजासथाह एजांकी। गरजेगहरगंभीर लैहरकीगिनतनताकी। सुषसोतरेसमुंद्रको जोतुम

गुनसमराहि लोलकलोलनकेसिषर । पारजानलेजाहि ॥ ४५ ॥ महाजलोदररोग
भारपीरतनरजेहै । वातपित्तकफकुष्ट आदिजिहरोगगहेहै । सोचतरहेउदास नही
जीवनकीआसा । अतिघनावनदेह धरेदुगँधनिवासा । तुमपदपंकजधूलको जोलावे
निजअंगते निरोगसरीरलहे । छिनमेहोइअनग ॥ ४६ ॥ पावकंठतलेकरवांधे सां
कलभारी गाढीवेडीपयरमाहि जिनजंगाविदारी । भूपप्यासचिंतासरीर दुषजेबिल,
लाने सरननहिजनकोइ । भूपकेवंधीपाने तुमसिमरनस्वैमेवही । वंधनसभपुलजाय
छिनमेतेसंपतिलहे चिंताभयबिनसाय ॥ ४७ ॥ महामत्तगजराज औरम्रगराजद
वानल । फणपतिरनपरचड नीरनिधरोगमहावल । वंधनएभयआठ दरवकरमानो
नासे । तुमसिमरनाछिनमाहि अभयथानकपरकासे । इसअपारसंसारमे सरननही
अरुकोइ । यातेतुमपदभक्तिकी भक्तिसहाईहोइ ॥ ४८ ॥ इहगुनमालबिसाल नाथ
तवगुननसवारी बिवधवरणमैपुष्फ । गुंथमैभक्तिविस्तारी जेनरपहरेकंठभावना ।

मनमेभावे मानतुंगतेनिजाधीन शिवलक्ष्मीपावे । भाषाभक्तामरकी योहेमराजहित
हेत । जेनरपढेसुभावते तेपावेशिवखेत ॥ ४९ ॥ इति भाषाभक्तामरसमाप्तं ॥

अथबालवतीसीप्रारंभ्यते ॥ सवैया ॥ अजरअमरपरमेश्वरकुंध्याईए ॥ सक
लपातकहर विमलकेवलधर जाकोंवासशिवपुर तासोंलिवलाईए ॥ नादबिंदरूप
रंग पाणीपादउतमंग आदिअंतमधभंग जाकोंनहिपाईए ॥ संघयणसंठाण जाण
नाहीकोईउनमान ताहिकोधरतध्यान शिवपुरजाईए ॥ भणैमुनिबालचंद सुणहुभ
वकवृंद ॥ अज. ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत देवदेवकरजाणीए ॥ जाकोंक्रोधनाहिमूर
मानमायालोभदूर कर्मकीएचकचूर जिनमोंनआणीए जाकोंनमैइंदचंद सुरिंदमुनिं
दवृंद नंतगुणहै जिणंद त्रिभुवनमाणीए ॥ जाकैहै अनंतज्ञान देतहैमुकतिदान ॥
अहिनिसतांकोध्यान मनमांहिआणीए॥ भणैमु.॥ २॥ तरणतारणगुरु तारभवपारए
पांचइंद्रीसंवरत नवनिधिब्रह्मव्रत धरततजतनित क्रोधादिकचारए ॥ महाव्रतपांचे

धार पालैहैपंचोआचार सुमतिगुपतिसार मातजयकारए ॥ ऐसेगुणगुरुहोइ पटकर्म पालैजोइ गौतमउपमसोइ मुकतिदातारए ॥ भणैमु. ॥ ३ ॥ जगएकजीवदया धर्म सुखदाईहै ॥ धर्महीतेरिद्धिवृद्ध धर्महीतेसयलसिद्ध नरदेवनवनिद्ध वहुजीवपाईहै ॥ धर्महीतैदेवलोक धर्महीतैसहूथोक इहलोकपरलोक धरमसपाईहै ॥ तांकोनमैसुरवर नरवरवहुपर धर्महीतेजोइनर एकालिवलाईहै ॥ भणैमु. ॥ ४ ॥ उठउठधर्मकर सोवै मूढकहांरे ॥ दुत्तरसागरतर कोइतटपाइकर सोवेतहांनींदभर फिरआवैउहांरे ॥ संसारसागरमांहि जांकोआदिअंतनांहि भरमतजांहितांहि पुदगलजहांरे कांठोहै मानवभव नीठनीठपायोअव सोवैमतषिणलव चेतकरइहांरे ॥ भणैमु. ॥ ५ ॥ सुरत रुकाटकर आकबोवेतहरे ॥ चिंतामणिपाइकर मूढतांकोपरिहर काचग्रहैरंगभरतां सोकरैनेहरे ॥ गजपतिवेचकर सोतोमूढलेतपर पावैनांहिफिरफिर मुहपरेषेहरे ॥ महा मूढहोतसोइ कामभोगरत्तहोइ हारैहैरतनजोइ मानुषकीदेहरे भणैमु. ॥ ६ ॥ उत्तम

कोसंगकर नीचसंगटालकै ॥ देषहुसागरसंग षारीहोतमहागंग नीमवीचंदनसंग
चंदनधुबालकै ॥ जातैषीरहोतनीर ताकोमिलैजौसुवीर सोवीविंठजानषीर निजगुण
गालकै ॥ पात्रबिणतारै बारटालैरक्तकुं विकारतुंबभेदभए चारभिन्नसंगचालकै ॥
॥ भणैमु. ॥ ७ ॥ घडीघडीमूढतेरो आऊजलजाएहै ॥ कारमोकुटंबएह काहेकुकरत
नेह हारैहैमानुषदेह फिरकिमपाएहै ॥ माततातघरबार वेटावहूपरवार आवैनहीतो
रीलार जासोमनलाएहै ॥ एकहितसीषसुन धर्मकरएकमन मानवभवरतन काहे
कुगमाएहै ॥ भणैमु. ॥ ८ ॥ उदमादकहाभयो करतनज्ञानरे ॥ उपज्योतूंगर्भावास
वस्यौसवानवमास नकहैउपमजास दुष्यअहिठानरे ॥ ऊठकोडसूंईहोमचांपै कोई
रोमरोम आठगुणोप्रतिलोम गर्भदुषजानरे ॥ अबतूंजनमपाय संसारकीलागीवाय
फिररह्योक्यौंलुभाय तूंतोहैअज्ञानरे ॥ भणैमु. ॥ ९ ॥ जरादूरजबलग तबलगजगरे
जराजबआइलग लालपरैमुषमग दंतगएसभभग डगमगपगरे ॥ जराआएगईबुध

नहीरहीकछुसुध रोगलागेबहुविधि जरापरैधिगरे ॥ कह्योकोइमानैनाहि दुपधरैमन
मांहि जोबनकीदिसजांहि उठधर्मलगरे॥भणैमु. ॥ १० ॥ जमकोविसासनांहि मूढ
तूंसंभालरे ॥ काहेभूलेदेषभाल चेतोक्यौंनप्राणीलाल ग्रहसीदुर्जनकाल बालहीगो
पालरे ॥ सुरगपातालजाइ उषधभेषधपाइ करैबहूदाइपाइ तौहीग्रहसीकालरे ॥ घट
तघटतजात पलघडीदिनरात आउषोगलतभ्रात करतजंजालरे ॥ भणैमु. ॥ ११ ॥
संसारअसारएह सारइकधर्मरे ॥ अथिरसंसारएह दीसतप्रभातजेह सांझसमैनाहि
तेह काहेपड्योभर्मरे ॥ मेरोमेरोकहांकरै सगोनहीकोइतेरै ॥ जीवएकलोहीफिरै भुजै
निजकर्मरे ॥ संसारसागरघोर ॥ अमैजीवठौरठौर काहेहोतहैकठोर कीधोनाहीसर्मरे
॥ भणैमु. ॥ १२ ॥ आपसमराषोप्राण हिंस्यादूरटालकै ॥ हिंस्याहैअनर्थषाण हिंस्या
तिहांपापजाण जीवहिंस्याछोडप्राणरागद्वेषगालकै ॥ हिंस्याहीतेरोगसोग षाणपाण
हीणभोग बहुदुषसहैलोग हिंस्याहीतेसालकै॥स्वयंभूमचक्रव्रत देषोजमदग्रपुत्त सात

वती-
२॥

मीनरकपत्त हिंस्यापंथचालकै ॥ भणैमु.॥ १३ ॥ अभयदानषटकाय जीवानितदीजीए
अभैदानवडोधर्म टालैहैदुकृतकर्म वोरहैमिथ्यातभर्मं काहेकाजकीजीए ॥ देष्योराष्यो
पारापति मेघरथनरपति सींचाणांकुकहैनृप मेरोमासलीजीए ॥ अभैदानदीयोतिन
चक्रवर्त्तिहुवोजिन शांतिनाथदिनादिन त्रिभुवनपूजीए ॥ भणैमु. ॥ १४ ॥ काहेकुतूंबोल
तहै झूठनिरातालरे ॥ झूठभाषामहादुष्ट पापहीकोकरैपुष्ट लोकसहुकरेपिष्ट तूंतोहैल
वालरे ॥ झूठबोलोकहैलोइ मानेनवचनकोइ तिरजंचहोइसोइ आगमसंभालरे देषो
वसुराजाभोर मिसरवचनबोल सातमीनरकघोर गयोकरिकालरे ॥ भणैमु. ॥ १५ ॥
विमलवचनसत सहूसुपकारहै ॥ विमलवचनभण सुपदायसहूमन जानकिसुनतकन
अमृतकीधारहै ॥ सिद्धजेसाधकनर ताकीविद्यासिद्धकर संसैविनमुनिवर सतजगसा
रहै ॥ सततैपावकजल महोदधिहोतथल दुठविषविषधर विपत्रपहारहै ॥ भणैमु. ॥
॥ १६ ॥ चोरीकोइकरोमति चोरीथीविनासरे ॥ चोरीथाइराजदंड मारकरैसतषंड ॥

गधैचाढेसिरमुंड फेरवततासरे॥ मारमारकरैजन आरतकरतमन राजजनततपिन देत
गलपासरे ॥ देपोतोअभंगसैन चोरवधपायोजिन कुटंबसहिततिन कीयोनर्कवासरे॥
॥ भनैमु. ॥ १७ ॥ पाईएअमरपद दतव्रतपालते ॥ देषौतौअंबडसीस ॥ संष्यावीस
पनतीस जेठमासएकदीस पथसिरचालते ॥ त्रिषालागीपरबल पीयोनाहिंगंगजल
व्रतपाल्योनिरमल दूपणकोटालते ॥ सातसैहीकालकर हूवामहारिद्धसुर सापलाभै
इणपर आगमसंभालते ॥ भणैमु. ॥ १८ ॥ मतिकरमतिकर परनारिसंगरे॥ परनारी
चापकर कटाक्षनयणभर आपदपावतनर दीपज्यौंपतंगरे ॥ षिणमातहोतसुष देषेभ
वसतदुष करतविषयमुप सुरतकुभंगरे ॥ फिटफिटकरैलोइ अजसअकीर्तिहोइ रम
णीकारजजोइ होतमोटोजंगरै ॥ भणैम. ॥ १९ ॥ सीलव्रत्तपायोजिन शिवपुरजाइए
सीलहीतैनमैदेव नरवरसारेसेव सीलवंतानित्यमेव देवहीज्यौंध्याइए ॥ देषहोसुदर
सन सीलपाल्योएकमन सीलहीतेत्रिभुवन जसगुणगाइए ॥ सीलथीसंकटटलै संप

दकुआइमिलै जउसमकितमिलै तउकहापाइए ॥ भणैमु. ॥ २० ॥ अतिघणपरिगह
दुपहींकोहेतहै ॥ कोइनरनरपति चलतपरतगति परिग्रहदेषमित साथनाहिलेतहै ॥
देषौकौनब्रह्मदत्त स्वयंभूमचक्रवत्त सातमीनरकपत्त सूत्रसापदेतहै ॥ मातपिताभाई
बंधु पापचढैतोरेकंध काहेमूढहोतअंध हीयेकछुचेतरे ॥ भणैमु. ॥ २१ ॥ संतोषकरत
जीव नंतसुपपाएहै ॥ संतोषकरतनर दुष्यकोसागरतर परमआनंदघर ततपिणआ
एहै ॥ देषौतौकंपलमुनि संतोषकरताजिन पायाहैकेवलधन जिनगुणगाएहै ॥ जिनव
रगणधर गणवरमुनिवर परमसतोषकर शिवपुरजाएहै ॥ भणै. ॥ २२ ॥ क्रोधहैअन
र्थमूल क्रोधदूरछोडरे क्रोधतेनरकजाइ बाघसिंहसापथाइ ॥ क्रोधहीतेभरमाइ लाभे
कोडाकोडरे ॥ क्रोधहीतेप्रीतजाइ क्रोधहीतेविषपाइ क्रोधबहुदुषदाइ जीवप्राणैपोडरे
उपन्नीझाल जउतुमेततकाल करिरालोआलमाल पीछामनमोडरे भणै. २३॥
भरपूर मतिकरोरीसरे षिमाहीसोंवैरजाइ दुसमनलागैपाइ त्रिभुवनजस

थाइ सहीविश्वावीसरे ॥ देषोगजसुखमाल संसारकोंपायोपार षिमाकरीक्रोधमार वंदुनिसदीसरे ॥ रायपरदेसीधन षिमाकरीएकमन देवलोकपायोतिन पूरीहैजगीसरे ॥ भणैमु. ॥ २४ ॥ काहेकुकरतनर मूढअहंकाररे ॥ लपमीतोनाहीथिर आतजात फिरफिर जोवनवीजातषिर तूतोहैगवाररे ॥ जहाकोकरतगर्भ सोहीविंठजात सर्वपावै नाहीएहदर्व सोतोवारवाररे ॥ रावहीतेरंकहोइ रंकहीतेरावजोइ थिररहैनाहिकोइ अथिरसंसाररे ॥ भणैमु. ॥ २५ ॥ मतकारिमूढमाया कूडहीकपटरे ॥ मायाथीनरकघोर मायाहीतेहोतढोर मायाहीतिपावैजोर दुषहोवैथटरे ॥ जोकरतपरद्रोह मंडतकपटमोह आपकुंसोषणषोह काहैहोतजटरे ॥ हियेकछुचेतकर मायामोहपरहर संसारसागरतर तैतोपायोतटरे ॥ भणैमु. ॥ २६ ॥ सुषहोतलोभवस करतकरतरे ॥ लोभहीतेरातादिन चितमेलेधनधन दुषहोतलोभमन धरतधरतरे जोडैधनरुलरुल आऊघटैपलपल जात तूंअजलजल झरतझरतरे ॥ स्वयंभूप्रमुपभूप करैथाजेदोडधूप छोडगएलोभ कूपभरत

दकुआइमिलै जउसमकितमिलै तउकहापाईए ॥ भणैमु. ॥ २० ॥ अतिघणपरिगह दुपहीकोहेतहै ॥ कोइनरनरपति चलतपरतगति परिग्रहदेषमित साथनाहिलेतहै ॥ देषौकौनब्रह्मदत्त स्वयंभूमचक्रवत्त सातमीनरकपत्त सूत्रसापदेतहै ॥ मातपिताभाई बंधु पापचढैतारेकंध काहेमूढहोतअंध हीयेकछुचेतरे ॥ भणैमु. ॥ २१ ॥ संतोषकरत जीव नंतसुपपाएहै ॥ संतोषकरतनर दुष्यकोसागरतर परमआनंदघर ततपिणआ एहै ॥ देषौतौकंपलमुनि संतोषकरताजिन पायाहैकेवलधन जिनगुणगाएहै ॥ जिनव रगणधर गणवरमुनिवर परमसतोषकर शिवपुरजाएहै ॥ भणै. ॥ २२ ॥ क्रोधहैअन थमूल क्रोधदूरछोडरे क्रोधतेनरकजाइ बाघसिंहसापथाइ ॥ क्रोधहीतेभरमाइ लाभै कोडाकोडरे ॥ क्रोधहीतेप्रीतजाइ क्रोधहीतेविषपाइ क्रोधबहुदुषदाइ जीवआणैषोडरे क्रोधकीउपन्नीझाल जउतुमेततकाल करिरालोआलमाल पीछामनमोडरे भणै. २३॥ षिमाकरोभरपूर मतिकरोरीसरे षिमाहीसौंवैरजाइ दुसमनलागैपाइ त्रिभुवनजस

सिद्ध होतफलहाणरे ॥ सुभभावभावैजेह भवनिधितरैतेह पायोजेमुकतिगेह भरतरा
जानरे ॥ मोरादेवीमाताधन दुःकरतपसाविन शिवपदपायोजिन ध्यायसुभध्यानरे ॥
भणैमु. ॥ ३१ ॥ धर्महैमंगलमूल धर्महींकुंसेवरे ॥ धर्महैकलपवृक्ष देपोजातपरतक्ष ॥
भोगवैजुलोकलक्ष सुषनितमेवरे ॥ धर्मकेउत्तमफल जातकुलरूपवल विकटसंकटटल
जाततततपेवरे ॥ धर्मतैदुकृतदहैं इंद्रादिकपदलहैं धर्मशिवसुपलहैं अरिहंतदेवरे ॥
भणैमु. ॥ ३२ ॥ महानंदसुपकंद रूपछंदजाणीए ॥ श्रीरूपजीवगणि कुयरश्रीमलमु
नि रतनसीजसधण त्रिभुवनमाणीए ॥ विमलसासणजास मुनिसिरीगंगदास हसत
दीपततास बतीसीवापाणीए ॥ वाणवसुरसचंद दिवालीमंगलवृंद अहमदावादइक
रंगमनआणीए ॥ भणैमुनिवालचंद सुणहुभवकवृंद महानंदसुषकंद रूपछंदजाणीए
॥ ३३ ॥ इतिश्रीवालचंदकृतउपदेसबतीसीसंपूरणम् ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

भरतरे ॥ भणैमु. ॥२७॥ लोभमूढकहाकरै देतक्यौंनदानरे ॥ दानशिवसुषथाइ दान
थीदालिद्रजाइ घरनवनिधदाइ मानैएएरानरे ॥ दानदेवोचितलाइ दानेधनवृद्धथाइ
जैसेवाडीकूपगाइ होतवृद्धमानरे देपोतौसमुपजिन प्रतिलाभ्यौमहामुनि कुमरसुवाहु
तिन रूपकोनिवानरे ॥ भणैमु. ॥ २८ ॥ वडोव्रतव्रतमांहि सीलव्रतजानरे ॥ सागर
आगरमांहि स्वयंभूउदधिआहि वडोदानदानमांहि अभयजुदानरे ॥ चंद्रग्रहगणमां
हि ॥ ब्रह्मलोककल्पमांहि वडोज्ञानज्ञानमांहि केवलजुज्ञानरे ॥ अरिहंतमुनिमांहि म
नोरमगिरिमांहि वडोध्यानध्यानमांहि सुकलजुध्यानरे ॥ भणैमु. ॥ २९ ॥ भवकोडकृ
तकर्म तपहीतेटालीए ॥ तपथीवंछतफल होतजीवनिर्मल देवरूपदावानल कर्मवनवा
लीए ॥ देपौधन्नाअणगार दुःकरतपतकार छोडकैवत्तीसनारि जैनव्रतपालीए ॥ साग
रतेतीसवर हूवोअणुत्तरसुर जाकैगुणरूपजल आतमपापालीए ॥ भणैमु.॥३०॥ भाव
हीतेहोतसिद्ध भावहीप्रधानरे ॥ वहुविधिव्रतलीध तपकीधदानदीध भावविनानाही

सिद्ध होतफलहाणरे ॥ सुभभावभावैजेह भवनिधितरैतेह पायोजेमुकतिगेह भरतरा
जानरे ॥ मोरादेवीमाताधन दुःकरतपसाविन शिवपदपायोजिन ध्यायसुभध्यानरे ॥
भणैमु. ॥ ३१ ॥ धर्महैमंगलमूल धर्महींकुंसेवरे ॥ धर्महैकलपवृक्ष देषोजातपरतक्ष ॥
भोगवैजुलोकलक्ष सुषनितमेवरे ॥ धर्मकेउत्तमफल जातकुलरूपबल विकटसंकटटल
जाततततपेवरे ॥ धर्मतैदुकृतदहैं इंद्रादिकपदलहैं धर्मशिवसुषलहैं अरिहंतदेवरे ॥
भणैमु. ॥ ३२ ॥ महानंदसुषकंद रूपछंदजाणीए ॥ श्रीरूपजीवगणि कुयरश्रीमलमु
नि रतनसीजसधण त्रिभुवनमाणीए ॥ विमलसासणजास मुनिसिरीगंगदास हसत
दीपततास बतीसीबाषाणीए ॥ वाणवेसुरसचंद दिवालीमंगलवृंद अहमदावादइक
रंगमनआणीए ॥ भणैमुनिबालचंद सुणहुभवकवृंद महानंदसुषकंद रूपछंदजाणीए
॥ ३३ ॥ इतिश्रीबालचंदकृतउपदेसबतीसीसंपूरणम् ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

इति श्रीप्रवचनसंग्रहसमाप्तम्।

चर्मतिर्थंकरश्रीमहावीर स्वामीनानिर्वान थी संमत् २४ २२ ।

॥ ऊँ अहिंसापरमधर्मः ॥

श्रीजिणंद्रायनमः ॥ अथ श्री प्रवचनसंग्रह पुस्तकका सूचनपत्रका ॥ लिखिए ॥ छै ॥ विज्ञापना ॥ दोहा ॥ जंबू दीपके भर्थमे । देसपंजाव सुनाम ॥ तिसमे जिला लाहौरहै । तां कुसूरपुरठान ॥ १ ॥ तिहपुरमे इक शाह भयो । लालाहरजसनाम ॥ कोमभावडा जानिए । गदियजात अभिराम ॥ २ ॥ तीनवस्तु तिसने रची । प्रथम साधुगुनमाल ॥ देवाधिदेवरचणा । दूजीवस्तसंभाल ॥ ३ ॥ दिवरचणा तीजीकही । सभसेवडीसुजान । त्रयवस्तुएजानीए । जिणमतमेपरधान ॥ ४ ॥ कवितेबहुतेहोगए देषेसुने सुकान ॥ हरजसतुल्लन देखीया । सुनयानाहिसुजान ॥ ५ ॥ मानतुगकविता हुया । ज्ञानदीपकारूप ॥ भक्तामरतिसनेरचा । जिसकाअर्थअनूप ॥ ६ ॥ बालचंद उत्तममुणी । वडोकवीस्वरमान ॥ बालवतीसीतिसरची ॥ जामेबहुताग्यान ॥ ७ ॥

॥ घ्रणाक्षरीछंद ॥ सवैयाइकतीसा ॥

हरजस मानतुंग । वालचंद तीनोकवि । पंचग्रंथकीएजिन । आगमविचारके ॥ त्रयरचेहरजस एकरच्योमानतुंग । वालचंदमुनिइक । कीयोगुनधारके ॥ इहपंचग्रंथनको एकग्रंथबन्योसुभ । श्रीप्रवचनसंग्रह । नामरक्षासारके ॥ ग्यारासय ११३७ तीस सग ॥ छंदजोरकीएसभ । गिनेइस पुस्तकमे । समझ सुवारके ॥ ८ ॥

साधगुनमालामाहि साधाजीकेगुनकहे । इकसौपचीस छंद ॥ उत्तमवषाणीए ॥ देवाधिदेवरचणा माहिअरिहंतगुन । ताहिकेपनस्सी छंद । निश्चेकरमाणीए ॥ देवरचणावहुकही यामेवर्णदेवनका । सतवसुचालीपंच । छंदसुभजाणीए ॥ चतुनवछंद भक्तामरकेहैनसभ ॥ वालचंदवतीसीमे तेतीछंदआणीए ॥ ९ ॥ दोहा ॥ पढेसुनेविनकिमलखे । इनपुस्तकसकाभेद ॥ तिहकारनइनकोपढो । करनरनारिउमेद ॥ १० ॥

॥ मत्तगयंद छंद ॥ जोनरनारिपढेइनको । तिनकोबहुज्ञानतणारसआवे ॥ दुर्गतिछेदकरेछिनमे । अरुदेवगतीसुखमोषमिलावे ॥ पंचाहिग्रंथकुएकबन्यो । अतिउत्तमपुस्तकसुंमनलावे ॥ जैनदिपावनहेतपढो । करजोरकिछंदअरूरसुनावे ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥ नंदलालकीप्रेरना । तबमैकह्योअंतंत ॥ हलकर्मीकोसुगमहै । भारीकठनकरंत ॥ १२ ॥ गीयाछंद ॥ इह श्रीप्रवचनसंग्रह । नामपुस्तकसोभता ॥ अर्थजिसकेबहुतसुंदर । सुनतमेरामनलोभता ॥ जोजनइसकोलीयाचाहे । स्यालकोटमेजानियो ॥ रूपाशाह अरु नंदलाला । कीदुकानेआनियो ॥ १३ ॥ दोहा ॥ जंबूपुरछापाभयो ॥ तीनकर्वीकीकृत्त ॥ मनवचकायासुधकरी । तेसुनियोइकचित्त ॥ १४ ॥ सोरठा ॥ सोभाकहीनजाय ॥ येतीनोकवितातणी । गागरनहीसमाय ॥ जोसागरमेजलरहे ॥ १५ ॥ दोहा ॥ अक्षरमात्राअंककी । भुलचुकइसमेकोइ ॥ सो वषशोसुधकीजियो ॥ सुभजन सुनियो जोइ ॥ १६ ॥ इति समाप्त ॥ सुभंभुयात् ॥

इति प्रवचनसंग्रह समाप्तं ॥